ई

काहे

भइल?

परमेश्वर

का

करत बाड़ें?

ई

काहे

भइल?

परमेश्वर

का

करत बाड़ें?

डैनी कनेडी

ट्रू ट्रूकनेक्शन्स
प्रेस

ई काहे भइल? परमेश्वर का करत बाड़ें?

कॉपीराइट © 2015 डैनी कनेडी द्वारा, कवर डिजाइन गीनो मॉरो द्वारा।
सभे पवित्र शास्त्र के उद्धरण, जब ले अलग से ना बतावल गइल होखे, पवित्र बाइबल के किंग जेम्स संस्करण से लिहल गइल बा।

चिन्हित पवित्र शास्त्र उद्धरण (एनएएसबी) द लॉकमैन फाउंडेशन द्वारा न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल®, कॉपीराइट © 1960, 1962, 1963, 1968, 1971, 1972, 1973, 1975, 1977, 1995 से लिहल गइल बा। अनुमति से इस्तेमाल कइल गइल बा। www.Lockman.org

चिन्हित पवित्र शास्त्र उद्धरण (एनसीवी) पवित्र बाइबल, न्यू सेंचुरी संस्करण, कॉपीराइट © 1987, 1988, 1991 से वर्ड पब्लिशिंग, डलास, टेक्सास 75039 द्वारा लिहल गइल बा। अनुमति से इस्तेमाल कइल गइल बा।

चिन्हित पवित्र शास्त्र उद्धरण (एनएलटी) पवित्र बाइबल, न्यू लिविंग ट्रांसलेशन, कॉपीराइट © 1996, 2004, 2007 से टिंडेल हाउस फाउंडेशन द्वारा लिहल गइल बा। टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, इंक., कैरल स्ट्रीम, इलिनोइस 60188 के अनुमति से इस्तेमाल कइल गइल बा। सभ अधिकार सुरक्षित बा।

चिन्हित पवित्र शास्त्र उद्धरण (टीएलबी) द लिविंग बाइबल से लिहल गइल बा, कॉपीराइट © 1971 टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, इंक., कैरल स्ट्रीम, इलिनोइस 60188 के अनुमति से इस्तेमाल कइल गइल बा। सभ अधिकार सुरक्षित बा।

चिन्हित पवित्र शास्त्र उद्धरण (एनआईवी) पवित्र बाइबल, न्यू इंटरनेशनल वर्जन®, एनआईवी® से लिहल गइल बा। कॉपीराइट © 1973, 1978, 1984, 2011 Biblica, Inc.TM द्वारा, ज़ोंडरवन के अनुमति से इस्तेमाल कइल गइल बा। पूरा दुनिया में सभ अधिकार सुरक्षित बा।
www.zondervan.com

चिन्हित पवित्र शास्त्र उद्धरण (एमपी) द लॉकमैन फाउंडेशन द्वारा एम्प्लीफाइड बाइबल, कॉपीराइट © 1954, 1958, 1962, 1964, 1965, 1987 से लिहल गइल बा। अनुमति से इस्तेमाल कइल गइल बा।

चिन्हित पवित्र शास्त्र उद्धरण (जे.बी. फिलिप्स) के साइमन एंड शुस्टर, इंक. के एगो प्रभाग स्क्रिब्नर के अनुमति से *द न्यू टेस्टामेंट इन मॉडर्न इंग्लिश—जे.बी. फिलिप्स* के संशोधित संस्करण से फेर से छापल गइल बा।

कॉपीराइट © 1958, 1960, 1972 जे.बी. फिलिप्स द्वारा। सभ अधिकार सुरक्षित बा।

इक्नेवेशन्स प्रेस द्वारा प्रकाशित
आईएसबीएन 13: 978-0-9846967-2-7

समर्पण।

ई किताब *रिचेस इन क्राइस्ट* परिवार के समर्पित बा।
रउआ सभ के प्रेम, दोस्ती, प्रार्थना आ सहयोग बिना, ई किताब संभव ना होखित।
धन्यवाद।

परमेश्वर के अउरी पूरा रूप से जाने आ उहाँ के अउरी सही तरीका से प्रतिनिधित्व करे

खातिर हमनी के भूख लगातार बढ़त रहे।

विषय सूची

परिचय

भाग एक: **काहे आ का के सवालन के जवाब**

अध्याय 1 काहे के सवाल ……..……..……8
अध्याय 2 दुख आ बड़ तस्वीर ……21
अध्याय 3 परमेश्वर के प्रेम आ हमनी के परिस्थिति ……..…… .31
अध्याय 4 परमेश्वर अपना बेटा-बेटी सभ से प्रेम करेलन ……...……...……40
अध्याय 5 का के सवाल ……...……...…47
अध्याय 6 का के सवाल के सही जवाब ……....…54
अध्याय 7 यूसुफ के कहानी ……..…61
अध्याय 8 मूसा आ इस्राएल के कहानी ……...…69

भाग दो: **हमनी के का करे के चाहीं आ काहे?**

अध्याय 9 सही प्रतिक्रिया ……..80
अध्याय 10 कठिनाई सभ के प्रति सही नजरिया ……..89
अध्याय 11 प्रतिक्रिया दीं, प्रतिकिरिया मत करीं ……98

निष्कर्ष ……106

परिचय

जब कठिनाई हमनी के जीवन में आवेली, त स्वाभाविक रूप से दू सवाल उठेला: ई काहे भइल? परमेश्वर का करत बाड़ें? अगर हमनी एह सवालन के सही जवाब ना दे पाईं, त हमनी के कठिन समय अउरी बेसी कठिन हो जाला। गलत जवाब भ्रम पैदा करेला आ खुद कठिनाई के ऊपर अउरी भावनात्मक पीड़ा जोड़ देला।

• लोग ओह कठिनाई सभ के कारण परमेश्वर से नाराज़ आ कड़वाहट से भर जालन, जवना के सामना ऊ करत बाड़ें, आ एह संघर्ष में पड़ जालन कि प्रेम करे वाला परमेश्वर अइसन बात के अनुमति कइसे दे सकेलें।

• कुछ लोग एह चिंता में पड़ल रहेलन कि का परमेश्वर उनकर परीक्षा लेत बाड़ें भा कुछ सिखावत बाड़ें, आ बेचैन होके ई समझे के कोशिश करत रहेलन कि प्रभु एह कष्ट के माध्यम से कवन संदेश भेजत बाड़ें।

• दोसरा लोग सोचेलन कि का उनकर परिस्थिति परमेश्वर के ओर से दंड ह, आ एह पीड़ा में तड़पत रहेलन कि अइसन कौन काम ऊ कइले होइहें, जवना के कारण अइसन क्लेश के पात्र बनलें।

बाकिर बाइबल के अनुसार, विपत्ति परमेश्वर के ओर से ना आवेला। ई पतित संसार के जीवन के एगो हिस्सा ह। हालाँकि परमेश्वर जीवन के चुनौती सभ के शुरू ना करेलन, फिरो ऊ ओकर इस्तेमाल भलाई खातिर करेलन आ अपना उद्देश्य के पूरा करे में लगावेलन।

एह किताब में हम ई जाँच करब कि बाइबल एह विषय में का कहेली कि बुरी बात सभ काहे होले आ कठिन समय के बीच परमेश्वर का करेलन, ताकि हम एह महत्वपूर्ण सवालन के सही जवाब दे सकीं। सही जवाब हमनी के जीवन के संघर्ष सभ के अइसन तरीका से सामना करे में मदद करी, जवना से परमेश्वर के आदर होखे आ हमनी के विजय मिले।

भाग एक

काहे आ का के सवालन के जवाब

काहे के सवाल

जब अचानक विपत्ति के सामना होखेला, त शायद पहिला सवाल जे लोग पूछेला, ऊ ह—ई काहे भइल? हालाँकि "काहे" पूछल एगो स्वाभाविक प्रतिक्रिया ह, फिरो ई सबसे बढ़िया सवाल नइखे, काहेकि ई परमेश्वर पर हमनी के भरोसा के कमजोर कर सकेला। चाहे हम एह बात के समझीं भा ना समझीं, जब हम "काहे" पूछत बानी, त हम ई संकेत देत बानी कि हमनी के कठिनाई होखे देवे में परमेश्वर हमनी के साथ अन्याय कइले बाड़ें।

हमनी के अइसन विचार खातिर दरवाजा बंद करे के सीखे के चाहीं। अइसन सोच ओही घरी प्रभु पर हमनी के विश्वास के कमजोर कर देला, जब हमनी के मदद खातिर उहाँ के ओर मुड़े के सबसे बेसी जरूरत होला। अगर हम ई मान लीं कि हमनी के दुखद परिस्थिति के पीछे कौनो ना कौनो तरीका से परमेश्वर के हाथ बा, त फेर जब हम ओह परिस्थिति के सामना करत होखब, त उहाँ के मदद के बारे में हम निश्चिंत कइसे हो सकीला?

आखिर में परमेश्वर के खिलाफ सभ आरोप के पीछे शैतान ही बा, काहेकि ऊ हमनी के स्वर्गीय पिता पर निर्भरता के कमजोर करे चाहेला। ऊ आदम आ हव्वा के साथो इहे कइले रहे। ऊ प्रभु के खिलाफ आरोप लगाके उनकरा के परमेश्वर के आज्ञा के उल्लंघन करे खातिर उकसवले रहे। शैतान हव्वा से कहलस कि परमेश्वर ओकरा आ आदम के भला आ बुरा के ज्ञान वाला पेड़ के फल खाए से एह खातिर रोकले बाड़ें काहेकि ऊ उनकरा से कुछ छिपाके रखे चाहत बाड़ें।

“रउआ मरब ना (अगर रउआ ई खाइब),” साँप फुसफुसा के कहलस। “परमेश्वर जानत बाड़ें कि जवने दिन रउआ ई खाइब, रउआ के आँख खुल जाई। रउआ परमेश्वर जइसन हो जइब, भला आ बुरा दुनो के ज्ञान राखत, सभ कुछ जाने वाला” (उत्पत्ति अध्याय 3 पद 4 से 5)।

आजुओ शैतान लोगन के साथ इहे तरीका अपनावेला। ऊ ई दावा करके परमेश्वर के भलाई पर सवाल उठावेला कि जीवन के कठिनाई आ दुख के पीछे प्रभु के हाथ बा। बाकिर परमेश्वर कबो रउआ के पीड़ा के स्रोत भा कारण ना हउवें।

विपत्ति के समय ई पूछल गलत नइखे: ई काहे भइल? बाकिर रउआ के ओह सवाल के सही जवाब पवित्र शास्त्र के अनुसार देवे में सक्षम होखे के चाहीं। ना त रउआ शैतान के चाल सभ खातिर असुरक्षित हो जइब।

बुरी बात सभ काहे होले? दुखद, पीड़ादायक, विनाशकारी आ कठिन परिस्थिति ओह धरती पर जीवन के हिस्सा ह जे पाप के कारण बिगड़ चुकल बा। “काहे” के सवाल के इहे सही जवाब ह।

पृथ्वी पर एगो शाप।

जब हम बाइबल के अध्ययन करीलें, त हम पाईलें कि मृत्यु आ भ्रष्टता सृष्टि में पहिला मनुष्य के पाप के द्वारा घुसल। परमेश्वर आदम के आज्ञा दिहले रहन कि ऊ निषिद्ध पेड़ के फल ना खाए, बाकिर ऊ ओह आज्ञा के उल्लंघन कइलस। आदम के एह फैसला के मानवजाति आ पृथ्वी खातिर गहिरा परिणाम भइल।

“जब आदम पाप कइलस, त पाप पूरा मानवजाति में घुस गइल। ओकर पाप के द्वारा मृत्यु पूरा संसार में फैल गइल, जवना से सभ कुछ पुरान होखे लागल आ मरे लागल” (रोमियों अध्याय 5 पद 12)।

“(परमेश्वर कहलन) तोहरे कारण धरती शापित भइल (आदम); तू अपना पूरा जीवन मेहनत करके ओहसे भोजन पइब” (उत्पत्ति अध्याय 3 पद 17)। “ऊ तोहरा खातिर काँटा आ ऊँटकटारा उपजाई, आ तू खेत के उपज खइब। अपना पूरा जीवन पसीना बहाके ओह पर अधिकार करे के कोशिश करब, अपना मृत्यु के दिन ले। फेर तू ओही माटी में लवट जइब जवना से तोहरा के लिहल गइल रहे” (उत्पत्ति अध्याय 3 पद 18 से 19)।

आदम के पाप के कारण मृत्यु के शाप धरती में घुस गइल आ भौतिक संसार क्षय के अधीन हो गइल। एकर मतलब बा कि अगर रउआ रसोई के काउंटर पर एगो आड़ू रख दीं, त आखिरकार ऊ सड़ जाई। एह खातिर ना कि परमेश्वर आड़ू के सड़े खातिर बनवले रहन, बलुक ओह पहिला पाप के प्रभाव के कारण। आदम आ हव्वा के पाप ओह प्राकृतिक नियम आ प्रक्रियन के बिगाड़ दिहलस, जे परमेश्वर समय के शुरुआत में स्थापित कइले रहन।

एह बदलाव के परिणामस्वरूप पूरा संसार में फसल के नाश, सूखा, अकाल, विनाशकारी तूफान आ भूकंप पैदा भइल।

आदम के आज्ञा ना माने के प्रभाव मानवजाति परो पड़ल आ मनुष्यन में पापी स्वभाव पैदा भइल (रोमियों अध्याय 5 पद 19)। एकर परिणाम जल्दीए साफ हो गइल। आदम आ हव्वा के पहिलौठा बेटा कैन, उनकर दोसरा बेटा हाबिल के हत्या कइलस, आ फेर एह बारे में परमेश्वर से झूठो बोललस। बुराई के ओर ई झुकाव हर आवे वाली पीढ़ी में अपना के प्रकट करत रहल।

एह से अलग, जब आदम प्रलोभन में पड़ गइल, त ऊ धरती पर परमेश्वर द्वारा दिहल गइल अपना अधिकार शैतान के सौंप दिहलस आ धरती के सामर्थ्य के व्यवस्था बदल गइल। शैतान एह संसार के देवता बन गइल (उत्पत्ति अध्याय 1 पद 26 से 28; लूका अध्याय 4 पद 6 आउर 2 कुरिन्थियों अध्याय 4 पद 4)। ओह दिन से ऊ धरती पर घूमत-फिरत बा, मर्द आ औरतन के परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह में अपना पीछे चलावे खातिर बहकावत आ उनकर नाश करे के खोज में लागल बा (1 पतरस अध्याय 5 पद 8; इफिसियों अध्याय 6 पद 11 से 12)।

आदम के पाप के परिणामस्वरूप, सभ मनुष्य एगो पतित संसार में जन्म लेला। एकर मतलब बा कि हमनी सभ के रोज ओह बदलावन के सामना करे के पड़ेला जे हमनी के पहिला माता-पिता के पाप के कारण सृष्टि में आइल। खरपतवार, क्षय, प्राकृतिक आपदा आ मृत्यु आज धरती के बनावट के हिस्सा बा। हमनी लगे नश्वर शरीर बा जे बीमारी, बुढ़ापा आ मृत्यु के अधीन बा। हमनी अइसन लोगन के संपर्क में रहिला जे अविवेकी आ पापपूर्ण फैसला लेला, जे सीधे हमनी के जीवन पर बुरा असर डाल सकेला। एह सभ कारण से एह धरती पर जीवन कठिन मेहनत वाला बन जाला।

का ई परमेश्वर हउवें भा शैतान?

बहुत लोगन के ई धारणा बा कि जे कुछो होखेला, ओकर कौनो सीधा आ तुरंत कारण होला। या त परमेश्वर कइले बाड़ें भा शैतान कइले बा। बाकिर कठिन परिस्थिति परमेश्वर के काम नइखे, आ जरूरी नइखे कि ऊ शैतान के सीधा कामे होखे। ई बस पाप से शापित धरती पर जीवन के एगो हिस्सा बा।

परमेश्वर जीवन के परेशानी आ परीक्षा के योजना ना बनावेलन। हम ई बात ओह बात से जानत बानी जे यीशु हमनी के परमेश्वर के बारे में देखावेलन। जब हम नया नियम में धरती पर यीशु के समय के वृत्तांत (सुसमाचार) पढ़ीलें, त हम पाईं कि ऊ लोगन के परीक्षा लेवे खातिर परिस्थिति पैदा ना कइलन, ना व्यक्तियन के सिखावे भा मजबूत करे खातिर परीक्षा आ तूफान भेजलन। ऊ मर्दन के अनुशासित करे खातिर बैलगाड़ी भा गदहा गाड़ी के दुर्घटना ना करवइलन। ऊ केहू के बीमार ना कइलन, ना मदद खातिर अपना लगे आवे वाला केहू के चंगा करे से मना कइलन। अगर यीशु परेशानी पैदा ना करेलन, त हम जानत बानी कि परमपिता परमेश्वरो अइसन ना करेलन, काहेकि यीशु ओही करेलन जे ऊ पिता के करत देखेलन।

“(यीशु कहलन) हम रउआ से सच-सच कहत बानी, बेटा अपने से कुछो ना कर सकेला; ऊ बस उहे कर सकेला जे ऊ अपना पिता के करत देखेला, काहेकि जे कुछ पिता करेलन, उहे बेटा भी करेला। काहेकि पिता बेटा से प्रेम करेलन आ जे कुछ ऊ खुद करेलन, ऊ सभ ओकरा के देखावेलन” (यूहन्ना अध्याय 5 पद 19 से 20)।

जब यीशु के चेलन उहाँ से कहलन कि ऊ उनकरा सभ के पिता के देखाईं, त उहाँ जवाब दिहलन: "जे हमरा के देखले बा, ऊ पिता के देखले बा" (यूहन्ना अध्याय 14 पद 9)। यीशु उनकरा सभ के पिता के एह तरीका से प्रकट कइलन कि ऊ पिता के वचन बोललन आ पिता के काम कइलन, ओह पिता के सामर्थ्य से जे उहाँ में वास करत रहे। (एह कथनन से उठे वाला विषय के पूरा चर्चा खातिर हमार किताब *परमेश्वर अच्छा हउवें... आ अच्छा मतलब अच्छा हउवें* पढ़ीं।)

शैतानो हर दुखद घटना खातिर सीधे तौर पर जिम्मेदार नइखे। निश्चय ही, ब्रह्मांड के पहिला विद्रोही होखे के नाते, जे आदम आ हव्वा के पाप में गिरावे खातिर बहकवलस, एह संसार के नरक जइसन दुख आ हृदय के पीड़ा के पीछे आखिरकार शैताने बा। बाकिर ऊ हमनी के जीवन के हर प्रतिकूल घटना खुद पैदा ना करेला। बाइबल कहींयो मसीहियन से ई ना कहेला कि ऊ शैतान के शक्ति से सावधान रहस। बलुक ई हमनी के ओकर मानसिक युक्तियन के प्रति सतर्क रहे के सिखावेला, काहेकि ऊ मनुष्य के व्यवहार पर असर डाले के कोशिश करेला। शैतान ओह मनुष्यन के पतित स्वभाव के द्वारा काम करेला जे अपना के परमेश्वर के अधीन ना कइले बाड़ें, आ ऊ ओह लोगन के मन में झूठ बोलला जे ओकर चाल से अनजान बाड़ें।

"(शैतान) उहे आत्मा ह जे ओह लोगन के हृदय में काम करत बा जे परमेश्वर के आज्ञा माने से इनकार करेला" (इफिसियों अध्याय 2 पद 2)।

"बाकिर हमरा डर बा कि कहीं रउआ के मन मसीह के प्रति रउआ के सच्चा आ शुद्ध समर्पण से भटका ना दिहल जाव, जइसे हव्वा साँप (शैतान) के बुरी चाल से धोखा खा गइल रहली" (2 कुरिन्थियों अध्याय 11 पद 3)।

"परमेश्वर के सगरी हथियार बाँध लीं, ताकि रउआ शैतान के युक्तियन के खिलाफ मजबूती से खड़ा रह सकीं" (इफिसियों अध्याय 6 पद 11)।

कुछ बात बस घटित हो जाली।

हमनी के ई समझे के चाहीं कि बहुत बात बस अइसहीं घटित हो जाली। हम पहिले जिक्र कइले रहीं कि आदम के आज्ञा ना माने से ओह प्राकृतिक नियम आ प्रक्रियन पर असर पड़ल जे परमेश्वर सृष्टि के समय स्थापित कइले रहन। हालाँकि पाप के शाप के कारण ई नियम बदल गइल बा, फिरो ई काम करत रहेला आ कई बेर विपत्ति आ विनाश के परिणाम पैदा करेला। उदाहरण खातिर:

• परमेश्वर गुरुत्वाकर्षण के मानवजाति के आशीष खातिर बनवले रहन। बाकिर गुरुत्वाकर्षण के नियम कई बेर चोट भा मृत्यु के कारण बन जाला, जब नश्वर शरीर वाला लोग अज्ञानता भा लापरवाही से एह नियम के उल्लंघन करेला। ई परमेश्वर ना कइलन। ई शैतान ना कइलस। ई एह खातिर भइल काहेकि पाप से शापित धरती पर जीवन अइसने बा।

• परमेश्वर पेड़न के मानवजाति के आशीष खातिर बनवले रहन। बाकिर बड़ा पेड़ कई बेर भयंकर तूफान में गिर जाला आ गाड़ी आ घर के कुचल देला। काहे? काहेकि विनाशकारी तूफान (भ्रष्ट प्राकृतिक प्रक्रियन के परिणाम) ओह पेड़न के गिरा देला जे बीमारी आ बुढ़ापा के कारण कमजोर हो चुकल होखेला (जे सृष्टि में मृत्यु के शाप के परिणाम ह)। ई परमेश्वर ना कइलन। ई शैतान ना कइलस। ई बस एगो पतित संसार में जीवन के हिस्सा ह।

रउआ लोगन के ई कहत सुनब: "जीवन में कौनो संयोग ना होला। हर बात कौनो कारण से होला।" ई बात आम हो सकेली, बाकिर सत्य नइखे। यीशु के अनुसार, कुछ बात सचमुच संयोगवशो हो जाली। उहाँ ई बात ओह आदमी के कहानी बतावत साफ कइलन, जे खतरनाक रास्ता से यात्रा करत घरी डाकून के हाथ पड़ गइल। दू धार्मिक अगुवा ओह घायल आदमी के लगे से गुजर गइलन आ ओकरा छोड़ दिहलन, बाकिर एगो भला सामरी रुकल आ ओकर मदद कइलस। ध्यान दीं, जब यीशु एह घटना के वर्णन कइलन, त उहाँ एगो बात खास तौर पर बतवलन।

"एगो आदमी यरूशलेम से यरीहो जात रहल, आ डाकून के हाथ पड़ गइल, जवन ओकर कपड़ा उतार लिहलन, ओकरा के घायल कइलन, आ अधमरा छोड़के चल गइलन। आ संयोग से एगो

याजक ओही रास्ता से जात रहल; आ जब ऊ ओकरा के देखलस, त दोसरा ओर से निकल गइल" (लूका अध्याय 10 पद 30 से 31)।

ध्यान दीं, यीशु कहलन कि ओह दिन ओह याजक के उहाँ मौजूद रहना संयोगवश रहे। नया नियम मूल रूप से यूनानी भाषा में लिखल गइल रहे। जवना शब्द के अनुवाद "संयोग" कइल गइल बा, ओकर मतलब बा "दुर्घटनावश" भा "इत्तिफाक।" "अब इत्तिफाक से एगो याजक ओह रास्ता से नीचे जात रहल।" वेब्स्टर शब्दकोश के अनुसार, इत्तिफाक के मतलब बा दू बात के एके समय पर दुर्घटनावश, अनजाने में भा अप्रत्याशित रूप से घटित होखल। संयोग एह बात से जुड़ल बा कि घटनाएँ कइसे घटित होली। ई संभावना के दर्शावेला।

अगर रउआ एगो सिक्का हवा में उछालीं, त संभावना बा कि ऊ चित गिरी भा पट। दू अलग-अलग संभावित परिणाम काहे बा? कई अइसन कारक बा जे बदल सकेला आ आखिरी परिणाम पर असर डाल सकेला, जइसे कि सिक्का कतना जोर से उछालल गइल, ऊपर जात आ नीचे गिरत समय ओकर गति का रहल, आ उछाल के समय हवा के रफ्तार कतना रहल। अगर एह तत्वन में से कौनों थोड़ा-सा भी बदल जाव, त ऊ आखिरी परिणाम पर असर डाल दी।

यीशु द्वारा बतावल कहानी में भी कई अइसन कारक रहल जे एह घटना के घटित होखे के तरीका बदल सकेला। अगर एह में शामिल कौनों व्यक्ति दोसरा दिन यात्रा करत, त परिणाम बदल जात। अगर डाकू लोग हमला करे खातिर दोसरा रास्ता चुनले रहित, त ओह दिन उहाँ कौनों अपराध ना होत। अगर घायल आदमी सड़क से ना दिखाई देवे वाली कौनों खाई में गिर गइल रहित, त भला सामरी शायद ओकरा के ना देखित। अगर याजक भा सामरी के लोगन के मदद करे के प्रति अलग नजरिया रहित, त ई घटना अलग तरीका से खत्म होत। इहे संयोग ह।

कौनों भी दिहल गइल पल में घटनन पर अनेक बदल सके वाला कारक असर डालेला—जइसे चुनाव, समय, नजरिया आ पर्यावरणीय परिस्थिति, उदाहरण खातिर। एह से, एह जीवन में बहुत-सी बात संयोगवश घटित हो जाली। अनेक घटनाएँ आकस्मिक होली। आकस्मिक के मतलब बा "बेतरतीब" भा "योजना भा अभिकल्पना के बजाय दुर्घटनावश तय भइल।" अगर हमार गाड़ी कौनों कील पर चढ़ जाव आ हमार टायर खराब हो जाव, त ऊ एगो दुर्घटना भा आकस्मिक घटना ह। हम टायर खराब होखे के योजना ना बनवनी आ ना ओकर उम्मीद

कइनी। ई एह से भइल काहेकि कुछ कारक संयोगवश एक साथ आ गइल—ओह सड़क पर जाए के हमार फैसला, सड़क पर कील के मौजूदगी आ ओकर जगह, आ जब हम ओह कील लगे पहुँचनी तब टायर के हालत। एह जीवन में बहुत-सी बात बस अइसहीं घटित हो जाली—आकस्मिक रूप से, दुर्घटनावश भा संयोग से—काहेकि पाप से शापित संसार में जीवन अइसने बा।

आगे बढ़े से पहिले, हमनी के कुछ अइसन विषय पर विचार करे के जरूरत बा जे अबले के बातन के आधार पर उठ सकेला। रउआ सोच सकत बानी कि जब एगो सार्वभौम परमेश्वर एह ब्रह्मांड पर राज करत बाड़ें, त आकस्मिक घटनाएँ कइसे हो सकेली। आकस्मिक घटनन के मौजूदगी कौनों तरीका से परमेश्वर के सार्वभौमिकता के कम नइखे करत। ई तथ्य कि परमेश्वर सार्वभौम बाड़ें, एकर मतलब बा कि ऊ सर्वशक्तिमान बाड़ें आ सर्वोच्च अधिकार रखेलें।

काहेकि परमेश्वर सार्वभौम बाड़ें, एह से ऊ पाप से क्षतिग्रस्त संसार में जीवन के संयोगवश घटे वाली घटनन के इस्तेमाल कर सकेलें आ ओकरा के अपना उद्देश्य पूरा करे में लगा सकेलें। थोड़ी देर में हम एह विषय पर अउरी विस्तार से चर्चा करब।

रउआ के ई चिंता भी हो सकेला कि अबले हम जे बात कहनी, ओकर मतलब ई बा कि जीवन के आकस्मिकता आ संयोग से कौनों सुरक्षा नइखे। एह किताब में आगे हम कुछ अइसन बात कहब जे एह विषय पर समझ दी।

अभी खातिर, एह विचारन पर ध्यान दीं:

• एह संसार के मौजूदा हालत में परेशानी से बिलकुल मुक्त जीवन जइसन कौनों बात नइखे। हमनी सभ समस्या आ परीक्षा के सामना करीलें। बाकिर जब हम जीवन के कठिनाई सभ के बीच से गुजरत बानी, त परमेश्वर के अगुवाई, प्रबंध आ सुरक्षा हमनी खातिर उपलब्ध बा।

• खुद यीशु कहलन, "संसार में रउआ के क्लेश, परीक्षा, संकट आ निराशा मिली; बाकिर हिम्मत बाँधीं—साहस राखीं, विश्वास से भरल रही, निश्चिंत आ अडिग रही—काहेकि हम संसार पर जय पा लिहनी। हम ओकर नुकसान पहुँचावे के शक्ति छीन लिहनी; हम ओकरा के [रउआ खातिर] जीत लिहनी" (यूहन्ना अध्याय 16 पद 33)।

हाँ, बाकिर परमेश्वर एहके अनुमति दिहलन।

"परमेश्वर एहके अनुमति दिहलन" ई वाक्यांश के गलत इस्तेमाल एह संसार में कठिनाई आ पीड़ा के स्रोत के बारे में हमनी के समझ के अउरी जटिल बना देला। बेहतर ई होई कि हम एह वाक्यांश के अपना शब्दावली से हटा दीं, काहेकि एहसे कुछ गलत मतलब जुड़ल बा। जब कुछ बुरा होखेला, त लोग अक्सर कहेला कि चाहे परमेश्वर ओह घटना के पैदा ना कइले होखसु, बाकिर उहाँ ओकर अनुमति त दिहलन। एह बात में ई विचार छिपल रहेला कि काहेकि परमेश्वर ओह नकारात्मक परिस्थिति के होखे से ना रोकलन, एह से कौनों ना कौनों रूप में ऊ ओकर पीछे बाड़ें भा ओकरा के स्वीकृति देत बाड़ें। बाकिर बहुत-सी अइसन बात बा जे परमेश्वर ना रोकेलन, एह खातिर ना कि ऊ ओकरा के स्वीकार करत बाड़ें, बलुक एह खातिर कि संसार के व्यवस्था अइसने स्थापित बा।

जब परमेश्वर मानवजाति के रचना कइलन, त उहाँ मनुष्यन के स्वतंत्र इच्छा दिहलन, जवना से परमेश्वर के खिलाफ जानबूझ के आज्ञा ना माने के संभावना पैदा भइल। एह संसार में लोग नियमित रूप से पाप करेला आ अनैतिकता आ हिंसा के भयानक काम करेला। हालाँकि परमेश्वर कौनों तरीका से एह आज्ञा उल्लंघन के पक्ष में नइखन आ ना ओकर पीछे बाड़ें, फिरो उहाँ हस्तक्षेप ना करेलन काहेकि मर्द आ औरतन के चुनाव करे के स्वतंत्रता दिहल गइल बा।

शुरुआती चुनावन के अलावा, स्वतंत्र इच्छा ओह चुनावन के परिणामो साथे लेके आवेला। बहुत-सी बात मनुष्यन के पापपूर्ण कामन के कारण घटेला—अइसन घटनाएँ जे परमेश्वर के अप्रसन्न करेला आ उहाँ के इच्छा के खिलाफ बा। बाकिर अगर परमेश्वर मर्द आ औरतन के जानबूझ के कइल कामन के परिणाम के मिटा दीं भा कम कर दीं, त मानवजाति लगे सचमुच स्वतंत्र इच्छा ना रही।

आदम, जे स्वतंत्र इच्छा पावे वाला पहिला मनुष्य रहे, ऊ पाप करे के चुनाव कइलस। जइसे हम एह अध्याय में पहिले चर्चा कइनी, ओकर आज्ञा ना माने के परिणामस्वरूप धरती पर विनाशकारी असर पैदा भइल—अइसन परिणाम, जवना के सामना हम आजुओ करत बानी। जब कौनों भयंकर तूफान कौनों शहर के तबाह कर देला, त ई एह खातिर नइखे कि परमेश्वर एहके अनुमति दिहलन। अइसन विनाश आदम के स्वतंत्र इच्छा के चुनाव के फल बा।

ब्रह्मांड के सबसे महान सामर्थ्य होखे के नाते, परमेश्वर संभावित रूप से हर पाप आ पाप के हर असर के रोक सकेलें, जेमें आदम के पापो शामिल बा। बाकिर उहाँ खुद के मानव के चुनाव आ ओह चुनावन के परिणाम तक सीमित करे के फैसला कइले बाड़ें। आगे के एगो अध्याय में, हम एह विषय पर चर्चा करब कि प्रभु कइसे चुनाव आ ओहकर परिणाम के इस्तेमाल करेलन, इहाँ तक कि ओह बातन के भी जे उहाँ के इच्छा के खिलाफ बा।

परमेश्वर के एगो उद्देश्य बा।

"परमेश्वर के एगो उद्देश्य बा" ई दोसर वाक्यांश ह जवना के लोग गलत तरीका से इस्तेमाल करेला जब क्लेश उनकर जीवन में आवेला। ई शब्द ई संकेत देला कि उनकर परेशानी कौनों तरीका से उनकर खातिर परमेश्वर के इच्छा बा। ई विचार गलत बा काहेकि ई ओह बात के खिलाफ बा जे यीशु हमनी के परमेश्वर के बारे में देखावेलन। यीशु बस उहे कइलन जे उहाँ अपना पिता के करत देखलन, आ उहाँ साफ तौर पर अपना काम के तुलना विनाशकारी आ हानिकारक घटनन से कइलन: "चोर खाली चोरी करे, हत्या करे आ नाश करे आवेला, बाकिर हम (यीशु) एह खातिर आइल बानी कि ऊ जीवन पावसु—आ भरपूर जीवन पावसु" (यूहन्ना अध्याय 10 पद 10)। एह कथन से साफ बा कि अगर कौनों बात मारेला, चुरावेला भा नाश करेला, त ऊ यीशु भा उहाँ के पिता के ओर से नइखे।

काहेकि विपत्ति परमेश्वर के ओर से ना आवेला, एह से ओकरा में परमेश्वर के कौनों उद्देश्य ना हो सकेला। फिरो, खाली एहसे कि पीड़ादायक परिस्थिति में परमेश्वर के कौनों उद्देश्य नइखे, एकर मतलब ई नइखे कि उहाँ के कौनों उद्देश्ये नइखे। वेब्स्टर शब्दकोश के अनुसार, उद्देश्य के मतलब बा "कुछ अइसन जवन हासिल करे के लक्ष्य के रूप में तय कइल गइल

होखे।" बाइबल हमनी के बतावेला कि धरती के रचना करे से पहिले ही परमेश्वर लगे एगो योजना आ एगो उद्देश्य रहे।

रोमियों अध्याय 8 पद 28 ओह लोगन के बारे में कहेला "जे उहाँ (परमेश्वर) के योजना के अनुसार बुलावल गइल बाड़ें।" ई अंश आगे ओह उद्देश्य के प्रकट करेला: "काहेकि परमेश्वर अपना पूर्वज्ञान में (हमनी के) अपना बेटा के स्वरूप जइसन बने खातिर चुनलन, ताकि ऊ बहुत भाई लोग के परिवार में पहिलौठा ठहरसु" (रोमियों अध्याय 8 पद 29)।

सृष्टि से पहिलहीं परमेश्वर के इच्छा रहल आ आजुओ बा कि उहाँ के एगो परिवार होखे। हमनी के परमेश्वर के बेटा आ बेटी बने खातिर बुलावल गइल बानी।

जब यीशु कुँवारी मरियम के गर्भ में देह धारण कइलन, त उहाँ पूरा तरह मनुष्य बनलन, बिना पूरा तरह परमेश्वर होखल छोड़े। धरती पर अपना सालन के दौरान, यीशु परमेश्वर के रूप में अपना अधिकार आ विशेषाधिकार के एक ओर रख दिहलन आ परमपिता परमेश्वर पर निर्भर रहत एगो मनुष्य के रूप में जीवन बितवलन। अइसन करके उहाँ हमनी के देखवले कि परमेश्वर के बेटा कइसे देखाला आ कइसे आचरण करेला।

फेर यीशु क्रूस पर गइलन आ हमनी के पापन खातिर हमनी के जगह पर मर गइलन। उहाँ के मृत्यु आ पुनरुत्थान एह बात के संभव बना दिहलस कि जब हम उहाँ में आ उहाँ के बलिदान में विश्वास करीं, त हम परमेश्वर के संतान बन सकीं। रोमियों अध्याय 8 पद 30 ओह प्रक्रिया के वर्णन करेला, जवना से परमेश्वर अपना ओह उद्देश्य के पूरा करेलन कि अइसन संतान पैदा होखे जे यीशु जइसन होखे।

"आ जेकरा के उहाँ पहिले से ठहरवलन, ओकरा के बुलवलनो; आ जेकरा के बुलवलन, ओकरा के धर्मीओ ठहरवलन—मतलब दोषमुक्त कइलन, धर्मी बनवलन, आ अपना साथ सही संबंध में स्थापित कइलन। आ जेकरा के धर्मी ठहरवलन, ओकरा के महिमाओ दिहलन—ओकरा के स्वर्गीय गरिमा आ दशा में उठवलन" (रोमियों अध्याय 8 पद 30)।

एह छोट किताब में हम विस्तार से ई ना समझा सकीलें कि परमेश्वर कइसे मनुष्यन के धर्मी ठहराके आ महिमा देके उनकरा के यीशु के स्वरूप में ढालेलें। इतना कहला से काम चली कि परमेश्वर अपनी योजना के क्रूस के द्वारा पूरा करेलन, जवना मनुष्य के पाप के कर्जा चुका दिहलस आ उहाँ के आत्मा खातिर मनुष्यन में काम करे आ उनकरा के बदले के रास्ता खोल दिहलस। कौनों गाड़ी दुर्घटना भा बीमारी में परमेश्वर के कौनों छिपल उद्देश्य नइखे। समय के शुरुआत से उहाँ के उद्देश्य ई रहल बा कि उद्धार के प्रक्रिया के द्वारा पापी मनुष्यन के यीशु जइसन बेटा बनावल जाव।

जवन घटनन के हम समझ ना पावीलें, ओह में अर्थ खोजे आ ओकरा के समझे के अपना कोशिश में, हम अक्सर खास परिस्थिति में परमेश्वर के उद्देश्य खोजे लगीलें। बाकिर परमेश्वर के लक्ष्य कौनों एक घटना से बहुत बड़ा बा। उहाँ के अनन्त योजना ई बा कि उहाँ के अइसन परिवार होखे, जवना में बेटा आ बेटी होखसु जे चरित्र, सामर्थ्य, पवित्रता आ प्रेम में यीशु जइसन होखसु। परमेश्वर क्रूस के सामर्थ्य से मिलल एगो परिवार चाहेलन।

हम पहिले रोमियों अध्याय 8 पद 28 के खाली एगो हिस्सा उद्धृत कइनी। पूरा पद कहेला: “आ हम जानत बानी कि जे लोग परमेश्वर से प्रेम करेला, जे उहाँ के योजना के अनुसार बुलावल गइल बा, उनकरा खातिर परमेश्वर सभ बात के मिलाके भलाई ही पैदा करेलन” (रोमियों अध्याय 8 पद 28)।

ई अंश हमनी के आश्वासन देला कि परमेश्वर ओह सभ बातन के भी—जवन में उहाँ के कौनों उद्देश्य नइखे—अपना ओह योजना के पूर्ति में लगा सकेलें, जवना के उद्देश्य एगो परिवार एकजुट कइल बा। काहेकि उहाँ सार्वभौम बाड़ें, परमेश्वर आकस्मिक घटनन आ पापपूर्ण चुनावन के भी लेके ओकर इस्तेमाल अपनी ओह योजना के आगे बढ़ावे खातिर कर सकेलें, जवना में उहाँ बेटा आ बेटी पावे चाहेलन। आ जब उहाँ अइसन करेलन, त ऊ असली बुराई में से भी महान भलाई पैदा करेलन। आवे वाला अध्यायन में हम एह सिद्धांत के अउरी विस्तार से समझाइब।

रउआ शायद ई सोचत होखब: “अगर परमेश्वर हमनी के परीक्षा के स्रोत नइखन, त ऊ जीवन के विपत्ति में अउरी बेसी हस्तक्षेप काहे ना करेलन? आखिरकार, उहाँ खाली सामर्थी ही ना, बलुक प्रेम करे वाला आ दयालु भी बाड़ें।” अगिला कुछ अध्याय हमनी के अउरी समझ दी, काहेकि हम “काहे” के सवाल के जवाब देत आगे बढ़त रहब।

दुख आ बड़ तस्वीर

जब लोग "काहे" पूछेला, त आमतौर पर ऊ कौनों खास परिस्थिति के संदर्भ में पूछत होखेला। "ई हमरा साथे काहे भइल?" "ई उनका साथे काहे भइल?" अगर रउआ मानवीय दुख आ पीड़ा के समझे के कोशिश अपना खास परिस्थिति भा कौनों दोसरा के परिस्थिति से शुरू करब, त रउआ परमेश्वर आ उहाँ के काम करे के तरीका के बारे में गलत निष्कर्ष निकाल सकत बानी। रउआ के बड़ तस्वीर से शुरुआत करे के पड़ी आ अपना परिस्थिति के परमेश्वर के समग्र योजना के संदर्भ में समझे के पड़ी।

बड़ तस्वीर।

अनन्तकाल में परमेश्वर एगो योजना बनवले रहन कि उहाँ के एगो परिवार होखे। उहाँ धरती के अपना आ अपना परिवार खातिर एगो घर के रूप में बनवले। फेर उहाँ मनुष्यन के एह उद्देश्य से रचलन कि ऊ उहाँ के बेटा आ बेटी बनसु। इहे बड़ तस्वीर ह।

"बहुत पहिले, संसार के रचना करे से पहिलहीं, परमेश्वर हमनी से प्रेम कइलन आ हमनी के मसीह में चुन लिहलन ताकि हम उहाँ के नजर में पवित्र आ निर्दोष होखी। उहाँ के अटल योजना हमेशा से इहे रहल कि ऊ हमनी के यीशु मसीह के द्वारा अपना लगे लियाके अपना परिवार में गोद ले लीहें। आ एहसे उहाँ के बड़ा आनंद मिलल" (इफिसियों अध्याय 1 पद 4 से 5)।

“उहाँ संसार के बसल रहे खातिर बनवले, ना कि ओकरा के सूना आ अराजक जगह होखे खातिर” (यशायाह अध्याय 45 पद 18)।

“आ हम सिंहासन के ओर से एगो ऊँच आवाज सुननी, जे कहत रहे, ‘देखीं, परमेश्वर के निवास अब उहाँ के लोगन के बीच बा! ऊ उनकरा साथे रहिहें, आ ऊ उहाँ के लोग होइहें। खुद परमेश्वर उनकरा साथे होइहें’” (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 पद 3)।

“आ हम उनकर परमेश्वर होखब, आ ऊ हमार संतान होइहें” (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 पद 7)।

जइसे हम पहिले चर्चा कइनी, संसार आ मानवजाति अपना सृष्टि के बाद पाप के कारण क्षतिग्रस्त हो गइल। बाकिर परमेश्वर एहसे चकित ना भइलन। उहाँ मानवजाति के रचना ई जानते कइलन कि ऊ आज्ञा उल्लंघन के द्वारा उहाँ से स्वतंत्रता के चुनाव करी।

अपनी अनन्त योजना के हिस्सा के रूप में, परमेश्वर एह विद्रोह आ धरती पर आइल मृत्यु के शाप के सामना करे के एगो रास्ता तैयार कइलन। खुद परमेश्वर देह धारण कइलन, धरती पर आइलन, आ मनुष्यन के पापन खातिर मर गइलन। प्रकाशितवाक्य अध्याय 13 पद 8 यीशु के “ऊ मेमना जे जगत के स्थापना से बलिदान कइल गइल” कहेला।

क्रूस पर, यीशु हमनी के पाप अपना ऊपर ले लिहलन ताकि ओकरा के दूर करसु आ ओकर कइल नुकसान के खत्म करसु। एहके परिणामस्वरूप, जे केहू प्रभु यीशु मसीह के सामने अपना घुटना टेक देला आ अपना पापन खातिर उहाँ के बलिदान के स्वीकार करेला, ऊ परमेश्वर के मूल उद्देश्य में फेर से स्थापित हो जाला। ऊ उहाँ के बेटा आ बेटी बन जाला।

परमेश्वर के वर्तमान उद्देश्य।

एह समय परमेश्वर के मुख्य लक्ष्य ई नइखे कि हर आदमी के जीवन आसान आ पीड़ारहित बना दिहल जाव। उहाँ के प्राथमिक उद्देश्य मनुष्यन के पाप से उद्धार तक ले आवल आ मसीह में विश्वास के द्वारा उनकरा के अपनी संतान बनावल बा। परमेश्वर एह जीवन में होखे वाली हर पीड़ा आ अन्याय के रोके से कहीं बेसी मनुष्यन के अनन्त नियति के बारे में चिंतित बाड़ें। अगर कौनों आदमी के वर्तमान जीवन पूरा आ पीड़ारहित होखे, बाकिर अपना पाप के कारण आखिर में ऊ हमेशा खातिर परमेश्वर से अलग हो जाव, त अइसन अद्भुत जीवनो व्यर्थ बा।

एगो बात पर विचार करीं जे यीशु एक दिन शिक्षा देत घरी कहलन। भीड़ में से केहू उहाँ के पुकार के कहलस कि ऊ ओकर भाई के आदेश दीं कि उनकर पिता के संपत्ति में ओकर हिस्सा बाँट देव। प्रभु जवाब दिहलन: "सावधान रहीं! जे रउआ लगे नइखे ओकर लालच मत करीं। असली जीवन एह बात से ना नापल जाला कि हमनी लगे कतना बा" (लूका अध्याय 12 पद 15)।

फेर उहाँ एगो दृष्टान्त सुनवलन एगो धनवान आदमी के बारे में, जवना लगे बहुत सफल खेत रहे, जे एतना भरपूर उपज दिहलस कि ओकर खलिहान भर गइल। ओह आदमी फैसला कइलस कि ऊ पुरान खलिहान गिराके ओहसे बड़ खलिहान बनवाई।

"आ हम अपना से कहब, दोस्त, तोहरा लगे बहुत साल खातिर बहुत कुछ जमा बा। अब आराम कर! खा, पी आ आनन्द मना! बाकिर परमेश्वर ओकरा से कहलन, 'हे मूर्ख! आजे रात तोहार जान ले लिहल जाई। तब जे कुछ तू इकट्ठा कइले बाड़ऽ, ऊ केकर होई?' हँ, ऊ आदमी मूर्ख बा जे धरती पर धन इकट्ठा करेला बाकिर परमेश्वर के साथ समृद्ध संबंध ना रखेला" (लूका अध्याय 12 पद 19 से 21)।

हालाँकि यीशु अपना जवाब में खास तौर पर लोभ के विषय पर बात करत रहलन, फिरो हम अपना चर्चा खातिर एगो महत्वपूर्ण बात सीख सकीलें। यीशु के अनुसार, अगर रउआ लगे एगो अद्भुत, समस्या से मुक्त जीवन होखे, जवना में एह संसार के सबसे बढ़िया चीज सभ होखे, बाकिर मसीह में विश्वास के द्वारा रउआ के परमेश्वर के साथ कौनों संबंध ना होखे, त जीवन के कौनों मतलब नइखे।

पाप से शापित धरती पर जीवन के प्रकृति के कारण, लोग हृदय के पीड़ा आ हानि के अनुभव करेला, आ बहुत-सी जरूरत आ इच्छा अधूरी रह जाली। अगर रउआ सफलता आ बहुतायत के जीवनो जी लीं आ अपना सभ सपना पूरा कर लीं, तबो बुढ़ापा आ मृत्यु सभ कुछ छीन लेला। एकर मतलब ई नइखे कि एह जीवन में मदद, आनन्द, प्रबंध आ सुरक्षा के कौनों व्यवस्था नइखे। बा। बाकिर धरती पर जीवन तबले पीड़ारहित भा समस्या से मुक्त ना होई, जबले यीशु के दोसर आगमन पर पाप आ ओकर प्रभाव के हर निशान मिटा ना दिहल जाई।

प्रकाशितवाक्य के किताब के आखिरी दू अध्याय ओह बदलावन के बारे में बतावेला जे यीशु के धरती पर लौटे पर होई। ई हमनी के ओह जीवन के एगो मन मोह लेवे वाला झलक देखावेला जे आगे आवे वाला बा।

“परमेश्वर (हमनी के) आँख से हर आँसू पोंछ दीहें, आ मृत्यु फेर ना रही; ना शोक, ना रोना, ना पीड़ा फेर कबो होई; काहेकि पुरान बात आ पहिले के व्यवस्था खत्म हो गइल” (प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 पद 4)।

“आ फेर कौनों शाप ना रही” (प्रकाशितवाक्य अध्याय 22 पद 3)।

अनन्तकालीन नजरिया।

हमनी के ई भी समझे के चाहीं कि धरती पर अपना वर्तमान अवस्था में जीवन—जे पाप आ मृत्यु के शाप के बोझ तले कराहत बा—हमनी खातिर परमेश्वर के योजना के बस एगो बहुत छोट हिस्सा बा। हमनी अनन्त अस्तित्व वाला प्राणी बानी। हमनी के अस्तित्व के बड़ हिस्सा एह जीवन के बाद बा, पहिले स्वर्ग में आ फेर नया धरती पर। नया धरती उहे पुरान धरती होई जे बदल के पाप आ मृत्यु के शाप से मुक्त कर दिहल जाई (यशायाह अध्याय 65 पद 17 आउर 2 पतरस अध्याय 3 पद 13)।

आवे वाला जीवन खाली परेशानी आ पीड़ा के हट जाए तक सीमित ना रही। ऊ प्रतिपूर्ति भी दी। सभ कुछ ठीक कर दिहल जाई। परमेश्वर खाली आँसूए ना पोंछीहें, बलुक ओहकर जगह आनन्द भर दीहें। एह जीवन के दुख ओह महिमा के तुलना में कुछुओ नइखे जे आगे हमनी के इंतजार करत बा। एह पतित धरती पर मानव इतिहास के छः से दस हजार बरिस आ मनुष्यन द्वारा सहल गइल सारा दुख, अनन्तकाल आ ओह बात के तुलना में बहुत छोट बा जे हमनी खातिर आगे रखल बा।

“जे कुछ हमनी के अभी सहे के पड़ सकेला, ऊ ओह महान भविष्य के तुलना में कुछुओ नइखे जे परमेश्वर हमनी खातिर तैयार कइले बाड़ें। पूरी सृष्टि उत्कंठा से ओह अद्भुत दृश्य के इंतजार करत बा जब परमेश्वर के बेटा लोग अपना असली गौरव में प्रकट होई” (रोमियों अध्याय 8 पद 18 से 19)।

“काहेकि पूरी सृष्टि धैर्य आ आशा के साथ ओह भविष्य के दिन के इंतजार करत बा जब परमेश्वर अपनी संतान के फेर से जीवित करीहें। काहेकि ओह दिन काँटा आ ऊँटकटारा, पाप, मृत्यु आ क्षय—ऊ सभ बात जे परमेश्वर के आज्ञा से संसार के उहाँ के इच्छा के खिलाफ अपना अधीन कर लिहलस—सभ खत्म हो जाई, आ हमनी के चारों ओर के सृष्टियो ओह महिमामय स्वतंत्रता में सहभागी होई जवना के आनन्द परमेश्वर के संतान उठावेली” (रोमियों अध्याय 8 पद 19 से 21)।

हम कौनों तरीका से एह जीवन में लोगन द्वारा महसूस कइल जाए वाली पीड़ा के कम करके ना आँकत बानी। बाकिर बड़ तस्वीर के बारे में सही नजरिया हमनी के कठिनाई के बोझ हल्का कर सकेला। जब कौनों बच्चा अपना प्रिय खिलौना खो देला, भा जब कौनों किशोर के नाच के समारोह खातिर साथी ना मिलेला, त सचमुच ओकर दिल टूट जाला। बाकिर बड़ आदमी के नजरिया से आ पूरा जीवन के संदर्भ में, हम समझत बानी कि ई बात ओह घरी जतना विनाशकारी लागेला, उतना असल में नइखे।

हम ई भी ना कहत बानी कि कौनों प्रियजन के खोवे के पीड़ा एगो खिलौना खोवे के बराबर बा, भा कि कौनों निर्दोष लड़िका भा लड़की के साथ दुर्व्यवहार के तुलना नाच के समारोह खातिर साथी ना मिले से कइल जा सकेला। हम बस ई देखावत बानी कि अलग नजरिया जीवन के आघात के बोझ कम कर सकेला। स्वर्ग में केहू एह बात के शोक ना मना रहल

होई कि ऊ अपना जीवनकाल में बहुत कठिन परिस्थिति में जीयल रहे, भा कि ऊ धरती के क्रूर भा विनाशकारी परिस्थिति में छोड़ल रहे।

जे लोग प्रभु के जानेला, उनकरा खातिर एह वर्तमान जीवन के हानि आ दुख अस्थायी बा। एह संसार के अन्याय, हृदय के पीड़ा आ त्रासदी के उलटफेर के आखिरी मंच आवे वाला जीवन में हमनी के इंतजार करत बा। ई ज्ञान हमनी के ओह अनेक चुनौती के बीच टिके में मदद कर सकेला जवना के हम सामना करीलें।

परमेश्वर सार्वभौम बाड़ें।

हालाँकि हम जीवन के कठिनाई से बच ना सकीलें, फिरो एह तथ्य से हिम्मत पा सकीलें कि परमेश्वर सार्वभौम बाड़ें। बहुत लोग परमेश्वर के सार्वभौमिकता के मतलब ई समझेला कि जे कुछो होखेला, ओकरा पीछे सीधे भा परोक्ष रूप से परमेश्वरे बाड़ें। ऊ मानेला कि काहेकि परमेश्वर सार्वभौम बाड़ें, एह से ऊ लोगन के साथ भलाईओ कर सकेलें आ बुराईओ। बाकिर सार्वभौमिकता के ई नजरिया ओह बात के खिलाफ बा जे यीशु हमनी के परमेश्वर के बारे में देखावेलन। परमेश्वर के सार्वभौमिकता के सही समझ ई स्वीकार करेला कि उहाँ ब्रह्मांड में सबसे ऊँच सामर्थ्य आ अधिकार रखेलें।

अपनी सामर्थ्य आ अधिकार के कारण, परमेश्वर जे कुछो होखेला, ओकर इस्तेमाल अपना ओह उद्देश्य के पूरा करे में कर सकेलें कि उहाँ के एगो परिवार होखे। ऊ ओह आकस्मिक घटनन के भी—जवन उहाँ से पैदा ना भइल—मतलब ऊ संयोगवश घटनन जे पाप के कारण एह संसार के अव्यवस्था में घटेला—अपना उद्देश्य के पूर्ति में लगा सकेलें। जब परमेश्वर अपना परिवार के एकजुट करेलन, त उहाँ असली बुराई में से भी महान भलाई पैदा कर सकेलें।

परमेश्वर द्वारा अपना परिवार के पावे के संदर्भ में, बाइबल कहेला कि उहाँ "सभ कुछ अपनी इच्छा के योजना के अनुसार काम में लावेलन" (इफिसियों अध्याय 1 पद 11) आ "जे लोग परमेश्वर से प्रेम रखेला आ उहाँ के योजना के अनुसार बुलावल गइल बा, उनकरा खातिर ऊ सभ बात के मिलाके भलाई पैदा करेलन" (रोमियों अध्याय 8 पद 28)। ई ओह लोग खातिर

बहुत उत्साह बढ़ावे वाला समाचार बा जे पाप से शापित धरती पर जीवन जी रहल बा, जहाँ क्लेश आ परीक्षा रोज के जीवन के हिस्सा बा। आगे के अध्यायन में हम कुछ अद्भुत उदाहरण पर विचार करब कि परमेश्वर अपनी सार्वभौमिकता में अइसन कइसे करेलन। (*परमेश्वर अच्छा हउवें... आ अच्छा मतलब अच्छा हउवें* में परमेश्वर के सार्वभौमिकता पर अउरी विस्तार से चर्चा बा।)

पीड़ा के रहस्य।

मानवीय पीड़ा के विषय बहुत रहस्य से घिरल बा। एह समय केहू पूरा तरह ई ना समझा सकेला कि हर तरह के पीड़ा आ व्यथा काहे घटेला। बाकिर जे बात हम अभी ले ना समझत बानी, ओकरा के हम ओह बात के कमजोर करे ना दे सकीलें जवन हम यीशु में आ उहाँ के द्वारा परमेश्वर के भलाई के बारे में साफ-साफ जानत बानी।

"गुप्त बात त हमनी के परमेश्वर यहोवा के ह, बाकिर जे बात प्रकट कइल गइल बा, ऊ हमेशा खातिर हमनी आ हमनी के संतान खातिर बा" (व्यवस्थाविवरण अध्याय 29 पद 29)।

अगर हम व्यवस्थाविवरण के एह पूरा अंश के उद्धृत करीं, त हम देखब कि एकर संदर्भ पाप के कारण होखे वाली पीड़ा बा। परमेश्वर अपना भविष्यद्वक्ता मूसा के द्वारा इस्राएल के चेतावनी दिहले रहन कि अगर ऊ उहाँ के छोड़के झूठ देवता लोग के पूजा करी—जवन ऊ कइलन—त ऊ अपना दुश्मनन के हाथ से बहुत कठिनाई झेली। हालाँकि परमेश्वर पहिले ही उनकरा के बता दिहले रहन कि का होई आ काहे होई, फिरो उहाँ जानत रहन कि जब ई सभ घटित होई, त कुछ लोगन के मन में सवाल उठी। एह से परमेश्वर पहिले ही चेतावनी दिहलन: जे बात रउआ ना समझीं, ओकरा के ओह ज्ञान के कमजोर मत करे दीं जवन रउआ जानत बानी। हमनी के भी परमेश्वर के एह शिक्षा पर ध्यान देवे के चाहीं।

काहे भा का?

एक बेर जब हम बाइबल पढ़त रहीं, त हम हर ओह जगह नोट कइनी जहाँ केहू "काहे" पूछले रहे। हम देखनी कि बहुत कम लोगन के ऊ जवाब मिलल जे ऊ चाहत रहलन, काहेकि बाइबल हमेशा "काहे" के जवाब ना देला। बलुक ऊ हमनी के ई निर्देश देला कि "का" करे के बा।

"काहे" एगो उचित सवाल हो सकेला, बाकिर जीवन के चुनौती के बीच ई हमेशा सबसे महत्वपूर्ण सवाल नइखे जवना के जवाब रउआ के चाहीं। ई जान लेल कि कौनों बात काहे भइल, अपने-आप समस्या के हल ना करेला। उदाहरण खातिर, अगर रउआ के ई पता भी हो जाव कि रउआ के गाड़ी काहे स्टार्ट ना हो रहल बा, तबो रउआ कहीं ना जा सकब जबले रउआ के ई ना पता होखे कि ओकर बारे में का करे के बा। ध्यान दीं कि जब उहाँ के चेलन उहाँ से पूछलन कि एगो खास आदमी जन्म से अंधा काहे रहे, त यीशु कइसे जवाब दिहलन।

"आ जात घरी यीशु एगो आदमी के देखलन जे जन्म से अंधा रहे। उहाँ के चेलन पूछलन, 'हे गुरु, पाप के कइलस, ई आदमी भा एकर माई-बाप, कि ई जन्म से अंधा पैदा भइल?' यीशु जवाब दिहलन, 'ना ई आदमी पाप कइलस, ना एकर माई-बाप; बाकिर एह खातिर कि परमेश्वर के काम ओकरा में प्रकट होखे। हमरा ओह काम के जरूर करे के बा जे हमरा के भेजले बाड़ें, जबले दिन बा; रात आवे वाली बा, जब केहू काम ना कर सकेला'" (यूहन्ना अध्याय 9 पद 1 से 4)।

"ई कहके उहाँ जमीन पर थूकलन, लार से माटी बनवलन, आ ओह आदमी के आँख पर लगवलन। फेर ओकरा से कहलन, 'जा, शीलोह के कुंड में धो ल।' तब ऊ गइल, धोवलस, आ देखे वाला होके घर लवटल" (यूहन्ना अध्याय 9 पद 6 से 8)।

ओह दिन यीशु अपना चेलन द्वारा पूछल "काहे" के सवाल के सीधा जवाब ना दिहलन, बस एतने बतवलन कि ओह आदमी के अंधापन ना त ओकर माई-बाप के पाप के परिणाम रहे आ ना ओकर अपना पाप के। एकर बदले, यीशु अपना चेलन के बतवलन कि उहाँ का करे जा रहल बाड़ें—परमेश्वर के काम करत ओह अंधा आदमी के चंगा करे।

आगे बढ़े से पहिले, हमनी के पवित्र शास्त्र के एह हिस्सा के एगो आम गलत व्याख्या पर थोड़ा विचार करे के चाहीं। कुछ लोग कहेला कि यीशु के जवाब के मतलब ई रहे कि ई आदमी परमेश्वर के इच्छा के अनुसार अंधा पैदा भइल रहे। उनकर दावा बा कि परमेश्वर एह अंधापन के एह खातिर अनुमति दिहलन ताकि उहाँ ओह आदमी के चंगा करके अपनी सामर्थ्य देखावस। ई व्याख्या सही नइखे। कुछ बात पर ध्यान दीं:

• अगर अंधापन परमेश्वर के काम रहे, त जब यीशु ओह आदमी के चंगा कइलन, त उहाँ परमेश्वर के काम करत-करत परमेश्वर के कामे नष्ट कर दिहलन। चंगाई आ अंधापन दुनो एके साथ परमेश्वर के काम ना हो सकेला। अगर कौनों समय, कौनों कारण से ओह आदमी के अंधापन परमेश्वर के इच्छा के अनुसार रहे, त ओकरा के चंगा करके यीशु परमेश्वर के इच्छा के उलट दिहलन।

• परमेश्वर अपने खिलाफ काम ना करेलन कि पहिले मनुष्यन के पीड़ा दीं आ फेर मुड़के उनकरा के मुक्त करीं। एगो मौका पर फरीसी लोग यीशु पर आरोप लगवलस कि ऊ शैतान के शक्ति से दुष्टात्मा निकालत बाड़ें। यीशु उनकरा के जवाब दिहलन, "अगर शैतान शैतान के निकाले, त ऊ अपना ही खिलाफ बँट गइल; तब ओकर राज्य कइसे टिक पाई?" (मत्ती अध्याय 12 पद 26)। अगर शैतान अपना हित के खिलाफ काम ना करेला, त निश्चय ही परमेश्वरो अइसन ना करेलन। परमेश्वर के राज्य बँटल नइखे।

• एह पतित संसार में पहिलहीं से बहुत बीमार लोग बा। परमेश्वर के चंगा करे के मौका देवे खातिर लोगन के पीड़ित करे, भा पीड़ित होखे देवे के जरूरत नइखे।

जब हम मूल यूनानी भाषा के कुछ पहलू समझीलें, त ई साफ हो जाला कि ओह आदमी के अंधापन के पीछे कौनों तरीका से परमेश्वर ना रहन, आ यीशु के ध्यान "काहे" से बेसी "का करे के बा" पर रहे।

"उहाँ के चेलन पूछलन, 'हे गुरु, के पाप कइले रहे, ई आदमी भा एकर माई-बाप, कि ई जन्म से अंधा पैदा भइल?' यीशु जवाब दिहलन, 'ना ई आदमी पाप कइलस, ना एकर माई-बाप; बाकिर परमेश्वर के काम ओकरा में प्रकट होखे। हमरा ओह काम के जरूर करे के बा जे हमरा के भेजले बाड़ें, जबले दिन बा'" (यूहन्ना अध्याय 9 पद 2 से 4)।

चेलन के सवाल आ यीशु के जवाब दुनो में "कइल" शब्द पर ध्यान दीं। मूल भाषा में एह शब्द के इस्तेमाल कई बेर उद्देश्य (काहे) बतावे खातिर आ कई बेर परिणाम (का) बतावे खातिर होला। एह अंश में ई परिणाम के प्रकट करेला।

चेलन पूछलन: केकर पाप के परिणामस्वरूप ई आदमी अंधा भइल? यीशु जवाब दिहलन: ना त एह आदमी के पाप आ ना ओकर माई-बाप के पाप एह अंधापन के पैदा कइलस, बाकिर एकर परिणाम ई होई कि ई आदमी चंगा कइल जाई। फेर उहाँ उनकर ध्यान एह ओर मोड़ दिहलन कि "हमनी के का करे के चाहीं।" यीशु कहलन: हमरा परमेश्वर के काम करे के बा आ एह आदमी के चंगा करे के बा।

हालाँकि हम हमेशा ई ना जान पावीलें कि खास कठिनाई सभ काहे आवेली (एह सामान्य सच्चाई से आगे कि ई पाप से शापित संसार में जीवन के हिस्सा बा), फिरो हम परमेश्वर के भलाई आ उहाँ के उद्देश्य के जानत बानी। एह से, हम निश्चिंत हो सकीलें कि उहाँ हमनी के कठिनाई सभ में से भलाई पैदा करीहें आ ओकरा के अपना ओह अनन्त उद्देश्य के पूरा करे में लगइहें कि उहाँ के एगो परिवार होखे। हम एह बात के भरोसा रख सकीलें कि ओह घटना से जुड़ल कौनों हानि अस्थायी बा। आ हम विश्वास के साथ ई जान सकीलें कि ओह परिस्थिति के हृदय के पीड़ा आ अन्याय एक दिन पलट दिहल जाई। आगे हम कुछ उदाहरण पर विचार करब कि परमेश्वर ई कइसे करेलन।

परमेश्वर के प्रेम आ हमनी के परिस्थिति

एक बाइबल शिक्षक के रूप में, लोग हमसे ई सवाल पूछेला: "ई दुखद घटना हमरे संगे काहे भइल?" कई बेर त हम जवाब दीए से पहिले ऊ अपना सवाल के जवाब खुदे ए तरीका से दे देला: "शायद परमेश्वर हमसे प्रेम नइखन करत।"

बहुत लोगन के ई धारणा बा कि जीवन में होखे वाली नीक आ खराब घटना परमेश्वर के जादे या कम प्रेम के अभिव्यक्ति ह। अगर सब कुछ ठीक चल रहल होखे, त ऊ निश्चिंत रहेला कि परमेश्वर ऊसे प्रेम करेलन। अगर बात बिगड़े लागे, त ऊ मान लेला कि परमेश्वर ऊसे कम प्रेम करेलन या बिलकुल प्रेम नइखन करत। बाकिर जीवन के उतार-चढ़ाव परमेश्वर के प्रेम के निशानी नइखे। एह अध्याय में, जब हम "काहे" के सवाल के जवाब खोजब, त हम परमेश्वर के प्रेम आ हमनी के कठिनाई के बीच के संबंध के अध्ययन करब।

बिना शर्त प्रेम।

मनुष्य खातिर परमेश्वर के प्रेम बिना शर्त के बा, जेकर मतलब ई बा कि उहाँ के प्रेम पाए खातिर हमनी के कवनो शर्त पूरा करे के जरूरत नइखे, आ अइसन कुछो नइखे जे हम कर सकीं जवना से उहाँ के प्रेम हमसे छिन जाए। एह बात के समझे के शायद सबसे बढ़िया तरीका एगो सुगंधित फूल के बारे में सोचल बा। ऊ हर आदमी खातिर अपना सुगंध

फैलावेला। चाहे कवनो नीक आदमी ऊ फूल लगे आवे या कवनो खराब आदमी, दुनो एके जइसन सुगंध के अनुभव करेला। फूल एगो आदमी से अपना सुगंध रोक के दोसरा के ना दे सकेला, काहेकि सुगंधित होखल ओकर स्वभाव बा। परमेश्वर के प्रेमो एही तरह के बा।

परमेश्वर के प्रेम हमनी के भीतर कवनो बात के प्रतिक्रिया नइखे। ऊ रउआ से एह खातिर प्रेम नइखन करत कि रउआ नीक बानी। ऊ रउआ से अपना प्रेम एह खातिर ना रोकेलन कि रउआ खराब बानी। परमेश्वर रउआ से प्रेम करेलन काहेकि ऊ प्रेम हउवन। रउआ खातिर उहाँ के प्रेम उहाँ के स्वभाव के प्रकटीकरण बा। रउआ परमेश्वर के प्रेम एह खातिर ना पवनी कि रउआ कुछ सही कइनी, बलुक एह खातिर कि ऊ प्रेम हउवन (1 यूहन्ना अध्याय 4 पद 8)। प्रेम कइल उहाँ के स्वभाव बा। एहसे अलग ऊ कुछ अउरी करिए ना सकेलन।

प्रभु रउआ भीतर कमी होखे के कारण अपना प्रेम ना रोकेलन। ऊ रउआ के रउआ के कमियन समेत प्रेम करेलन। एह बात के कहे के हमार मतलब ई नइखे कि हम का करीलें, ओकरा से कवनो फर्क ना पड़े ला। हमनी के पवित्र जीवन जिए खातिर बुलावल गइल बा। बाकिर धर्मी जीवन जिए के उद्देश्य परमेश्वर के प्रेम आ आशीष कमावल नइखे। एकरा के कमावल ना जा सके। पवित्र जीवन परमेश्वर के महिमा करेला। हमनी के एह खातिर रचल गइल बानी कि हम परमेश्वर के बेटा-बेटी बनीं आ अपना आसपास के दुनिया के सामने उहाँ के पवित्रता के सही रूप में प्रतिबिंबित करके उहाँ के महिमा करीं।

“ताकि हम, जे पहिले मसीह में आशा रखनी—जे सबसे पहिले उहाँ पर विश्वास रखनी—ओकर महिमा के स्तुति खातिर जीवन जिईं” (इफिसियों अध्याय 1 पद 12)।

“परमेश्वर के आज्ञा मानीं काहेकि रउआ उहाँ के संतान बानी। अपना पुरान खराब चाल-चलन में फेर मत लवटीं; ओह बेरा रउआ बेहतर ना जानत रहीं। बाकिर अब रउआ के अपना हर काम में पवित्र होखे के चाहीं, जइसे परमेश्वर—जिन्होंने रउआ के अपना संतान बने खातिर चुनलन—पवित्र हउवन। काहेकि उहाँ खुद कहले बाड़न, ‘रउआ पवित्र बनीं काहेकि हम पवित्र बानी’” (1 पतरस अध्याय 1 पद 14 से 16)।

क्रूस आ परमेश्वर के प्रेम।

यीशु मसीह के क्रूस मनुष्य खातिर परमेश्वर के बिना शर्त प्रेम के सबसे बड़ा प्रदर्शन बा। ई हमनी के भलाई या हमनी के योग्यता से प्रेरित ना रहे, बलुक परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित रहे। क्रूस के द्वारा, परमेश्वर हमनी खातिर अपना प्रेम के ओह समय प्रकट कइलन जब हमनी अपना सबसे खराब हालत में रहीं। यीशु रउआ आ हमनी खातिर ओह बेरा मरलें जब हम पापी रहीं आ परमेश्वर के दुश्मन रहीं, उहाँ के खिलाफ पूरा विद्रोह में रहीं।

"बाकिर परमेश्वर हमनी खातिर अपना प्रेम के एह तरीका से प्रकट करेलन कि जब हम अबहियों पापिए रहीं, तब मसीह हमनी खातिर मरलें... जब हम परमेश्वर के दुश्मन रहीं, तब उहाँ के पुत्र के मृत्यु के द्वारा हमार उहाँ से मेल भइल" (रोमियों अध्याय 5 पद 8 से 10)।

"परमेश्वर अपना प्रेम हमनी के बीच एह तरीका से प्रकट कइलन: उहाँ अपना एकलौता पुत्र के संसार में भेजलन ताकि हम उहाँ के द्वारा जीवन पाईं। प्रेम ई नइखे कि हम परमेश्वर से प्रेम कइनी, बलुक ई कि उहाँ हमसे प्रेम कइलन आ अपना पुत्र के हमनी के पाप खातिर प्रायश्चित बलिदान के रूप में भेजलन" (1 यूहन्ना अध्याय 4 पद 9 से 10)।

"काहेकि परमेश्वर संसार से अइसन प्रेम रखलन कि उहाँ अपना एकलौता पुत्र दे देलन, ताकि जे कोई उहाँ पर विश्वास करे ऊ नाश ना होखे, बलुक अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना अध्याय 3 पद 16)।

परमेश्वर के प्रेम उहाँ के प्रेरित कइलस कि रउआ के सबसे बड़ी जरूरत—रउआ के पाप से उद्धार—के पूरा करस। अगर परमेश्वर रउआ के रउआ के सबसे खराब दिन में प्रेम कइलन, मतलब ओह हर दिन में जब रउआ प्रभु यीशु मसीह के सामने अपना घुटना ना टेकले रहीं, त अब जब रउआ उहाँ के बेटा या बेटी बानी, त ऊ रउआ से कम प्रेम काहे करिहें? उहाँ के प्रेम अचानक रउआ खातिर शर्त पर आधारित काहे हो जाई? अब उहाँ के प्रेम के अपना काम से कमावे के जरूरत काहे पड़ जाई?

मसीह के क्रूस ऊ साफ मापदंड बा, जेकरा द्वारा हम जानत बानी कि परमेश्वर हमसे प्रेम करेलन। जब हम एह बात के अनुभव ना कर पाईं कि परमेश्वर हमसे प्रेम करेलन, तब क्रूस हमनी के भावना पर विजय पावेला। जब हमार मन ई सवाल करेला कि परमेश्वर अइसन आदमी से कइसे प्रेम कर सकेलन जे हमनी जइसन बार-बार असफल होखेला, तब क्रूस ओह विचारन के जवाब देवेला। जब जीवन के कठिनाई अइसन लागेला जइसे ई चिल्ला के कहत होखे कि परमेश्वर हमनी के परवाह नइखन करत, तब क्रूस हमनी के परिस्थिति पर विजय पावेला। क्रूस हमनी के देखावेला कि परमेश्वर हमनी खातिर कतना आदर आ मूल्य रखेलन। एह ज्ञान के साथ, हम ओह सब चुनौती के शांत कर सकीलें जे परमेश्वर के प्रेम के निश्चितता पर सवाल उठावेला।

मूल्य आ महत्त्व।

हमनी में से बहुत लोग खातिर ई विश्वास कइल कठिन होला कि परमेश्वर हमसे प्रेम करेलन, काहेकि हम मूल्य आ महत्त्व के उपलब्धि, सफलता आ प्रतिभा से जोड़ देनी। एहसे, जब हम कमी में पड़ जानी या उम्मीद के मुताबिक खरा ना उतर पाईं, त हमके ई पक्का लागेला कि परमेश्वर के प्रेम हमनी खातिर कम हो गइल बा।

बाकिर असली मूल्य आ महत्त्व एह बात से तय होला कि कवनो आदमी कवनो चीज खातिर कतना कीमत चुकावे खातिर तैयार बा। एह उदाहरण पर ध्यान दीं: एगो मेहरारू अपना घर के बाहर पुरान सामान के बिक्री लगवले बिया, आ जवन सामान ऊ बाहर रखले बिया, ओह में एगो दीपको बा। ऊ ओकरा के कबो पसंद ना करत रहली। ऊ दीपक ओकरा के अइसन आदमी दिहले रहे जेकरा से ऊ प्रेम ना करत रहली। ओकर नजर में ऊ दीपक एगो बेकार चीज रहे, जेकरा के कूड़ा में फेंक देहल बेहतर रहे। बाकिर एही बीच दोसर मेहरारू उहाँ आवेली आ ओह दीपक के देखेली। ओकर नजर में ऊ दीपक सबसे सुंदर चीज बा जवन ऊ कबो देखले बिया। ऊ जल्दी-जल्दी अपना पर्स में खोजे लगेली, ई आस में कि शायद ओकरा लगे एह खजाना के खरीदे खातिर काफी पैसा होखे।

ओह दीपक के मूल्य के बारे में दुनो मेहरारू के विचार में अंतर काहे भइल? ई खुद दीपक में कवनो बात ना रहे, बलुक दुनो के भीतर कुछ रहे—ओह चीज खातिर उनकर मूल्यांकन। एही

तरह, परमेश्वर हमनी के अपना पुत्र के मृत्यु के लायक मूल्यवान समझलन। उहाँ यीशु मसीह के लहू के कीमत चुकावे खातिर तैयार रहलन काहेकि उहाँ हमसे प्रेम करेलन आ चाहेलन कि हम उहाँ के परिवार के सदस्य बनीं।

“का रउआ नइखी जानत कि रउआ के शरीर पवित्र आत्मा के मंदिर बा, जे रउआ में वास करेलन आ जे रउआ के परमेश्वर के ओर से मिलल बा? रउआ अपना ना बानी, काहेकि परमेश्वर रउआ के भारी कीमत देके मोल लिहलन। एहसे अपना शरीर के द्वारा परमेश्वर के आदर करीं” (1 कुरिन्थियों अध्याय 6 पद 19 से 20)।

“काहेकि रउआ जानत बानी कि परमेश्वर रउआ के छुड़ावे खातिर कीमत चुकवले... आ जवन कीमत उहाँ चुकवले, ऊ खाली सोना या चाँदी ना रहे। उहाँ रउआ खातिर मसीह के बहुमूल्य जीवन-रक्त के कीमत चुकवले, जे निष्पाप आ निष्कलंक परमेश्वर के मेमना हउवन” (1 पतरस अध्याय 1 पद 18 से 19)।

हम “काहे” के सवाल से कुछ हद तक एहसे जूझत बानी कि हम उम्मीद करीलें कि अगर हम समझ जाईं कि कवनो बात काहे भइल, त ऊ घटना के अर्थ मिल जाई आ हमके भरोसा हो जाई कि हमार जीवन के मूल्य बा। हमेशा ई बात याद रखीं कि रउआ के मूल्य आ महत्त्व एह सच्चाई से आवेला कि परमेश्वर रउआ से प्रेम करेलन, उहाँ रउआ के मोल लिहले बाड़न, आ उहाँ के बेटा या बेटी के रूप में रउआ उहाँ के अनन्त योजना के हिस्सा बानी।

पौलुस आ परमेश्वर के प्रेम।

अगर परेशान करे वाली आ पीड़ादायक परिस्थिति ई साबित करेला कि प्रभु के प्रेम हमनी खातिर कम हो गइल बा, त फेर परमेश्वर प्रेरित पौलुस के सहनिए ना कर सकत रहितन। जब हम पौलुस के जीवन के देखीलें, त पाईंले कि मसीही बने के समय से लेके अपना विश्वास खातिर शहीद होखे तक उहाँ बहुत भारी कठिनाई के सामना कइलन। उहाँ क्लेश, सताव, भूख, लगातार मौत के खतरा, शैतान के ओर से उत्पीड़न, आ ओह कलीसियन के चिंता के सामना कइलन जिनकर देखरेख उहाँ करत रहलन (2 कुरिन्थियों अध्याय 11 पद 23 से 29)।

फिरो, जब हम पौलुस के लिखल बातन के पढ़ीलें, त कहींयो अइसन संकेत ना मिलेला: "परमेश्वर हमरे साथ अइसन काहे करत बाड़न?" "हम का गलत कइनी?" "शायद परमेश्वर हमसे प्रेम नइखन करत।" पौलुस समझत रहलन कि जवन कठिनाई उहाँ सहलन, ऊ उहाँ खातिर परमेश्वर के प्रेम के मात्रा के अभिव्यक्ति ना रहे। उहाँ जानत रहलन कि परमेश्वर उहाँ के परवाह करेलन काहेकि उहाँ पहचानत रहलन कि मसीह के क्रूस परमेश्वर के प्रेम के सबसे बड़ा प्रदर्शन बा। ई खुद पौलुस के गवाही रहे।

"हम विश्वास से जीवन जी रहल बानी, परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करके, जे हमसे प्रेम कइलन आ अपना आप के हमरे खातिर दे देलन" (गलातियों अध्याय 2 पद 20)।

"के हमनी के मसीह के प्रेम से अलग कर सकेला? का क्लेश, पीड़ा या सताव? का कपड़ा आ भोजन के कमी, जीवन आ शरीर खातिर खतरा, या हथियार के धमकी? …ना, एह सब बातन में हम उहाँ के द्वारा, जे हमसे प्रेम सिद्ध कर चुकल बाड़न, प्रचंड विजय पावेलीं" (रोमियों अध्याय 8 पद 35 से 37)।

अबले एह किताब में उद्धृत कई गो पद पवित्रशास्त्र के ओह हिस्सा से लिहल गइल बा जे पौलुस लिखलन। ई ना खाली हमनी के "काहे" के सवाल के सही जवाब देवे में मदद करेला, बलुक ईहो समझ देला कि पौलुस अपना जीवन के अनेकों विपत्ति के कइसन नजरिया से देखत रहलन।

• पौलुस जानत रहलन कि परमेश्वर के उहाँ खातिर प्रेम उहाँ के व्यवहार के प्रतिक्रिया ना रहे। उहाँ समझत रहलन कि परमेश्वर उहाँ से ओह बखतियो प्रेम करत रहलन जब उहाँ पापी रहलन—परमेश्वर के दुश्मन, जे मसीहियन के सतावत रहलन (रोमियों अध्याय 5 पद 8 से 10 आ 1 तीमुथियुस अध्याय 1 पद 15 से 16)।

• पौलुस जानत रहलन कि उहाँ के परीक्षा परमेश्वर के ओर से ना आइल रहे। उहाँ समझत रहलन कि जीवन कठिन बा काहेकि आदम के पाप से धरती पर मृत्यु के शाप आ गइल (रोमियों अध्याय 5 पद 12; अध्याय 8 पद 19 से 21)।

• पौलुस जानत रहलन कि मनुष्य पापी स्वभाव के साथ जन्म लेला, आ शैतान ओह लोग के भीतर आ ओह लोग के माध्यम से काम करके जीवन में बहुत तरह के अव्यवस्था पैदा करेला (रोमियों अध्याय 5 पद 19; इफिसियों अध्याय 2 पद 1 से 3)। उहाँ जानत रहलन कि शैतान लोगन के परेशान करेला आ परमेश्वर के बारे में झूठ पेश करेला ताकि उहाँ पर हमनी के विश्वास कमजोर कर सके (2 कुरिन्थियों अध्यay 11 पद 3; अध्याय 12 पद 7; इफिसियों अध्याय 6 पद 11 से 12)।

पौलुस समझत रहलन कि ई सभ बात जीवन के संघर्ष पैदा करेला। बाकिर उहाँ ईहो जानत रहलन कि परमेश्वर एह विपत्तियन के उपयोग कर सकेलन आ अपना परिवार के एकजुट करत एह सभ के भलाई खातिर अपना योजना के पूरा करे में लगा सकेलन। ई उहे पौलुस हउवन जे लिखलन:

“आ हम जानत बानी कि जे लोग परमेश्वर से प्रेम करेला आ उहाँ के योजना के मुताबिक बुलावल गइल बा, ओह लोग खातिर परमेश्वर सब बातन के मिलाके भलाई पैदा करेलन। काहेकि परमेश्वर अपना लोगन के पहिले से जानत रहलन, आ उहाँ ओह लोग के अपना पुत्र जइसन बने खातिर चुन लिहलन, ताकि उहाँ के पुत्र बहुत भाई-बहिनन में पहिलौठा ठहरें। आ जे लोग के उहाँ चुनलन, ओह लोग के उहाँ अपना लगे बोलवलन। आ ओह लोग के अपना साथे धर्मी ठहरवलन, आ ओह लोग के अपना महिमा के वचन देलन” (रोमियों अध्याय 8 पद 28 से 30)।

पौलुस ईहो जानत रहलन कि मनुष्य खातिर परमेश्वर के योजना आ ओह योजना के पूरा करे खातिर उहाँ जेतना भारी कीमत चुकवलन, ओकर रोशनी में प्रभु उहाँ के पक्ष में बाड़न। अगर परमेश्वर उहाँ के पक्ष में बाड़न, त कुछो स्थायी रूप से उहाँ के खिलाफ ना हो सके।

“अइसन अद्भुत बातन के बारे में हम का कहीं? अगर परमेश्वर हमनी के पक्ष में बाड़न, त के हमनी के खिलाफ हो सकेला? जे अपना निज पुत्रो के ना बचवलन, बलुक हम सभ खातिर उहाँ

के दे देलन, त का ऊ, जे हमनी के मसीह देलन, उहाँ के साथे हमनी के अउर सब कुछो ना दीहें?" (रोमियों अध्याय 8 पद 31 से 32)।

पौलुस बड़ा तस्वीर के समझत रहलन। उहाँ जानत रहलन कि परमेश्वर अपना प्रेम में उहाँ के सबसे बड़ी जरूरत—पाप से उद्धार—के पूरा कर देलन, आ बाकी सभ बातन के देखभालो करिहें। एह ज्ञान से पौलुस के बहुत कठिन जीवन के बोझ हल्का हो गइल। उहाँ लिखलन:

"काहेकि हमनी के वर्तमान परेशानी बहुत छोट बा आ बहुत देर तक रहे वाली नइखे। फिरो ई हमनी खातिर अइसन असीम महान महिमा पैदा करत बा जे हमेशा बनी रही! एहसे हम ओह परेशानी पर ध्यान ना लगावत बानी जे हम अभी देख सकत बानी; बलुक हम ओह बात पर नजर रखत बानी जे अबहीं तक ना देखनी। काहेकि जवन परेशानी हम देखत बानी, ऊ जल्दी खतम हो जाई, बाकिर आवे वाला आनन्द हमेशा बनी रही" (2 कुरिन्थियों अध्याय 4 पद 17 से 18)।

एह महान प्रेरित समझ गइल रहलन कि एह समय परमेश्वर के मुख्य उद्देश्य जीवन के परेशानी खत्म कइल ना ह। बलुक, परमेश्वर के उद्देश्य सभ मनुष्य के उनकर पाप से उद्धार तक ले आइल आ मसीह में विश्वास के द्वारा उहाँ के बेटा बनावल ह। एह संदर्भ में कि परमेश्वर कइसे मनुष्य के पापपूर्ण चुनावन के अपना अंतिम उद्देश्य के सेवा में लगावेलन, पौलुस घोषणा कइलन:

"ओह, हमार परमेश्वर कतना अद्भुत बाड़न! उहाँ के धन-संपत्ति, बुद्धि आ ज्ञान कतना महान बा! हमनी खातिर उहाँ के फैसला आ उहाँ के काम करे के तरीका के पूरा तरह समझ पावल कतना असंभव बा!" (रोमियों अध्याय 11 पद 33)।

अनन्तकाल में, जब हम पूरा तस्वीर देखब आ हमनी लगे सभ तथ्य होई, तब हमहूँ परमेश्वर के बुद्धि आ उद्देश्य पर चकित रह जइब। हम देखब कि उहाँ पाप से शापित धरती पर जीवन के सच्चाई के कइसन उपयोग कइलन आ अपना परिवार के पाए के अपना योजना के पूरा कइलन।

परमेश्वर हमसे एह खातिर प्रेम नइखन करत कि हम नीक बानी, बलुक एह खातिर कि उहाँ प्रेम हउवन। परमेश्वर के हमनी खातिर उहे प्रेम बा जवन उहाँ के यीशु, उहाँ के सिद्ध पुत्र, खातिर बा। ओह रात, जब यीशु क्रूस पर जाए वाला रहलन, उहाँ अपना पिता—जे हमनी केहूँ पिता हउवन—से प्रार्थना कइलन, "ताकि संसार जान ले कि तू हमरा के भेजले बाड़ू आ ई समझे कि तू ओह लोग से ओतने प्रेम करेलू जतना तू हमसे करेलू" (यूहन्ना अध्याय 17 पद 23)।

का रउआ ई जानल चाहत बानी कि परमेश्वर रउआ से प्रेम करेलन कि ना? अपना परिस्थिति के ओर मत देखीं। क्रूस के ओर देखीं, जहाँ सर्वशक्तिमान परमेश्वर रउआ खातिर अपना महान आ अटल प्रेम के प्रकट कइलन। तब, एह जागरूकता के साथ कि परमेश्वर रउआ के पक्ष में बाड़न, रउआ एह पतित संसार के कठिनाई के सामना कर सकत बानी। रउआ एह बात के भरोसा रख सकत बानी कि परमेश्वर रउआ के परेशानी के अपना अनन्त उद्देश्य के पूरा करे में लगइहें आ ओह सभ में से महान भलाई पैदा करिहें।

परमेश्वर अपना बेटा-बेटी सभ से प्रेम करेलन

मसीह के क्रूस के द्वारा परमेश्वर हमनी खातिर अपना बिना शर्त प्रेम के साफ-साफ प्रकट कइलन। बाकिर यीशु अपना क्रूस पर चढ़ाए जाए से पहिले जवन बहुत बात कहलन आ कइलन, ऊहो मानवजाति खातिर परमेश्वर के आदर आ प्रेम के बारे में समझ देला। उहाँ के काम आ वचन हमनी के ई समझे में मदद करेला कि परमेश्वर के प्रेम आ चुनौतीपूर्ण परिस्थिति के बीच का संबंध बा। आईं, कुछ उदाहरण पर नजर डालीं।

पापियन के साथ भोजन।

जब यीशु धरती पर रहलन, त ऊ अक्सर चुंगी लेवे वाला लोग (यहूदी कर वसूले वाला) आ पापियन के साथ भोजन करत रहलन। ओह समय के संस्कृति में कवनो आदमी के साथ भोजन करे के मतलब खाली साथे बइठ के खाना खाए से कहीं जादे रहे। ई ओह आदमी के साथ संबंध में जाए के प्रतीक रहे। पापियन आ चुंगी लेवे वाला लोग के साथ भोजन करके यीशु ई देखवलन कि ई लोग उहाँ खातिर आ उहाँ के स्वर्गीय पिता खातिर महत्त्व रखेला। ओह समय के धार्मिक अगुवा लोग खातिर यीशु के ई व्यवहार चौंकावे वाला रहे, आ ऊ लोग नियमित रूप से पापियन के साथ उहाँ के भोजन करे खातिर उहाँ के आलोचना करत रहे।

“बाकिर फरीसी आ व्यवस्था के शिक्षक कुड़कुड़ात कहे लगलन, ‘ई आदमी पापियन के स्वागत करेला आ ओह लोग के साथ भोजन करेला’” (लूका अध्याय 15 पद 2)।

अभी जवन उद्धरण दिहल गइल बा, ओही मौका पर यीशु फरीसियन के आलोचना के जवाब कई गो दृष्टान्त सुनाके दिहलन (लूका अध्याय 15 पद 4 से 10)। पहिला दृष्टान्त में, एगो आदमी के एक भेड़ खो गइल रहे, आ दोसरा में, एगो मेहरारू के एक सिक्का खो गइल रहे। दुनो कहानी में, मालिक लोग अपना खोइल चीज के मिले तक मेहनत से खोजत रहल, आ जब ऊ लोग ओकरा के फेर से पा गइल, त बहुत आनन्दित भइल। जब यीशु ई कहत रहलन, त उहाँ अपना ओह भोजन-साथियन—जिनकरा के लोग शक के नजर से देखत रहे—ओह लोग के तुलना ओह खोइल चीज से कइलन। उहाँ साफ कर दिहलन कि खोइल चीज—मतलब ऊ लोग जिनकरा साथे उहाँ भोजन करत रहलन—खो जाए पर अपना मूल्य ना खो देला। रउआ ओह लोग के एहसे ना छोड़ देनी कि ऊ खो गइल बा। रउआ तबले खोजत रहनी जबले ऊ मिल ना जाए। आ फेर आनन्द मनावनी।

“हम रउआ से कहत बानी कि स्वर्ग में भी अइसने आनन्द होला—एगो अइसन पापी खातिर जेकर हृदय बदल जाला, ओह निन्यानवे धर्मियन से जादे जिनका मन फिरावे के जरूरत नइखे” (लूका अध्याय 15 पद 7)।

एह घटना के कुछ समय बाद, आलोचक लोग फेर से यीशु के एगो चुंगी लेवे वाला के घर भोजन करे खातिर दोषी ठहरवलस। एह बेर यीशु साफ-साफ घोषणा कइलन कि ऊ “जे खो गइल बा ओकरा के खोजे आ ओकर उद्धार करे” आइल बाड़न (लूका अध्याय 19 पद 10)।

ध्यान दीं कि फरीसियन के आलोचना के जवाब में दुनो बेर यीशु पापियन के “खोइल” कहलन। काहे? काहेकि अपना विद्रोही हालत में मनुष्य ओह उद्देश्य से भटक गइल बा, जवना खातिर ओकर रचना भइल रहे: परमेश्वर के पुत्रत्व आ उहाँ के साथ संबंध खातिर। जब परमेश्वर आदम के बनवलन, त उहाँ एगो बेटा बनवलन आ ओकरा में बेटा लोग के पूरा वंश बनवलन (लूका अध्याय 3 पद 38; उत्पत्ति अध्याय 5 पद 1 से 2)। जब आदम परमेश्वर के आज्ञा के उल्लंघन कइलस, त ऊ परमेश्वर से अलग स्वतंत्रता के चुनाव कइलस। अइसन

करके, आदम अपना के आ पूरा मानवजाति के, जवन ओकरा में शामिल रहे, पाप आ मृत्यु में ले गइल। प्रभु अपना परिवार खो दिहलन।

यीशु धरती पर खोइल मानवजाति के खोजे आ ओकर उद्धार करे खातिर आइल रहलन। उहाँ क्रूस पर एह खातिर गइलन कि पाप के कीमत चुका दीं आ रास्ता खोल दीं ताकि परमेश्वर ऊ कर सकस जे उहाँ के हमेशा से उद्देश्य रहल—पापी मरद आ मेहरारू के पवित्र बेटा-बेटी में बदलल आ उहाँ के साथ प्रेम से भरल संबंध में रखल। जब कवनो खोइल पापी मन फिरावेला, त स्वर्ग आनन्दित होला काहेकि मसीह में विश्वास के द्वारा ऊ अपना रचल उद्देश्य में फेर से स्थापित हो जाला।

जब खोइल बेटा घर लवटेला।

जवन दिन यीशु खोइल भेड़ आ सिक्का के दृष्टान्त सुनवलन, ओही दिन उहाँ एगो तिसरकी कहानी भी सुनवलन, एगो खोइल बेटा के बारे में। पहिला आ दोसरा दृष्टान्त में परमेश्वर के खोइल मनुष्यन के खोजे के मिशन पर जोर दिहल गइल रहे। तिसरकी कहानी में ध्यान एह बात पर केंद्रित भइल कि जब कवनो खोइल मनुष्य मिल जाला, त का होला। ई कहानी आम तौर पर उड़ाऊ बेटा के दृष्टान्त के नाम से जानल जाला (लूका अध्याय 15 पद 11 से 32)।

यीशु के मुताबिक, एगो धनवान आदमी के दू बेटा रहलन। छोट बेटा अपना विरासत के माँग कइलस, आ ओकरा मिलला के कुछे समय बाद घर छोड़ दिहलस। ऊ एगो दूर देश चल गइल, जहाँ ऊ अपना सगरी धन उच्छृंखल आ पाप से भरल जीवन में उड़ा दिहलस। जब ओह देश में भयंकर अकाल पड़ल, त ऊ बेटा अइसन हालत में पहुँच गइल कि सूअरन के झुंड के साथ सूअरबाड़ा में पड़ल रहे, आ ओह सूअरन लगे ओकरा से जादे खाए के रहे। ओही सूअरबाड़ा में ओह भटकल आदमी के हृदय बदल गइल।

“जब ऊ होश में आइल, त कहलस, ‘हमार पिता के कतना मजदूरन लगे जरूरत से जादे भोजन बा, आ हम इहाँ भूख से मरत बानी! हम उठके अपना पिता लगे जइब आ उहाँ से कहीं: पिता, हम स्वर्ग के खिलाफ आ रउआ के खिलाफ पाप कइनी। अब हम रउआ के बेटा कहल जाए लायक नइखी रहल; हमके अपना मजदूरन में से एगो जइसन रख लीं।’ तब ऊ उठके अपना पिता लगे चल दिहलस” (लूका अध्याय 15 पद 17 से 20)।

“बाकिर जब ऊ अबहियो बहुत दूर रहे, त ओकर पिता ओकरा के देखलन आ ओकरा पर तरस खइलन; ऊ दौड़त अपना बेटा लगे गइलन, ओकरा के गले लगवलन आ चूमलन। बेटा उहाँ से कहलस, ‘पिता, हम स्वर्ग के खिलाफ आ रउआ के खिलाफ पाप कइनी। अब हम रउआ के बेटा कहल जाए लायक नइखी रहल।’ बाकिर पिता अपना दासन से कहलन, ‘जल्दी! सबसे बढ़िया कपड़ा लियाव आ एकरा के पहिरा दऽ। एकर हाथ में अंगूठी पहिरा द आ एकर गोड़ में जूता पहिरा दऽ। पालतू बछड़ा लियाव आ ओकरा के मारऽ। आओ, हम भोज करीं आ आनन्द मनाईं। काहेकि हमार ई बेटा मरल रहे आ फेर जिन्दा हो गइल बा; ई खो गइल रहे आ अब मिल गइल बा।’ तब ऊ सभ आनन्द मनावे लगल” (लूका अध्याय 15 पद 20 से 24)।

ध्यान दीं कि पिता अपना लवट के आइल बेटा के साथ कइसन व्यवहार कइलन। उहाँ अपना बेटा के तबे देख लिहलन जब ऊ अबहियो घर से कुछ दूरी पर रहे। पिता ओकर राह देखत रहलन, आ जब उहाँ के नजर ओह लड़िका पर पड़ल, त उहाँ के हृदय करुणा से भर गइल। उहाँ के हृदय अपना बेटा खातिर तड़प उठल। ऊ ओकरा से मिले खातिर दौड़ पड़लन, एहसे साफ भइल कि उहाँ अपना बेटा के साथ फेर से संबंध जोड़े खातिर कतना उत्सुक रहलन। फेर उहाँ ओकरा के चूमलन। मूल भाषा में एह भाव के मतलब बा कि पिता अपना बेटा के बार-बार चूमत रहलन, आ ओकरा खातिर गहर कोमल प्रेम आ स्नेह प्रकट करत रहलन। बेटा के निंदनीय व्यवहार से ओकर पिता के प्रेम ओकरा से छिनल ना रहे।

ध्यान रखीं कि ई उहे गंदा, बदबूदार बेटा बा—जे अभी-अभी सूअरबाड़ा से आइल बा—जे अपना पिता के धन वेश्यन आ उच्छृंखल जीवन में बरबाद कर दिहले रहे। ऊ ठीक उहे तरह के आदमी रहे, जिनका साथे भोजन करे खातिर फरीसी लोग यीशु के निंदा करत रहे।

उड़ाऊ बेटा अपना पाप के बारे में बात करे चाहत रहे। बाकिर पिता ओकर बहुत अपराधन के कवनो जिक्र ना कइलन। उहाँ जानत रहलन कि उहाँ के बेटा अपना कइल काम पर पश्चाताप करत बा। जवन फरीसी लोग यीशु के ई कहानी सुनत रहे, ऊ लोग पिता के एह चुप्पी से डेरा गइल होई। ऊ लोग तबले माफ ना करत रहे जबले बदला आ क्षतिपूर्ति ना हो जाए।

फेर पिता अपना दासन के आदेश दिहलन कि ऊ लोग उहाँ के बेटा के कपड़ा, अंगूठी आ जूता दे। जवन लोग यीशु के ई दृष्टान्त सुनत रहे, ऊ भविष्यवक्ता जकर्याह के लिखल बात से परिचित रहे। उहाँ एगो दर्शन के वर्णन कइले बाड़न जवन परमेश्वर उहाँ के देखवले रहलन, जहाँ कपड़ा बदलल जाए के मतलब पाप दूर कइल जाए रहे (जकर्याह अध्याय 3 पद 4)। यीशु के सुनत लोग ईहो जानत रहे कि अंगूठी मरद लोग के सम्मान आ प्रतिष्ठा के चिन्ह के रूप में दिहल जाला। उहाँ के सुनत लोग ई बातो समझत रहे कि जूता आजादी के प्रतीक रहे। जब युद्ध के बंदियन के आजाद कइल जाला, त उनकर जूता, जवन कैद के समय ले लिहल गइल रहे, फेर से लौटा दिहल जाला।

अपना शब्दन के द्वारा, यीशु एगो पापी बेटा के चित्र खींचलन, जे अपना पिता के प्रेम के कारण पूरा तरह से फेर से अपना बेटा होखे के स्थिति में बहाल हो रहल बा।

याद रखीं कि यीशु ई दृष्टान्त काहे सुनवलन—ओह फरीसियन के जवाब देवे खातिर, जे पापियन के साथ उहाँ के मेलजोल के आलोचना करत रहलन। यीशु के संदेश एकदम साफ रहे। हर चुंगी लेवे वाला आ हर पापी, जिनका साथे यीशु धरती पर अपना समय में संबंध रखलन, प्रभु खातिर मूल्यवान रहलन। यीशु, जे परमेश्वर हउवन आ हमनी के परमेश्वर के प्रकट करेलन, ओह में से हर एक के खोजे आ उद्धार करे खातिर आइल रहलन। हालाँकि ऊ लोग पाप के सूअरबाड़ा में खो गइल रहल, फिरो ई लोग परमेश्वर के बनावल आ उहाँ के प्रेम पावल रहल। ओह लोग में ई सामर्थ्य रहे कि क्रूस के शक्ति के द्वारा निष्कलंक बेटा-बेटी में बदलल जा सके।

हम ई ना कहत बानी कि सभे लोग, चाहे ओकर व्यवहार या विश्वास कुछो होखे, परमेश्वर के संतान ह। सभे लोग परमेश्वर के सृष्टि बा आ उहाँ के बेटा बने के संभावना रखेला, बाकिर सभे पाप के दोषी बा। अपना ओह संभावना के सच्चाई में बदले खातिर, मरद आ मेहरारू के पाप से मन फिराके आ मसीह आ उहाँ के क्रूस के बलिदान पर विश्वास करके पिता के घर लवटे के पड़ी। नइखे त, ऊ लोग अपना रचल उद्देश्य से हमेशा खातिर खोइल रह जाई आ परमेश्वर से अनन्तकाल खातिर अलग हो जाई।

पाप आ विद्रोह के सूअरबाड़ा तक हमनी के यात्रा हमसे परमेश्वर के प्रेम ना छीनले बा। धरती पर अपना सेवा के दौरान आ क्रूस पर यीशु के शब्द आ काम ई साफ करेला: हालाँकि रउआ सूअरबाड़ा में बानी, फिरो हम रउआ से प्रेम करीलें। अगर रउआ हम पर विश्वास करके

पिता के घर लवट आइब, त हम रउआ के शुद्ध कर देब। हम रउआ के अपना धार्मिकता के वस्त्र पहिरा देब। हम रउआ के फेर से ओह बेटापन, सम्मान आ गरिमा के स्थिति में बहाल कर देब, जवना खातिर हम रउआ के बनवनी।

हम घर लवट आइल बानी। फिरो हमके समस्या काहे बा?

शायद रउआ ई सोचत होखब: "हम सूअरबाड़ा छोड़ देनी। हम मसीह पर विश्वास करके पिता के घर लवट आ गइनी। त फेर हमके ई सभ परेशानी काहे हो रहल बा?" काहेकि पाप से शापित धरती पर जीवन अइसने बा। हालाँकि हमनी के हृदय सूअरबाड़ा छोड़ चुकल बा, फिरो हम अबहियों एगो पतित संसार में रहत बानी आ अइसन माहौल से पैदा होखे वाली सभ समस्या के सामना करत बानी। जब यीशु फेर से लवटीहें, त परमेश्वर आखिरकार संसार के पाप के हर निशान आ ओकरा से पैदा होखे वाली सड़न से शुद्ध कर दीहें। बाकिर एह समय ई उहाँ के मुख्य ध्यान नइखे। एह वर्तमान युग में परमेश्वर के पहिला उद्देश्य मनुष्यन के हृदय के फेर से अपना अधीनता आ निर्भरता में लियावल बा, ना कि सूअरबाड़ा के जीवन के बेहतर बनावल।

ध्यान दीं कि उड़ाऊ बेटा के पिता ओकर दूर रहला के समय सूअरबाड़ा के साफ ना कइलन आ ना ओकर कष्ट दूर कइलन। एकर मतलब ई ना रहे कि ऊ अपना बेटा से प्रेम ना करत रहलन। बाकिर पिता के लक्ष्य ई ना रहे कि उहाँ के बेटा उहाँ से अलग होके एगो अद्भुत आ चिंता से मुक्त जीवन जीए। उहाँ के इच्छा ई रहे कि उहाँ के बेटा घर वापस आ जाव।

साफ बा कि ओकर विद्रोही कामन के नतीजा ओह बेटा के होश में ले आइल। यीशु कहलन कि उड़ाऊ बेटा सूअरबाड़ा में होश में आइल। अगर ओकर पिता ओह जवान के अपना असली हालत समझे से पहिले ही सूअरबाड़ा के नया बना देले रहितन, त संभव बा कि ओकर सोच कबो ना बदलत। ओह गंदगी के साफ कर देवे से ओकर विद्रोही पाप के नतीजा छिप गइल रहित।

परमेश्वर अभी एह संसार के जीवन के कीचड़ आ गंदगी के साफ करके एकरा के बेहतर नइखन बना रहलन, कुछ हद तक एहसे कि उहाँ चाहेलन कि मानवजाति पाप के विनाशकारी नतीजा देखो। हालाँकि प्रभु लोगन के पीड़ा में कवनो आनन्द नइखन लेत, फिरो उहाँ के आशा ई बा कि मरद आ मेहरारू जाग जास आ अंतिम विनाश के अनुभव करे से पहिले उहाँ के ओर लवट आवस—मतलब नरक में परमेश्वर से अनन्तकाल के अलगाव।

एह बिंदु पर, रउआ ई पूछ सकत बानी: “हम समझत बानी कि एह जीवन के उथल-पुथल के पीछे परमेश्वर नइखन आ ऊ यीशु के फेर से आवे तक एकर अंतो ना करे वाला बाड़न। बाकिर का एकर मतलब ई बा कि अभी हमार खातिर उहाँ लगे कवनो मदद नइखे?”

बिलकुल अइसन नइखे।

बाकिर एह पतित संसार में पिता के घर के सामर्थ्य आ प्रबंध तक पहुँच पाए खातिर, रउआ के ई समझे के पड़ी कि सूअरबाड़ा जइसन परिस्थिति के बीच परमेश्वर का करेलन। तब रउआ उहाँ के साथ मिलके चल सकब जब उहाँ काम करत होइहें। अगिला कुछ अध्यायन में, जब हम “का” के सवाल के जवाब देब, त हम चर्चा करब कि उहाँ कइसन काम करेलन।

का के सवाल

लोग खाली "ई काहे भइल?" के सवाल से ना जूझेला, बलुक ऊ "परमेश्वर का करत बाड़न?" एह सवाल से भी जूझेला। दुख के बात बा कि जीवन के चुनौती के बीच परमेश्वर कइसे काम करेलन, एह बारे में बहुत गलत धारणा बा। एह भाग में, हम "का" के सवाल के गलत जवाबन के पहचानब आ फेर बाइबल से सही जवाब पेश करब।

गलत जवाब: परमेश्वर परिस्थिति के द्वारा बोलत बाड़न।

बहुत लोग मानेला कि परमेश्वर हमनी के भौतिक परिस्थिति के द्वारा जानकारी देलन। एहसे ऊ लोग अपना कठिन परिस्थिति के देखेला आ जवन कुछ नजर आवेला, ओकर आधार पर निष्कर्ष निकालेला। बाकिर रउआ अपना परिस्थिति के देखकर "काहे" या "का" के सवाल के जवाब ना दे सकत बानी।

• काहेकि कठिन परिस्थिति परमेश्वर के ओर से व्यवस्थित नइखे कइल जात, एहसे हम निश्चित हो सकत बानी कि उहाँ ओकरा के द्वारा हमनी के कवनो संदेश नइखन भेजत।

• परमेश्वर हमसे कहलन कि "हम विश्वास से चलीं, ना कि देखल चीज या बाहरी रूप से" (2 कुरिन्थियों अध्याय 5 पद 7)। अगर परमेश्वर हमनी के परिस्थिति में दिखे वाली बातन के

द्वारा जानकारी आ दिशा देवे के कोशिश करत रहितन, त उहाँ अपना ही दिहल निर्देश के विरोध करत रहितन।

• परमेश्वर हमसे अपना लिखल वचन के द्वारा बोलत बाड़न। उहाँ के वचन हमार गोड़ खातिर दीपक आ हमार राह खातिर जोति बा (भजन संहिता अध्याय 119 पद 105)। "हे हमार बेटा, अपना पिता के [परमेश्वर के ओर से दिहल] आज्ञा के मान, आ अपनी माई [जे परमेश्वर के शिक्षा दिहले बिया] के व्यवस्था के मत छोड़... जब तू चली, [तोहरा माता-पिता के द्वारा सिखावल परमेश्वर के वचन] तोहरा के राह देखाई; जब तू सूती, ऊ तोहरा के बचाई; आ जब तू जागी, ऊ तोहरा से बात करी। काहेकि आज्ञा दीपक ह, आ व्यवस्था के पूरा शिक्षा जोति ह" (नीतिवचन अध्याय 6 पद 20 से 23)।

बाइबल में कई अइसन उदाहरण मिलेला जहाँ लोग अपना परिस्थिति के देखकर "का" के सवाल के जवाब देवे के कोशिश कइलस। हर मामला में ऊ लोग गलत निष्कर्ष निकाललस। अइसने एगो घटना ओह बेरा भइल जब प्रेरित पौलुस के पानी के बेड़ा टूट गइल आ ऊ आ उहाँ के साथी तैर के सुरक्षित रूप से एगो नजदीकी टापू पर पहुँचके आपन जान बचवलन।

"जब हम सुरक्षित किनारा पर पहुँच गइल रहीं, तब हमनी के पता चलल कि हम माल्टा टापू पर बानी। उहाँ के लोग हमनी के साथ बहुत कृपा कइलस। ठंड आ बरखा होत रहे, एहसे ऊ लोग किनारा पर आग जरवलस ताकि हमनी के स्वागत कर सके आ गरमाहट दे सके। जब पौलुस लकड़ी के एगो गट्ठर जुटाके आग पर रखत रहलन, त गरमी से निकलके एगो जहरीला साँप उहाँ के हाथ से लिपट गइल। टापू के लोग ओकरा के लटकल देखके आपस में कहे लगल, 'निश्चित ई कवनो हत्यारा बा! हालाँकि ई समुंदर से बच निकलल, बाकिर न्याय एकरा के जिन्दा ना रहे दी।' बाकिर पौलुस साँप के झटकके आग में फेंक दिहलन आ उहाँ के कवनो नुकसान ना भइल। लोग इंतजार करत रहल कि उहाँ सूज जइहें या अचानक गिरके मर जइहें। बाकिर जब ऊ लोग बहुत देर तक देखलस आ बुझल कि उहाँ के कवनो हानि ना भइल, त ऊ लोग अपना विचार बदल दिहलस आ तय कइलस कि ई कवनो देवता बाड़न" (प्रेरितन के काम अध्याय 28 पद 1 से 6)।

एह टापू के लोग पौलुस के समुंदर में डूबे से बचत देखलस, बाकिर फेर एगो घातक साँप के उहाँ के काटत भी देखलस। ऊ लोग तर्क लगवलस कि ई एगो हत्यारा बा जे पानी के बेड़ा

टूटला से मौत से बच निकलल, बाकिर अब साँप के काटला से न्याय एकरा के पकड़ लिहलस। बाकिर जब पौलुस पर साँप के जहर के कवनो असर ना भइल, त उहे लोग तय कइलस कि ऊ कवनो देवता बाड़न। कुछे मिनट में, एह लोग पौलुस आ उहाँ के साथ भइल घटना के बारे में, जवन ऊ देखलस, ओकर आधार पर दू बिलकुल अलग निष्कर्ष निकाल लिहलस—आ दुनो निष्कर्ष गलत रहल।

कुछ लोग एही तरीका से अपना जीवन जीयेला। ऊ मान लेला कि उनकर परिस्थिति में होखे वाला हर बदलाव परमेश्वर के उनकरा से बात करे के तरीका ह। एह उदाहरण पर ध्यान दीं: कवनो प्रिय आदमी अस्पताल के बिछौना पर पड़ल बा। ओकर रक्तचाप बहुत जादे बढ़ जाला आ परिवार पूछेला: "परमेश्वर का कहत बाड़न?" "परमेश्वर का करत बाड़न?" फेर ओह आदमी के रक्तचाप बहुत नीचे गिर जाला आ परिवार कहेला: "अब प्रभु हमनी के का देखावे के कोशिश करत बाड़न?" परमेश्वर एह अस्पताल के दृश्य के द्वारा कुछ प्रकट करे के कोशिश नइखन करत। उनकर प्रिय आदमी के अस्थिर रक्तचाप प्रभु के कवनो संदेश नइखे। ई पाप से शापित संसार में जीवन के परिणाम बा।

एगो अउरी उदाहरण पर ध्यान दीं। जब यहोशू इब्रानी लोग के कनान में ले गइलन, त परमेश्वर उहाँ लोग के आज्ञा दिहलन कि ऊ ओह इलाका के कवनो जाति से कवनो संधि ना करस। जब इस्राएल ओह भूमि के जीते आ बसावे लागल, त एगो खास समूह, गिबोनी लोग, अपना के बचावे खातिर छल करे के फैसला कइलस। हालाँकि ऊ लोग लगे ही रहत रहे, ऊ लोग यहोशू लगे अइसन दूत भेजलस जे अइसन कपड़ा आ सामान पहिरले रहे जइसे बहुत लंबा यात्रा करके आइल होखे।

"ऊ लोग... अपना गदहन पर पुरान काठी के थैला आ फाटल-पुरान मदिरा के मशक लादले रहल। ऊ लोग चिथड़ा कपड़ा आ घिसल-पिटल, पैबंद लगल जूता पहिरले रहल। आ अपना भोजन खातिर सूखल आ फफूँदी लागल रोटी साथे लेले रहल। जब ऊ लोग गिलगाल में इस्राएल के डेरे पर पहुँचलक, त यहोशू आ इस्राएल के लोग से कहलस, 'हम दूर देश से आइल बानी ताकि रउआ से शांति के संधि कर सकीं'" (यहोशू अध्याय 9 पद 4 से 6)।

इस्राएल के अगुवा लोग ऊ लोग के देखावल भौतिक सबूत के जाँच कइलस, उनकर कहानी पर भरोसा कर लिहलस, आ गिबोनी लोग के साथ एगो बाध्यकारी समझौता कर लिहलस—ठीक उहे काम जवन परमेश्वर उहाँ लोग के ना करे के कहलन। ध्यान दीं कि अगुवा लोग अपना

सामने देखाए वाली बातन के आधार पर परिस्थिति के आँकलन कइलस, परमेश्वर के वचन खोजे के बदले: "एहसे इस्राएल के अगुवा लोग उनकर रोटी देखलस, बाकिर प्रभु से सलाह ना लिहलस" (यहोशू अध्याय 9 पद 14)।

एह घटना में हम फेर देखत बानी कि भौतिक सबूत गलत जानकारी दे सकेला आ परमेश्वर के अपना लोग के भी गुमराह कर सकेला।

रउआ अपना परिस्थिति के आँकलन एह आधार पर ना कर सकत बानी कि रउआ का देखत आ का महसूस करत बानी। बाइबल ही परमेश्वर आ उहाँ के काम करे के तरीका के बारे में हमनी लगे पूरा भरोसेमंद जानकारी के एकमात्र स्रोत बा। रउआ के अपना परिस्थिति के फैसला एह आधार पर करे के चाहीं कि परमेश्वर अपना लिखल वचन में का कहत बाड़न। आगे के अध्यायन में हम कुछ अइसन उदाहरण देखब जवन ई प्रकट करी कि जीवन के कठिनाई में परमेश्वर कइसे काम करेलन। ई हमनी के अपना परिस्थिति के सही आँकलन करे में मदद करी।

गलत जवाब: परिस्थिति हमनी के परमेश्वर के इच्छा देखावेला।

कुछ अउरी लोग मानेला कि परमेश्वर अपना इच्छा के भौतिक परिस्थिति के द्वारा प्रकट करेलन। ऊ लोग पक्का मानेला कि अगर कवनो घटना भइल बा, त ऊ जरूर परमेश्वर के इच्छा होई। बाकिर एह जीवन में बहुत अइसन बात होला जवन परमेश्वर के इच्छा नइखे। कुछ बात एहसे होला काहेकि शैतान मनुष्यन से चोरे, मारे आ नाश करे के कोशिश करत बा। कुछ एहसे होला काहेकि मनुष्य परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह करेला आ घिनौना काम करेला। आ कुछ कठिनाई एह पाप से शापित धरती में चल रहल अनियमित प्रक्रिया के नतीजा ह। (अगर जरूरत होखे, त अध्याय 1 फेर से देखीं।)

कई साल पहिले, हम एगो घर में होखे वाला बाइबल अध्ययन सभा में शामिल भइनी। एगो साँझ दू जवान लड़की आवे के फैसला कइली, बाकिर ऊ लोग कबो पहुँचले ना। बाद में ऊ लोग कहलस कि ऊ घर खोज ना पवलस, आ उनकर मन में एकर मतलब ई रहल कि ओह

अध्ययन में शामिल होखल परमेश्वर के इच्छा ना रहे। बाकिर उनकर घर ना खोज पावल प्रभु के इच्छा के अभिव्यक्ति ना रहे। या त ऊ दिशा-निर्देशन के पालन करे में कुशल ना रहली, या रास्ता में गलत मोड़ ले लिहली।

ई नीक बात रहे कि उनेसिफुरुस नाँव के आदमी अपना भौतिक परिस्थिति के इस्तेमाल परमेश्वर के इच्छा तय करे खातिर ना कइलस। अगर ऊ अइसन कइले रहित, त रोम में कैद प्रेरित पौलुस खातिर बड़ा आशीष ना बन पावत।

"प्रभु उनेसिफुरुस आ ओकर पूरा परिवार पर खास दया करसु, काहेकि ऊ बार-बार हमसे मिलके हमार हिम्मत बढ़वले। ऊ एह बात से कबो लजाइल ना कि हम कैद में बानी। जब ऊ रोम आइल, त हर जगह खोजत रहल जबले हमके ना पा लिहलस" (2 तीमुथियुस अध्याय 1 पद 16 से 17)।

ध्यान दीं कि उनेसिफुरुस के पौलुस के खोजे खातिर पूरा शहर में तलाश करे के पड़ल। अगर ऊ अपना परिस्थिति के ओही तरीका से आँकलन कइले रहित जइसे ऊपर बतावल जवान मेहरारू लोग कइले रहे, त ऊ पौलुस के कबो ना खोज पावत। उनेसिफुरुस त पहिलके जगह पर पौलुस के ना पाके हार मान लेत, ई सोचके कि प्रेरित के खोजल परमेश्वर के इच्छा नइखे।

परमेश्वर हमनी के अपना लिखल वचन के अनुसार अपना आत्मा के द्वारा अगुवाई करेलन। बाकिर ऊ कवनो दोसर दिन के विषय बा। अभी मुख्य बात ई बा: रउआ "का" के सवाल के जवाब पाए खातिर अपना परिस्थिति के ओर ना देख सकत बानी। रउआ के ई जाने खातिर बाइबल में दिहल जानकारी के ओर देखे के पड़ी कि परमेश्वर का करेलन आ जीवन के घटना में कइसन काम करेलन।

गलत जवाब: परमेश्वर परिस्थिति के द्वारा हमनी पर काम करेलन।

कुछ लोग मानेला कि परमेश्वर परिस्थिति के द्वारा हमनी पर काम करेलन, बाकिर ई सही नइखे। बाइबल में कहींयो ई ना कहल गइल बा कि परमेश्वर हमनी पर काम करेलन। एकरा

बदले, पवित्रशास्त्र कहेला कि परमेश्वर अपना आत्मा आ अपना वचन के द्वारा हमनी के भीतर काम करेलन। एह पदन पर ध्यान दीं।

“हमके एह बात के पूरा भरोसा बा कि जे रउआ में नीक काम शुरू कइलन, उहे मसीह यीशु के दिन तक ओकरा के पूरा करिहें” (फिलिप्पियों अध्याय 1 पद 6)।

“अपना उद्धार के डर आ काँपत मन से काम में लावत रहीं, काहेकि परमेश्वर ही बाड़न जे अपना नीक उद्देश्य के मुताबिक रउआ में चाह आ काम दुनो पैदा करेलन” (फिलिप्पियों अध्याय 2 पद 12 से 13)।

“शांति के परमेश्वर… रउआ के अपना इच्छा पूरा करे खातिर हर नीक चीज से सुसज्जित करसु, आ यीशु मसीह के द्वारा हमनी के भीतर ऊ काम करसु जवन उहाँ के नजर में भला लागेला” (इब्रानियों अध्याय 13 पद 20 से 21)।

“आ हम सभ, जिनकर चेहरा पर परदा नइखे, [काहेकि हम] परमेश्वर के वचन में दर्पन जइसन प्रभु के महिमा के लगातार देखत रहिला, उहे स्वरूप में लगातार बदलल जात बानी, एगो महिमा से दोसरा बढ़त महिमा में; [काहेकि ई] प्रभु के ओर से होला [जे] आत्मा हउवन” (2 कुरिन्थियों अध्याय 3 पद 18)।

“आ जइसे-जइसे प्रभु के आत्मा हमनी के भीतर काम करेलन, हम धीरे-धीरे उहाँ जइसन बनत जात बानी आ उहाँ के महिमा के अउरी जादे प्रकट करत बानी” (2 कुरिन्थियों अध्याय 3 पद 18)।

“आ हम परमेश्वर के धन्यवाद करे से कबो ना रुकिला कि जब हम रउआ के उहाँ के संदेश सुनवनी, त रउआ हमार शब्द के खाली मनुष्य के बात ना समझनी। रउआ ओकरा के परमेश्वर के सच्चा वचन के रूप में स्वीकार कइनी—आ निश्चय ही ऊ उहे रहे। आ ई वचन रउआ जइसन विश्वास करे वाला लोग के भीतर लगातार काम करत रहेला” (1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 2 पद 13)।

अगर रउआ ई सोचत बानी कि परमेश्वर बाहरी परिस्थिति के द्वारा रउआ पर काम करेलन, त रउआ लगातार अपना माहौल के देखके ई समझे के कोशिश करब कि परमेश्वर का करत बाड़न, आ फेर ओह लोग जइसन गलत निष्कर्ष निकालब जिनकर जिक्र पिछला भाग में कइल गइल बा।

रउआ ई पूछ सकत बानी: "का परमेश्वर हमनी के परखे, सिखावे, शुद्ध करे आ सिद्ध बनाए खातिर कठिन परिस्थिति के व्यवस्थित करेलन या ओकरा के होखे देलन?" परमेश्वर सचमुच हमनी के परखेलन, सिखावेलन, शुद्ध करेलन आ सिद्ध बनावेलन, बाकिर ऊ ई काम अपना वचन आ अपना आत्मा के द्वारा करेलन, जे हमनी के भीतर काम करेला; कठिन परिस्थिति के द्वारा ना। (एह हर बिंदु के पूरा समीक्षा खातिर, *परमेश्वर अच्छा हउवन... आ अच्छा के मतलब सचमुच अच्छा ह* पढ़ीं।)

अब जबकि हम "का" के सवाल के कुछ गलत जवाबन पर विचार कर चुकल बानी, आईं अब बाइबल के मुताबिक एह सवाल के सही जवाब देखीं।

6

का के सवाल के सही जवाब

खाली एहसे कि परिस्थिति हमनी के ई ना बतावेला कि परमेश्वर का करत बाड़न, एकर मतलब ई नइखे कि हम जान ना सकीं—बाइबल हमनी के बतावेला। हो सकेला कि ऊ कवनो खास परिस्थिति के बारे में खास ब्योरा ना दे, बाकिर जब हम परमेश्वर के वचन के अध्ययन करीलें, त हम ओह सामान्य सिद्धांतन के देख सकीलें, जवन के मुताबिक परमेश्वर हर परिस्थिति में काम करेलन।

बाइबल अइसन विवरणन से भरल बा जहाँ परमेश्वर कठिन समय में काम करके अद्भुत परिणाम पैदा कइलन—अपना खातिर महान महिमा, जतना जादे लोग खातिर संभव हो सके ओतना भलाई, आ सचमुच खराब घटना में से साँचो के भलाई। एह कहानीयन में हम परमेश्वर के नीचे लिखल सिद्धांतन के अनुसार काम करत देखीलें:

• परमेश्वर के बहुत काम तबले अदृश्य रहेला जबले रउआ आखिर में ओकर दिखाई देवे वाला परिणाम ना देख लीं। खाली एहसे कि रउआ कुछ होत ना देखत बानी, एकर मतलब ई नइखे कि कुछ होखते ना बा।

• प्रभु सही समय पर काम करेलन।

• ऊ अक्सर थोड़े समय के आशीष (तुरंते परेशानी खत्म कर देवे) के रोक देलन ताकि लंबा समय आ अनन्त परिणाम पैदा हो सके, काहेकि ऊ मनुष्य के चुनावन के इस्तेमाल करके अपना उद्देश्य पूरा करेलन।

• परमेश्वर साँचो के बुराई में से साँचो के भलाई पैदा करेलन।

• ऊ रउआ के तबले संभाल के ले चलिहें जबले रउआ के बाहर ना निकाल दीहें। परमेश्वर बहुत कठिन परिस्थिति के बीचो-बीच रउआ के उन्नति करे लायक बना सकेलन।

यीशु हमनी के देखावेलन कि परमेश्वर कइसे काम करेलन।

कुछ परिस्थिति में यीशु के प्रतिक्रिया हमनी के ई समझ देला कि परमेश्वर कइसे काम करेलन। जब हम देखीलें कि यीशु (जे मनुष्य के देह में परमेश्वर रहलन) का कइलन, त हम एह सिद्धांतन के काम करत देखीलें।

एकर बढ़िया उदाहरण ओह घटना में देखाई देला जहाँ यीशु रोटी आ मछरी बढ़वले रहलन। पवित्रशास्त्र कहेला कि पाँच हजार मरदन के एगो बहुत बड़ी भीड़, मेहरारू आ बच्चन के छोड़के, पूरा दिन यीशु के पीछे-पीछे चलत रहल।

"ओह साँझ चेला लोग उहाँ लगे आके कहलस, 'ई सुनसान जगह बा, आ बहुत देर हो गइल बा। भीड़ के जाए दीं ताकि ऊ गाँव में जाके अपना खातिर भोजन खरीद लेवे।' बाकिर यीशु जवाब दिहलन, 'एकर जरूरत नइखे—रउआ ही ओह लोग के भोजन दीं'" (मत्ती अध्याय 14 पद 15 से 16)।

चेला लोग लगे एतना बड़ी भीड़ खातिर भोजन के व्यवस्था ना रहे। एहसे ऊ लोग कमी के सामना करत रहे। एहसे "काहे" के सवाल उठेला।

“एह संसार में कमी काहे बा?” पर्याप्त भोजन के कमी धरती पर आदम के पाप से आइल शाप के एगो हिस्सा बा। “ओह खास दिन कमी काहे रहे?” काहेकि ओह इलाका में उपलब्ध साधन के कमी पूरा करे खातिर केहू अपना साथे भोजन लेके ना आइल रहे।

“तब यीशु अपना आँख उठाके एगो बहुत बड़ी भीड़ के अपना ओर आवत देखलन, आ फिलिप्पुस से कहलन, ‘हम कहाँ से रोटी खरीदब कि ई लोग खा सके?’ ई उहाँ ओकर परीक्षा लेवे खातिर कहलन, काहेकि उहाँ खुद जानत रहलन कि ऊ का करे वाला बाड़न” (यूहन्ना अध्याय 6 पद 5 से 6)।

हालाँकि यीशु कवनो तरीका से एह कमी के पीछे ना रहलन, फिरो उहाँ एहमें अपना बारह चेलन के भलाई खातिर उपयोग करे के एगो मौका देखलन। यीशु पहिले ही ऊ लोग के ई सिखा चुकल रहलन कि स्वर्ग में उनकर एगो पिता बाड़न जे अपना लइकन के, जब ऊ उहाँ के खोजेला, जरूरी प्रबंध देलन। उहाँ के ई सवाल फिलिप्पुस आ दोसरा चेलन के मौका देत रहे कि ऊ परमेश्वर आ उहाँ के प्रतिज्ञा पर अपना विश्वास के दिखावस आ मजबूत करस।

ऊ लोग अइसन जवाब दे सकत रहल: “हम ना जानत बानी कि भोजन कहाँ से आई, बाकिर हमके पूरा भरोसा बा कि हमार स्वर्गीय पिता हमनी के मदद करिहें।”

बहुत लोग गलत तरीका से मानेला कि परमेश्वर हमनी के परखे खातिर जीवन के कठिनाई के व्यवस्थित करेलन। बाकिर परमेश्वर के परीक्षा कबो खुद परिस्थिति नइखे। बलुक, उहाँ के परीक्षा ओह परिस्थिति के बीच उहाँ के वचन होला। एह घटना में यीशु अपना शब्दन के द्वारा अपना चेलन के परखलन: का रउआ एह बड़ा कमी के सामने भी ओह बात पर विश्वास करब जे हम रउआ के रउआ के पिता के बारे में बतवनी?

चेला लोग उहे गलती कइलस जवन चुनौतीपूर्ण परिस्थिति के सामना करत बेरा बहुत लोग करेला—ऊ लोग यीशु के पहिले दिहल शिक्षा के याद ना रखलस। ऊ लोग अपना समस्या के समाधान ओह आधार पर खोजे लागल जवन ऊ देख सकेला, आ फेर ओही से निष्कर्ष निकाल लिहलस।

“फिलिप्पुस जवाब दिहलस, ‘एह सबके खिलावे खातिर त बहुत बड़ा धन चाहीं!’ तब शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास कहलन, ‘इहाँ एगो छोट लड़िका बा जेकरा लगे जौ के पाँच रोटी आ दू मछरी बा। बाकिर एतना बड़ी भीड़ खातिर ई का ह?’” (यूहन्ना अध्याय 6 पद 7 से 8)।

फिलिप्पुस ई सोचत लागल कि अगर उनकरा लगे पर्याप्त धन रहित त ऊ ई जरूरत कइसे पूरा करत। अन्द्रियास ओह बात के तर्क से खारिज कर दिहलन जवन असल में समस्या के समाधान बने वाली रहे—एगो छोट लड़िका के भोजन। दुनो में से केहू अपना पिता के ओह प्रतिज्ञा के बारे में ना सोचलस कि ऊ उनकर मदद करिहें।

परमेश्वर जानेलन कि ऊ का करत बाड़न।

जब यीशु फिलिप्पुस से पूछलन कि ऊ लोग भीड़ खातिर रोटी कहाँ से ले आई, त उहाँ पहिले से जानत रहलन कि ऊ का करे वाला बाड़न। बाकिर उहाँ अपना चेलन के ई ना बतवलन कि उहाँ के मन में का योजना बा। हालाँकि चेला लोग ओह खास कामन के ना जानत रहे जवन प्रभु करे वाला रहलन, फिरो ऊ लोग एह सच्चाई में विश्राम कर सकत रहे कि परमेश्वर हमेशा जानेलन कि ऊ का करे जा रहल बाड़न, चाहे ऊ हमनी के पूरा ब्योरा ना बतावस।

ईहो ध्यान दीं कि हालाँकि यीशु ओह जरूरत के पूरा करे के योजना बना चुकल रहलन, फिरो उहाँ तुरंते भोजन उपलब्ध ना करवले। काहे? काहेकि परमेश्वर सही समय पर काम करेलन, जरूरी नइखे कि ओही घड़ी। यीशु चेलन के निर्देश दिहलन कि सभ लोग के ओहिजा घास पर बइठा दिहल जाव। निश्चित रूप से, दस हजार लोग के बइठावे में कुछ समय लागल होई। जब सभ लोग बइठ गइल, तब यीशु ओह छोट लड़िका के रोटी आ मछरी लिहलन आ पिता के धन्यवाद दिहलन। फेर उहाँ ऊ भोजन अपना चेलन के दिहलन, जे पहाड़ी पर बइठल लोगन में ओकरा के बाँटलन।

“यीशु आदेश दिहलन, ‘सभ लोग के बइठा द।’ तब सभ लोग—खाली मरद ही पाँच हजार रहलन—घास वाली ढलान पर बइठ गइल। फेर यीशु रोटी लिहलन, परमेश्वर के धन्यवाद

दिहलन, आ लोगन में बाँट दिहलन। ओकर बाद उहाँ मछरी के साथो ओइसहीं कइलन। आ सभे खइलस आ तृप्त हो गइल" (यूहन्ना अध्याय 6 पद 10 से 11)।

"फेर यीशु अपना चेलन से कहलन, 'अब बचल टुकड़न के जुटा लऽ, ताकि कुछो व्यर्थ ना जाए।' शुरुआत में खाली पाँच जौ के रोटी रहल, बाकिर लोगन के ना खाइल रोटी के टुकड़न से बारह टोकरी भर गइल" (यूहन्ना अध्याय 6 पद 12 से 13)।

सोचीं कि इहाँ का भइल आ ई विवरण हमनी के का देखावेला कि परमेश्वर कइसे काम करेलन। यीशु पाँच रोटी आ दू मछरी लिहलन—जवन साफ-साफ लगभग दस हजार लोग के खिलावे खातिर पर्याप्त ना रहे—फिरो यीशु ओकरा के अपना हाथ में लिहलन आ अपना पिता के धन्यवाद दिहलन। हालाँकि कमी परमेश्वर के ओर से ना आवेला, फिरो यीशु ओकरा खातिर परमेश्वर के धन्यवाद दिहलन। उहाँ अइसन काहे कइलन? काहेकि उहाँ जानत रहलन कि जवन अपर्याप्त बा, ऊ उहाँ के पिता के हाथ में पर्याप्त से भी जादे बन जाई। उहाँ जानत रहलन कि परमेश्वर साँचो के बुराई (अपर्याप्त भोजन) में से साँचो के भलाई (पूरा प्रबंध) पैदा करिहें।

यीशु सभे के बइठावे में समय काहे लगवलन? उहाँ खाली भोजन पर प्रार्थना करके तुरंते बाँट काहे ना दिहलन? यीशु चाहत रहलन कि सभ लोग बइठल होखे ताकि सभे देख सके कि खाली थोड़ा भोजन उपलब्ध बा आ सभे उहाँ के अपना पिता के स्वीकार करत देख सके। काहेकि सभ कुछ व्यवस्थित तरीका से भइल, एहसे सभे देखलस कि का भइल। जवन भोजन बहुत जल्दी खतम हो जाए के चाहीं रहे, ऊ खतम ना भइल। सभे जान गइल कि परमेश्वर एगो चमत्कार कइलन।

हालाँकि जब चेले लोग अपना समस्या लेके यीशु लगे आइल, त ऊ लोग तुरंते नतीजा ना देख पवलस, एकर मतलब ई ना रहे कि कुछ होखते ना रहे। यीशु लगे एगो योजना रहे आ बात धीरे-धीरे अपना जगह पर आ रहल रहे। जब आखिरकार नतीजा सामने आइल, त परमेश्वर के सबसे बड़ी महिमा मिलल आ जतना जादे लोग के मदद आ आशीष मिल सकेल, ओतना मिलल।

परमेश्वर के प्रबंध आ छुटकारा हमेशा तुरंते ना आवेला, एहसे ना कि परमेश्वर चाहेलन कि लोग दुख सहे, बलुक एहसे कि उहाँ देखेलन कि समय बीते से परिस्थिति के सबसे जादे उपयोगी बनावल जा सकेला। एहसे उहाँ के जादे महिमा मिली आ जादे लोग तक जादे भलाई पहुँची। ध्यान रखीं कि हालाँकि एह लोग के भोजन खातिर इंतजार करे के पड़ल, फिरो केहू भूख से मरल ना, सभे भरपूर खइलस, आ इहाँ तक कि कुछ अतिरिक्त भोजन भी बच गइल जवन साथे ले जाइल जा सके।

परमेश्वर काम करत बाड़न।

यीशु परमेश्वर हउवन आ हमनी के परमेश्वर के प्रकट करेलन, एहसे जब हम देखीलें कि उहाँ एह परिस्थिति के कइसे संभाललन, त हमनी के ई समझ मिलेला कि परमेश्वर कइसे काम करेलन आ जीवन के कठिनाई के बीच उहाँ का करेलन। ई जानकारी हमनी के जीवन के परीक्षा के सामना करत बेरा "का" के सवाल के जवाब देवे में मदद कर सकेला।

खाली एहसे कि रउआ अपना समस्या के समाधान ना समझ पा रहल बानी, एकर मतलब ई नइखे कि परमेश्वर लगे कवनो योजना नइखे। आ खाली एहसे कि रउआ अपना परिस्थिति में कुछ होत ना देखत बानी, एकर मतलब ई नइखे कि कुछ होखते ना बा। परमेश्वर धरती के रचना से पहिलहीं ओह चुनौती के जानत रहलन जवन रउआ सामना करब, आ उहाँ पहिले से अइसन योजना बनवले बाड़न जवन ओकरा के अपना सबसे बड़ी महिमा आ सबसे जादे भलाई के उद्देश्य में इस्तेमाल कर सके। उहाँ पर्दा के पीछे काम करत बाड़न।

एही हो रहल बा। एही "का" के सवाल के जवाब बा।

अगिला दू अध्याय हमनी के "काहे" आ "का" के सवालन के सही जवाब के अउरी गहराई से समझे में मदद करी। हम साँचो के अइसन लोगन के जीवन देखब जे सचमुच भारी कठिनाई के सामना कइले रहलन। जब हम उनकर कहानी के अध्ययन करब, तब हम देखब कि परमेश्वर उनकर जीवन में ओही सिद्धांतन के मुताबिक कइसे काम कइलन, जवन यीशु अपना चेलन के जरूरत के समय मदद करत बेरा देखवले रहलन।

7

यूसुफ के कहानी

यूसुफ के कहानी एह बात के एगो उदाहरण बा कि प्रभु जीवन के चुनौती के साथ का करेलन। परमेश्वर यूसुफ के परिस्थिति में काम करत, पिछला अध्याय में बतावल सिद्धांतन के मुताबिक, अपना खातिर सबसे जादे महिमा आ अनगिनत लोग खातिर सबसे जादे भलाई पैदा कइलन। आईं देखीं कि परमेश्वर का कइलन।

यूसुफ के साथ का भइल?

अब्राहम के बेटा याकूब के बारह बेटा रहलन। यूसुफ, जे ग्यारहवाँ बेटा रहलन, याकूब के सबसे प्रिय रहलन। जब यूसुफ जवान रहलन, त परमेश्वर उहाँ से महानता के वादा कइलन। ई प्रतिज्ञा, उहाँ के पिता के खास प्रेम के साथ मिलके, उहाँ के भाई लोग के मन में उहाँ खातिर घृणा पैदा कर दिहलस।

जब यूसुफ सत्रह बरिस के रहलन, त उहाँ के भाई लोग उहाँ के मार डाले के योजना बनवलस, बाकिर बाद में अपना विचार बदल के उहाँ के गुलामी में बेच दिहलस। गुलाम व्यापारी लोग यूसुफ के मिस्र ले गइल आ उहाँ के बेच दिहलस। फिरौन—मिस्र के राजा—के एगो अधिकारी, पोतीफर, यूसुफ के खरीद लिहलस आ उहाँ के अपना घर के देखरेख के जिम्मेदारी दे दिहलस। उहाँ रहते समय, पोतीफर के पत्नी यूसुफ पर झूठा बलात्कार के आरोप लगवलस, आ उहाँ के जेल में डाल दिहल गइल।

जेल में यूसुफ के मुलाकात दू अउरी बंदियन से भइल—एगो पिलावे वाला आ एगो रसोइया—जे फिरौन खातिर काम करत रहलन। ऊ लोग एहसे कैद कइल गइल रहे काहेकि ऊ अपना राजा के नाराज कर दिहले रहे। कुछ समय बाद, दुनो अइसन सपना देखलस जवन ऊ समझ ना सकलस, बाकिर यूसुफ उनकर मतलब समझा दिहलन। यूसुफ के व्याख्या के मुताबिक, रसोइया के फाँसी होई आ पिलावे वाला फेर से अपना पद पर बहाल हो जाई। यूसुफ के भविष्यवाणी पूरा भइल। रसोइया मर गइल आ पिलावे वाला फेर से अपना काम पर लगा दिहल गइल।

पिलावे वाला यूसुफ के दू बरिस तक भूल गइल, जबले कि फिरौन अइसन सपना ना देखलन जेकर मतलब केहू ना बता सकल। पिलावे वाला के कहला पर, फिरौन यूसुफ के राजदरबार में बुलववलन, जहाँ यूसुफ सही-सही सपना के मतलब ई बतवलन कि ई आवे वाला अकाल के चेतावनी बा। ओह सपना में सात बरिस के बहुत समृद्धि आ ओकरा बाद सात बरिस के भारी कमी के भविष्यवाणी रहे। यूसुफ के व्याख्या के जवाब में, फिरौन उहाँ के अकाल शुरू होखे से पहिले भोजन जमा करे आ कठिन समय में ओकरा के बाँटे के प्रभारी बना दिहलन। ओह समय यूसुफ तीस बरिस के रहलन।

यूसुफ भोजन जमा करे आ बाँटे के योजना सफलतापूर्वक बनवलन आ लागू कइलन। जब मिस्र आ ओकर आसपास के देश अकाल झेलत रहलन, त प्रभावित लोग के खिलावे खातिर पर्याप्त भोजन उपलब्ध रहे। यूसुफ के अपना भाई लोग भी ओही लोग में रहल जे उहाँ से मदद माँगे आइल। आखिर में उहाँ के अपना परिवार से फेर मिलन भइल, जब उहाँ के पिता, भाई, उनकर मेहरारू आ बच्चा लोग मिस्र में रहे आ गइल। यूसुफ के पूरा कहानी उत्पत्ति अध्याय 37 से 50 में लिखल बा।

ई काहे भइल?

यूसुफ के पीड़ा "काहे" के सवाल सामने ले आवेला। उहाँ के साथ ई काहे भइल?

हम जानत बानी कि यूसुफ के परेशानी के स्रोत परमेश्वर ना रहलन। पहिला कारण, यीशु—जे परमेश्वर हउवन आ हमनी के परमेश्वर के प्रकट करेलन—कबो कवनो आदमी के साथ ओइसन व्यवहार ना कइलन जइसन यूसुफ के भाई लोग उहाँ के साथ कइलस। एहसे, यूसुफ के परीक्षा परमेश्वर के काम ना हो सके।

आ आखिर में प्रभु उहाँ के उहाँ के कष्ट से छुड़ा दिहलन (प्रेरितन के काम अध्याय 7 पद 9 से 10)। परमेश्वर लोगन के सीधे या घुमाके पीड़ा ना देलन, आ फेर बाद में मुड़के उनकर छुटकारा करे ना आवेलन, काहेकि अइसन कइल अपना ही खिलाफ बँटल घर जइसन होई।

यूसुफ के अनुभव पर शैतान के निशान साफ दिखाई देला। बाइबल कहेला कि शैतान हत्यारा आ झूठा बा, जे मनुष्य से छीने आ उनकरा के निगल जाए के कोशिश करेला (यूहन्ना अध्याय 8 पद 44; यूहन्ना अध्याय 10 पद 10 आ 1 पतरस अध्याय 5 पद 8)। ठीक एही काम यूसुफ के भाई लोग उहाँ के साथ कइलस। ऊ लोग उहाँ के मार डाले के योजना बनवलस, फेर उहाँ के गुलामी में बेच दिहलस आ उहाँ के पिता से जवन भइल ओकर बारे में झूठ बोललस। पोतीफर के मेहरारू भी यूसुफ के बारे में झूठ बोललस आ ओकर नतीजा में उहाँ के जीवन के कई बरिस उहाँ से छिन गइल।

का शैतान सीधे तौर पर यूसुफ के एह कठिन परीक्षा के योजना बनवले रहे? बाइबल ई ना कहेला कि ठीक एही भइल रहे, आ असल में एकरा से खास फर्को ना पड़ेला। जइसे हम अध्याय 1 में बतवनी, शैतान मनुष्यन के व्यवहार पर असर डाले खातिर उनकरा पर काम करेला। शैतान के यूसुफ के भाई लोग आ रास्ता में आवे वाला दोसरा लोग तक पहुँच उनकर पतित स्वभाव आ नया ना भइल मन के द्वारा मिलल।

शैतान से प्रभावित पतित लोग के स्वतंत्र इच्छा के कई गो काम यूसुफ के विपत्ति के जन्म दिहलस। ई परेशानी उहाँ पर एहसे आइल काहेकि पाप से शापित धरती पर जीवन अइसने बा।

परमेश्वर का करत रहलन?

यूसुफ के कहानी से हम देख सकीलें कि परमेश्वर मनुष्य के चुनावन के नतीजा के—एह तक कि ओह चुनावन के भी जेकरा के उहाँ ना मंजूरी दिहलन आ ना व्यवस्थित कइलन—अपना महिमा आ महान भलाई खातिर कइसे सबसे बढ़िया तरीका से इस्तेमाल कइलन। बाकिर एहमें समय लागल। परमेश्वर थोड़े समय के आशीष (यूसुफ के समस्या ओही दिन खत्म कर देवे जवन दिन शुरू भइल) के लंबा समय आ अनन्त नतीजा खातिर रोक दिहलन।

एह उदाहरणन पर ध्यान दीं:

• परमेश्वर साफ-साफ यूसुफ के चेतावनी दे सकत रहलन कि उहाँ के भाई लोग का करे वाला बा, बाकिर जतना हम जानत बानी, उहाँ अइसन ना कइलन। ऊ जानकारी यूसुफ के समस्या के हल ना करत। उहाँ के भाई लोग के हृदय में अबहियों उहाँ खातिर घृणा आ हत्या के भावना रहे, जवना से आगे भी परेशानी के संभावना बनल रहित।

अगर ओह बेरा परमेश्वर दखल दिहले रहितन, त यूसुफ मिस्र ना पहुँचत आ भोजन बाँटे के व्यवस्था के प्रभारी ना बनत, आ संभव बा कि उहाँ आ उहाँ के परिवार अकाल से बच ना पावत। अगर ऊ लोग नष्ट हो गइल रहित, त मसीह के द्वारा बेटा-बेटी के परिवार बनावे के परमेश्वर के योजना रुक गइल रहित, काहेकि यीशु यूसुफ के परिवार (अब्राहम के सन्तान) के माध्यम से संसार में आइलन।

• जब पोतीफर के मेहरारू यूसुफ के बारे में झूठ बोललस, त परमेश्वर दखल ना दिहलन, काहेकि उहाँ देखत रहलन कि ओकर चुनाव कहाँ ले जाई। ओकर झूठ के कारण यूसुफ जेल में डाल दिहल गइल। बाकिर उहे जेल में उहाँ के मुलाकात पिलावे वाला से भइल, जे यूसुफ के फिरौन तक पहुँचावे के कड़ी बनल।

• आखिर में पिलावे वाला जेल से छूट गइल। बाकिर फिरौन से यूसुफ के बारे में बोले के बात ओकरा याद आवे में दू बरिस लग गइल। अगर ई बात फिरौन के अजीब सपना देखे से पहिले सामने आ गइल रहित, त संभव बा कि यूसुफ जेल से छूट जातन, बाकिर उहाँ के ऊँच पद देवे के कवनो कारण ना रहित। संभव बा कि उहाँ मिस्र में गुमनामी में खो जातन या

कनान लवट जातन आ शायद अकाल में मर जातन। कवनो हालत में, उहाँ के भोजन बाँटे के व्यवस्था के प्रभारी ना बनावल जात।

परमेश्वर यूसुफ के साथ कइल गइल बुराई में से महान भलाई पैदा कइलन। आखिर में यूसुफ अइसन जगह पर पहुँच गइलन जहाँ ऊ अपना परिवार खातिर भोजन उपलब्ध करा सकलन, आ एह तरह ओह वंश के सुरक्षित रख सकलन, जवना के माध्यम से एक दिन यीशु संसार में आवे वाला रहलन। यूसुफ के योजना से हजारन लोग भूख से मरे से बच गइल, आ अनगिनत लोग एकमात्र सच्चा परमेश्वर के बारे में सुनलस, काहेकि यूसुफ अपना विपत्ति के बीच प्रभु के स्वीकार कइलन। उदाहरण खातिर:

• पोतीफर के घर में गुलामी के दौरान, पोतीफर, जे मिस्र के देवतन के पूजा करे वाला रहे, ई समझ गइल कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर यूसुफ के साथ बाड़न (उत्पत्ति अध्याय 39 पद 3)।

• जब यूसुफ जेल में रहलन, त उहाँ स्वीकार कइलन कि रसोइया आ पिलावे वाला के सपना के सही मतलब बतावे वाला परमेश्वर हउवन। एहसे मिस्र के अउरी बहुत मूर्तिपूजक लोग एकमात्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बारे में सुनलस (उत्पत्ति अध्याय 40 पद 8)।

• जब यूसुफ फिरौन के परेशान करे वाला सपना के मतलब समझा सकलन, त उहाँ फेर से ओकर श्रेय प्रभु के दिहलन। राजा पहचान गइल कि परमेश्वर काम करत बाड़न: "(यूसुफ) अइसन आदमी बा जे साफ-साफ परमेश्वर के आत्मा से भरल बा" (उत्पत्ति अध्याय 41 पद 38 से 39)।

• अकाल के बरिस में बहुत देश भोजन खातिर मिस्र आइल। संभव बा कि एह लोग के बहुत बड़ा संख्या सर्वोच्च प्रभु के बारे में सुनल होखे, जब उनकरा बतावल गइल होखे कि जब दोसर कहीं भोजन ना रहे, त मिस्र लगे एतना भोजन काहे रहे (उत्पत्ति अध्याय 41 पद 57)।

परमेश्वर यूसुफ के कठिन परीक्षा के दौरान कबो ना छोड़लन। एकरा बदले, उहाँ यूसुफ के रक्षा कइलन आ बहुत कठिन परिस्थिति के बीचो-बीच उहाँ के उन्नति करे लायक बनवलन। एह उदाहरणन पर ध्यान दीं:

• जब यूसुफ गुलाम के रूप में पोतीफर के घर पहुँचलन, त ऊ जल्दीए उन्नति करे लगलन। पोतीफर यूसुफ के पूरा घर के जिम्मेदारी दे दिहलस। "बाकिर प्रभु यूसुफ के साथ रहलन, आ ऊ [हालाँकि गुलाम रहलन] सफल आ समृद्ध आदमी रहलन... (ऊ) अपना मालिक (पोतीफर) के नजर में अनुग्रह पवलन... आ [ओकर मालिक] उहाँ के अपना घर के प्रधान बना दिहलस आ अपना सगरी संपत्ति उहाँ (यूसुफ) के देखरेख में सौंप दिहलस" (उत्पत्ति अध्याय 39 पद 2 से 4)।

• बलात्कार खातिर आम सजा मौत रहे। हालाँकि यूसुफ पर एह अपराध के आरोप लगावल गइल, फिरो फिरौन उहाँ के मौत के सजा देवे के बदले राजनीतिक बंदियन के जेल में भेज दिहलस।

• यूसुफ जेल में बेड़ी से जकड़ दिहल गइल रहलन। बाकिर परमेश्वर उहाँ के ओह बंधन से छुड़ा दिहलन आ बड़ा जिम्मेदारी के जगह पर पहुँचा दिहलन—पूरा जेल के देखरेख के भार उहाँ के हाथ में आ गइल। आ जब फिरौन के पिलावे वाला आ रसोइया उहाँ आइल, त यूसुफ खुद उनकर सेवा करत रहलन।

• जब यूसुफ फिरौन के सपना के मतलब बतवलन, त फिरौन उहाँ के मिस्र के दोसर सबसे ऊँच अधिकारी बना दिहलन। फिरौन उहाँ से कहलन, "खाली हमहीं पद में तोहरा से बड़ा रहब" (उत्पत्ति अध्याय 41 पद 40)।

यूसुफ के अपना परीक्षा के बारे में सोच।

फिरौन यूसुफ के एगो पत्नी भी दिहलन, आ उहाँ मिस्र में परिवार बसवलन। यूसुफ के लइकन के नाम हमनी के गहर समझ देला कि अपनी कठिनाई के दौरान परमेश्वर के मदद आ प्रबंध के बारे में यूसुफ का सोचत रहलन।

“यूसुफ अपना बड़ा बेटा के नाम मनश्शे रखलन, काहेकि उहाँ कहलन, ‘परमेश्वर हमके हमार सगरी परेशानी आ हमार पिता के परिवार के दुख भुला दिहलन।’ यूसुफ अपना दोसर बेटा के नाम एप्रैम रखलन, काहेकि उहाँ कहलन, ‘परमेश्वर हमार पीड़ा के धरती में हमके फलवन्त बना दिहलन’” (उत्पत्ति अध्याय 41 पद 51 से 52)।

हर बेर जब यूसुफ अपना लइकन के नाम लेत रहलन, ऊ ई घोषणा करत रहलन कि परमेश्वर उहाँ के कठिनाई आ नुकसान के पीड़ादायक याद के दूर कर दिहलन आ जवन धरती कबो उहाँ खातिर पीड़ा के धरती रहल, ओही में उहाँ के बहुतायत के जीवन दिहलन। यूसुफ के अपना परिस्थिति में एतना शांति आ विजय रहे कि जब उहाँ के भाई भोजन खातिर मिस्र आइल, त ऊ उनकरा से कह सकलन:

“(परमेश्वर) हमके रउआ से पहिले इहाँ भेजलन ताकि रउआ के प्राण बच सके… ताकि रउआ आ रउआ के परिवार जीवित रह सके आ रउआ एगो बड़ी जाति बन सकीं” (उत्पत्ति अध्याय 45 पद 5 से 7)।

जब यूसुफ कहलन कि परमेश्वर उहाँ के मिस्र भेजलन, त उहाँ के मतलब ई ना रहे कि परमेश्वर उहाँ के परेशानी पैदा कइलन। बलुक, ऊ ई बतावत रहलन कि परमेश्वर अपना ब्रह्मांड आ मनुष्य के स्वतंत्र इच्छा पर कतना नियंत्रण रखेलन। परमेश्वर ई सभ कुछ पैदा ना कइलन, बाकिर उहाँ ई सभ के इस्तेमाल कइलन। हमार मतलब ई बा कि परमेश्वर पहिले से जानत रहलन कि यूसुफ के भाई लोग उहाँ के साथ का करे वाला बा, आ उहाँ उनकर चुनाव के अपना योजना में शामिल कर लिहलन। जब यूसुफ के भाई लोग उहाँ के गुलामी में बेच दिहलस, त ऊ लोग उहाँ के खिलाफ बड़ी बुराई कइलस। बाकिर परमेश्वर उनकर ओह दुष्ट चुनाव के इस्तेमाल आखिर में यूसुफ के मिस्र में अधिकार के जगह तक पहुँचावे खातिर कइलन। एहसे अनगिनत प्राण बच गइल आ हजारन लोग यहोवा, एकमात्र सच्चा परमेश्वर, के बारे में सुनलस। परमेश्वर के नियंत्रण ओह बेरा भी अइसने रहे आ आजो ओइसने बा।

जब यूसुफ अपना अनुभव के ओर पीछे मुड़के देखलन, त ऊ साफ-साफ समझ सकलन कि परमेश्वर एतना महान बाड़न कि ऊ ओह दुष्ट कामन के भी, जवन उहाँ के ओर से ना भइल रहे, अपना उद्देश्य के पूरा करे में लगा सकेलन। आखिर में यूसुफ अपना भाई लोग से ई कह सकलन:

“जहाँ तक रउआ के सवाल बा, रउआ हमार खिलाफ बुराई के योजना बनवले रहीं, बाकिर परमेश्वर ओकरा के भलाई में बदल दिहलन। उहाँ आज हमके एह ऊँच पद पर पहुँचवलन ताकि हम बहुत लोग के प्राण बचा सकीं” (उत्पत्ति अध्याय 50 पद 20)।

यूसुफ के जीवन में परमेश्वर का कइलन? उहाँ पर्दा के पीछे काम कइलन आ मनुष्यन के चुनाव के अपना उद्देश्य के पूरा करे में लगा दिहलन। परमेश्वर के समय पूरा तरह सही रहे। उहाँ थोड़े समय के आशीष (तुरंते छुटकारा) के लंबा समय आ अनन्त परिणाम खातिर रोक दिहलन। परमेश्वर यूसुफ के तबले संभाल के निकालत रहलन जबले उहाँ के पूरा तरह बाहर ना ले आइलन, आ बहुत कठोर परिस्थिति के बीचो-बीच यूसुफ के फलल-फूलल योग्य बना दिहलन। प्रभु साँचो के बुराई में से साँचो के भलाई पैदा कइलन, अपना खातिर सबसे जादे महिमा लियाइलन, आ अपना अनन्त उद्धार के योजना के पूरा करत अनगिनत मरद आ मेहरारू खातिर सबसे जादे भलाई पैदा कइलन।

यूसुफ के कहानी में “का” के सवाल के एही जवाब बा।

मूसा आ इस्राएल के कहानी

मूसा आ ओह इब्रानी लोग के कहानी, जे मिस्र छोड़के कनान में अपना देश के ओर यात्रा कइलस, हमनी के ई अउरी गहराई से समझ देला कि जीवन के परीक्षा में परमेश्वर कइसे काम करेलन। एह विवरण में हम देखीलें कि परमेश्वर उनकरा खातिर उहे तरह के काम कइलन जइसन उहाँ यूसुफ खातिर कइले रहलन।

कहानी शुरू होला।

यूसुफ के समय में, इस्राएल के नया बनत जाति—कुल मिलाके पचहत्तर लोग—अकाल के समय भोजन खातिर मिस्र गइल रहे। ऊ लोग उहाँ बस गइल आ बहुत समृद्ध भइल। समय बीतला पर, यूसुफ आ उहाँ के पीढ़ी के लोग मर गइल, बाकिर उनकर वंशज लोग के बहुत लइका-पोता भइल। “असल में, ऊ लोग एतना तेजी से बढ़ल कि जल्दीए पूरा देश में फैल गइल” (निर्गमन अध्याय 1 पद 7)।

मिस्री लोग एह तेज बढ़ोतरी पर डर से प्रतिक्रिया दिहलस। जब एगो नया राजा सत्ता में आइल, जे यूसुफ या उहाँ के काम के बारे में कुछो ना जानत रहे, त ऊ निर्दयता से इब्रानी लोग के गुलाम बना लिहलस।

परमेश्वर के लोग गुलामी में एहसे गिरल काहेकि पाप से शापित धरती पर जीवन अइसने बा। पतित मनुष्य के स्वभाव बा कि ऊ दोसर मनुष्य पर राज करे। शैतान एही प्रवृत्ति के जरिया काम करेला आ मनुष्यन के एक-दूसरा के गुलाम बनाए खातिर प्रभावित करेला। एह टूटल-फूटल संसार में, शैतान से प्रभावित पतित मनुष्य के स्वतंत्र इच्छा के चुनाव विनाशकारी नतीजा पैदा कर सकेला। इस्राएल के साथ एही भइल।

कठोर जीवन परिस्थिति के बावजूद इस्राएली बढ़त रहलन। एहसे फिरौन इब्रानी दाई लोग आ अपना लोग के आदेश दिहलस कि ऊ इस्राएल के नवजात लड़िका के मार डाले। "बाकिर जतना जादे मिस्री लोग उनकरा पर अत्याचार करत गइल, ओतने तेजी से इस्राएली बढ़त गइल" (निर्गमन अध्याय 1 पद 12)। परमेश्वर अपना लोग के बहुत चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में भी उन्नति करे लायक बना सकेलन।

एही समय में, मूसा के जनम एगो इब्रानी घर में भइल। उहाँ के तीन महीना तक छिपाके रखल गइल ताकि उहाँ के मारल ना जा सके। जब उहाँ के माता-पिता उहाँ के अउरी ना छिपा सकल, त ऊ लोग परमेश्वर पर भरोसा कइलस आ उहाँ के नील नदी में एगो छोट जलरोधक टोकरी में रख दिहलस। फिरौन के बेटी मूसा के नदी किनारे नरकट के बीच पवली आ उहाँ के अपना बेटा के रूप में गोद लेवे के फैसला कइलस। मूसा के बहिन मरियम, जे दूर से ओह टोकरी के देखत रहली, मिस्री राजकुमारी लगे गइल आ बच्चा के दूध पियावे खातिर एगो धाय खोजे के प्रस्ताव दिहलस। राजकुमारी मान गइल, आ मरियम ओह बच्चा के ओकर माई लगे घर ले आइल। मूसा के माई अपना बेटा के देखभाल तबले कइली जबले ओकर दूध ना छूट गइल। फेर उहाँ ओकरा के फिरौन के बेटी के सौंप दिहली।

एह कठिन आ खतरनाक माहौल के बीच परमेश्वर साँचो के बुराई में से साँचो के भलाई पैदा कइलन। प्रभु ओही ताकत के, जवन इब्रानी लइकन के नष्ट करे खातिर काम करत रहे—मिस्र—उहे साधन बना दिहलन जेकरे द्वारा उहाँ मूसा के जान बचवलन। जब फिरौन के बेटी मूसा के नील नदी से निकाललस, त ऊ मिस्र के सुरक्षित राजकुमार बन गइलन। मूसा खाली जिन्दा ना बचलन, बलुक अपना शुरुआती बरिसन में उहाँ के अपना धर्मी माई के असर भी मिलल। फेर जब उहाँ के माई मूसा के राजकुमारी के वापस सौंप दिहली, त राजपुत्र के रूप में उहाँ के उ प्रशिक्षण मिलल जवन उहाँ के कबो ना मिलत अगर ऊ इब्रानी लोग के बीच ईंट बनावे वाला गुलाम बनके पलत-बढ़त। "आ ऊ वचन आ कर्म दुनो में सामर्थी हो गइलन" (प्रेरितन के काम अध्याय 7 पद 22)।

जब मूसा जवान भइलन, त उहाँ के मन इस्राएली लोग के ओर खिंच गइल। बाकिर चालीस बरिस के उमिर में, उहाँ एगो मिस्री के मार दिहलन जे एगो इब्रानी गुलाम के साथ बुरा व्यवहार करत रहे। मूसा मिस्र से भाग गइलन आ अरब देश के मिद्यान के जंगल में चालीस बरिस बितवलन। परमेश्वर मूसा से ओह मिस्री के हत्या ना करवले रहलन आ ना उहाँ के मिस्र छोड़के जाए खातिर उकसवले रहलन, बाकिर उहाँ मूसा के काम के इस्तेमाल कइलन आ ओकरा के अपना समग्र योजना में शामिल कर लिहलन।

परमेश्वर मूसा के इस्राएली लोग के अपना देश वापस ले जाए खातिर चुनले रहलन। फिरो, ओह मिस्री के मार डाले के उहाँ के उतावल काम ई देखवले कि उहाँ अभी बहुत संख्या में कठिन लोग के एगो खतरनाक यात्रा पर ले जाए खातिर तैयार ना रहलन। मूसा के ओह चरित्र गुणन के विकसित करे खातिर समय चाहीं रहे, जवन उहाँ के महान अगुवा बनावत। चरित्र निर्माण के ऊ समय मिद्यान में बीतल। आ मिद्यान उहे जगह रहे जहाँ मूसा—जे महल में पलल-बढ़ल रहलन—मरुभूमि में रहे के सीखलन। उहाँ के ठीक उहे प्रशिक्षण मिलल जवन परमेश्वर के ओह योजना के पूरा करे खातिर जरूरी रहे, जवन के मुताबिक उहाँ के अपना लोग के कनान के ओर जात बेरा मरुभूमि के जंगल से ले जाए के रहे।

सबसे बढ़िया रास्ता।

जब मूसा अपना नियति पूरा करे खातिर मिस्र लवटलन, त उहाँ के उमिर अस्सी बरिस रहे। उहाँ फिरौन लगे गइलन आ इब्रानी लोग के गुलामी से आजाद करे के माँग कइलन। फिरौन मना कर दिहलस। नौ महीना के दौरान मिस्री लोग पर एक के बाद एक विपत्ति आइल, आ तब फिरौन इस्राएली लोग के आजाद करे आ मिस्र छोड़के जाए देवे पर राजी भइल। उनकर कनान वापसी के यात्रा शुरू भइल।

परमेश्वर इस्राएल के घर वापस ले जाए खातिर दू रास्ता में से कवनो एक रास्ता चुन सकत रहलन—फिलिस्ती लोग के रास्ता या सिनै प्रायद्वीप के जंगल के रास्ता (निर्गमन अध्याय 13 पद 17 से 18)। पहिला रास्ता फिलिस्ती लोग से भरल रहे, जे मूर्तिपूजक आ लड़ाका लोग रहल। दोसरा रास्ता पहाड़ी आ सूखल रहे, जहाँ पहाड़ के ऊँचाई 7,400 फीट तक पहुँचत रहे आ साल भर में 8 इंच से कम बरखा होत रहे।

आदम के पहिला पाप के असर के कारण दुनो रास्ता के यात्रा कठिन रहे। ओकर अवज्ञा से मनुष्य में पापी स्वभाव पैदा भइल, जवना के नतीजा में अइसन आक्रामक गोत्र पैदा भइल जे दोसर मनुष्य के जीत लेवे खातिर तैयार रहेला—जइसे फिलिस्ती लोग के रास्ता पर रहे वाला लोग। जंगल के रास्ता मरुभूमि से होके जात रहे। मरुभूमि जइसन जगह आ ओह लोग के कठिनाई ओह मृत्यु के शाप के कारण पैदा भइल जवन आदम के पाप करे पर धरती पर आइल।

परमेश्वर एह दुनो रास्ता के चुनौती पैदा ना कइलन, बाकिर उहाँ जानत रहलन कि कवन रास्ता सबसे जादे परिणाम देई। उहाँ इस्राएल खातिर सबसे बढ़िया रास्ता चुनलन—सिनै के जंगल से होके जाए वाला रास्ता—आ उहाँ लगे योजना रहे कि एह रास्ता के इस्तेमाल करके इस्राएल खातिर महान भलाई आ अपना खातिर बहुत महिमा पैदा करिहें।

मिस्र के सेना बहुत ताकतवर रहे आ मिस्र से कनान के दूरी भी बहुत जादे ना रहे। एक बेर जब इस्राएली कनान में बस जातन, त मिस्र के सेना उनकरा खातिर लगातार खतरा बनल रहित। परमेश्वर एह खतरा के खत्म करे के एगो रास्ता देखलन। प्रभु जानत रहलन कि फिरौन इब्रानी लोग के गुलामी से छोड़ देवे के अपना फैसला बदल दी। फिरौन अपना सेना अपना नया आजाद भइल गुलामन के पीछे भेज दिहलस, काहेकि ओकरा लागल कि ओकर पुरान बंदी लाल समुंदर किनारे जंगल में फँस गइल बाड़े। जब मिस्री लोग इब्रानी लोग के पीछा करत रहल, त परमेश्वर समुंदर के पानी के दू भाग में बाँट दिहलन आ इस्राएल के सूखल जमीन पर चलके पार जाए दिहलन। जब मिस्री योद्धा लोग पीछा करे के कोशिश कइलस, त पानी फेर मिल गइल आ ऊ लोग नष्ट हो गइल।

एह घटना में से महान भलाई पैदा भइल। परमेश्वर खाली इस्राएल खातिर एगो साँचो के खतरा खत्म ना कइलन, बलुक लाल समुंदर के बँटला के इब्रानी लोग पर गहर असर पड़ल।

“जब इस्राएल के लोग ओह महान सामर्थ्य के देखलस जवन प्रभु मिस्री लोग के खिलाफ प्रकट कइलन, तब ऊ लोग प्रभु के भय माने लागल आ उहाँ पर आ उहाँ के सेवक मूसा पर विश्वास कइलस” (निर्गमन अध्याय 14 पद 31)।

मरुभूमि में प्रबंध।

सिनै के जंगल के रास्ता डरावन आ खतरनाक रहे। मरुभूमि के यात्रा के दौरान इस्राएल बहुत कठिनाई के सामना कइलस, जवना में भोजन आ पानी के कमी, साँप, बिच्छू, गरमी, धूर आ थकान शामिल रहे। बाकिर परमेश्वर अपना लोग के देखभाल ओह चुनौती के बीचो-बीच कइलन जवन उनकर माहौल दे रहल रहे। उहाँ उनकरा के मरुभूमि से तबले सुरक्षित निकालत रहलन जबले पूरा तरह बाहर ना ले आइलन।

"(परमेश्वर) अपना लोग के मिस्र से सुरक्षित निकाल लियाइलन, ऊ लोग चाँदी आ सोना से लदल रहल, उनकरा में केहू बीमार या निर्बल ना रहे। ... प्रभु उनकर ऊपर छाँह देवे खातिर बादर पसार दिहलन आ अन्हार में रोशनी देवे खातिर महान आग दिहलन। ऊ लोग मांस माँगलस, आ उहाँ उनकरा खातिर बटेर भेजलन; उहाँ उनकरा के मन्ना दिहलन—स्वर्ग के रोटी। उहाँ चट्टान के खोल दिहलन, आ पानी फूट निकलल, जवन सूखल आ बंजर जमीन में नदी जइसन बहे लागल" (भजन संहिता अध्याय 105 पद 37 से 41)।

"तोहार परमेश्वर यहोवा एह जंगल में बार-बार तोहार देखभाल कइलन, जइसे बाप अपना लइका के देखभाल करेला" (व्यवस्थाविवरण अध्याय 1 पद 31)।

"एह पूरा चालीस बरिस में तोहार कपड़ा ना घिसल, आ तोहार गोड़ में ना छाला पड़ल आ ना सूजन आइल" (व्यवस्थाविवरण अध्याय 8 पद 4)।

परमेश्वर के सिद्ध समय।

मिस्र से उनकर देश तक के यात्रा ग्यारह दिन के रहे। फिरो, इस्राएल के कनान पहुँचे में दू बरिस लागल (व्यवस्थाविवरण अध्याय 1 पद 2; गिनती अध्याय 10 पद 11 से 13)। दू हफ्ता के यात्रा खातिर दू बरिस बहुत लंबा लाग सकेला, बाकिर परमेश्वर के समय सिद्ध होला। इस्राएल के इंतजार के समय में परमेश्वर काम करत रहलन। बहुत भलाई भइल।

परमेश्वर सीनै पहाड़ पर मूसा से मिललन आ उहाँ के व्यवस्था दिहलन जवन इस्राएल के ओह देश में पहुँचला के बाद माने के रहे, जवन परमेश्वर उनकरा के देवे के वादा कइले रहलन। मूसा के तंबू बनावे आ बलिदान के व्यवस्था लागू करे के निर्देश भी मिलल, जवन कनान में बसला के बाद उनकर आत्मिक जीवन खातिर बहुत जरूरी होखे वाला रहे।

एह दू बरिस के देरी से ई बात फैले के समय मिलल कि इब्रानी लोग के परमेश्वर मिस्र के सेना के हरा दिहलन। जबले इस्राएली अपना देश पहुँचलन, उहाँ रहे वाला गोत्र लोग उनकरा से डेरा गइल रहे। एहसे इस्राएल के बड़ा रणनीतिक फायदा मिलल।

जब इब्रानी लोग अपना पैतृक देश में घुसल, त यरीहो पहिला शहर रहे जवना से उनकर सामना भइल। शहर पर हमला करे से पहिले, दू भेदी लोग के यरीहो के दीवार भीतर जानकारी जुटावे खातिर भेजल गइल। जब यरीहो के राजा के पता चलल कि ऊ लोग उहाँ बा, त राहाब नाँव के एगो वेश्या उनकरा के छिपा दिहली आ भागे में मदद कइली। उहाँ उनकरा के बतवली कि ऊ मदद करे खातिर काहे तैयार रहली।

“हम सभ रउआ से डर रहल बानी। हर आदमी भय से काँपत बा। काहेकि हम सुनले बानी कि जब रउआ मिस्र से निकलनी, तब प्रभु रउआ खातिर लाल समुंदर में सूखल रास्ता बना दिहलन। … एहमें आश्चर्य नइखे कि हमार हृदय भय से पिघल गइल बा! अइसन बात सुनके केहू में रउआ से लड़े के हिम्मत ना रहल। काहेकि रउआ के परमेश्वर यहोवा ऊपर आकाश आ नीचे धरती के सर्वोच्च परमेश्वर बाड़न” (यहोशू अध्याय 2 पद 9 से 11)।

इस्राएल के देरी से खाली स्थानीय लोग के बीच डर आ दहशत फैले के समये ना मिलल, बलुक एहसे अनन्त नतीजा भी पैदा भइल। राहाब, जे एगो मूर्तिपूजक गैर-यहूदी मेहरारू रहली, एह नतीजा पर पहुँचली कि इब्रानी लोग के परमेश्वर ही सच्चा परमेश्वर बाड़न। उहाँ उहाँ के सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रूप में पहचानली, आ एहसे ऊ भेदी लोग के मदद करे खातिर तैयार भइली। राहाब आज स्वर्ग में बाड़ी काहेकि इस्राएल के ओह देश में पहुँचल दू बरिस खातिर रोकल गइल। राहाब के उद्धार निश्चित रूप से ओह इंतजार के लायक रहे। कनान में

अउरी कतना लोग राहाब जइसन एह नतीजा पर पहुँचल होई आ अपना मूर्ति छोड़के एकमात्र सच्चा परमेश्वर के सेवा करे लागल होई? एह सवाल के जवाब खाली अनन्तकाल बताई।

परमेश्वर जीवन के चुनौती के इस्तेमाल करेलन।

काहेकि परमेश्वर सार्वभौम बाड़न, मतलब सर्वशक्तिमान बाड़न, एहसे उहाँ ओह परिस्थिति के भी इस्तेमाल कर सकेलन जवन उहाँ खुद ना बनवले होखसु, आ ओकरा के अपना लोग के भलाई खातिर काम में लगा सकेलन। कनान के ओर इस्राएल के यात्रा के विवरण हमनी के देखावेला कि परमेश्वर ई कइसे करेलन। एह तीन बातन पर ध्यान दीं।

परीक्षा में विश्वास मजबूत हो सकेला।

जब इस्राएल लाल समुंदर पार कर गइल, त ऊ लोग तीन दिन तक मरुभूमि में चलत रहल आ उनकरा के पानी ना मिलल। आखिर में ऊ लोग मारा नाँव के जगह पर पहुँचल, बाकिर उहाँ के पानी पीए लायक ना रहे। मूसा मदद खातिर प्रभु के ओर मुड़लन, आ परमेश्वर उहाँ के निर्देश दिहलन कि एगो पेड़ के डाली ओह कड़ुआ पानी में डाल दीं। उहाँ आज्ञा मानलन आ ऊ पानी पीए लायक हो गइल (निर्गमन अध्याय 15 पद 22 से 26)।

परमेश्वर ई परिस्थिति पैदा ना कइलन। साफ बा कि परमेश्वर के इच्छा रहे कि इस्राएल लगे पीए लायक पानी होखे, काहेकि जब मूसा उहाँ के निर्देश मानलन, त उहाँ पानी के शुद्ध कर दिहलन। मारा के पानी पीए लायक काहे ना रहे? ई खाली एगो अउरी उदाहरण बा कि आदम के पाप कइसे अइसन शाप लियाइल जे धरती के जीवन के बिगाड़ दिहलस।

परमेश्वर अपना लोग के उहाँ पहुँचे से पहिले ही ओह पानी के मीठ बना सकत रहलन, बाकिर उहाँ अइसन ना कइलन काहेकि उहाँ ओह परिस्थिति के इस्राएल के फायदा खातिर इस्तेमाल करे के एगो रास्ता देखलन। आगे ओह देश में इब्रानी लोग के सामने गढ़वाला शहर आ ताकतवर दुश्मन खड़ा रहे। अपना देश में घुसे आ ओकरा पर अधिकार करे खातिर उनकरा परखल आ सिद्ध विश्वास के जरूरत रहे।

मारा के कड़ुआ पानी इब्रानी लोग के अपना विश्वास के इस्तेमाल करे आ ओकरा के मजबूत करे के मौका दिहलस। उनकरा लगे ई क्षमता विकसित करे के मौका रहे कि ऊ देखल चीज से ना, विश्वास से चले आ पूरा भरोसा से कह सके: "हमनी के पानी चाहीं आ हमनी के ना पता कि ई कइसे मिली। बाकिर हमनी चिंतित नइखी। परमेश्वर प्रबंध करिहें!"

परीक्षा में धीरज मजबूत हो सकेला।

पाप से शापित धरती पर जीवन के प्रकृति के कारण, हमनी के जीवन के परेशानी से हमेशा तुरंते छुटकारा ना मिलेला। एहसे, हमनी के विजय मिले तक डटल रहे के लायक होखे के चाहीं। एही धीरज के मतलब बा—परिस्थिति जइसन भी दिखाई दे, मजबूत बनल रहना।

कुछ लोग गलत तरीका से मानेला कि परेशानी हमनी के धीरजवान बनावेला। बाकिर परीक्षा सहन करे के क्षमता पैदा ना करेला, ठीक ओइसहीं जइसे खाली व्यायाम खुदे मांसपेशी पैदा ना करेला। बलुक, जीवन के चुनौती हमनी के मौका देला कि हम परमेश्वर के ओह सामर्थ्य के, जे हमनी के भीतर बा, इस्तेमाल करके सहन करे के अपनी क्षमता के काम में लाई, आ एहसे हमार धीरज या सहनशीलता अउरी मजबूत हो जाला। ई ओह तरीका में से एगो बा जेकरे द्वारा परमेश्वर एह जीवन के कठिनाई के इस्तेमाल करेलन।

"ई बात निश्चित रूप से जान ल आ समझ ल कि तोहार विश्वास के परीक्षा आ परख धीरज, स्थिरता आ सहनशीलता के प्रकट करेला" (याकूब अध्याय 1 पद 3)।

जब तू परेशानी के सामने विश्वास आ धीरज देखावेल आ परमेश्वर के वचन पर मजबूती से खड़ा रहेल, तब परमेश्वर के सामर्थ्य तोहरा के तबले मजबूत बनवले रखेला जबले तू उहाँ के प्रबंध आ छुटकारा के अनुभव ना कर लेत। एगो क्षेत्र में सफलतापूर्वक डटल रहला से तोहरा ई भरोसा मिलेला कि परमेश्वर के मदद से तू जीवन के अगिला चुनौती के भी सह सकत।

तू ना जानेल कि एह जीवन के यात्रा में आगे का आवे वाला बा। तोहार वर्तमान परिस्थिति में विश्वास आ धीरज के साथ चले के जवन अभ्यास हो रहल बा, उहे शायद अगिला बड़ा

कठिनाई पर विजय पाए खातिर ठीक ओही चीज होखे जवन तोहरा के जरूरत पड़ी। इब्रानी लोग के साथ एही भइल।

परीक्षा में कमी उजागर हो सकेला।

इस्राएल मारा में अपना विश्वास आ धीरज के इस्तेमाल करे के मौका खो दिहलस। एकरा बदले, ऊ लोग पीए लायक पानी के कमी पर शिकायत करे लागल। "तब लोग मूसा के खिलाफ कुड़कुड़ाइल आ कहलस, 'हमनी का पीब?'" (निर्गमन अध्याय 15 पद 24)।

परीक्षा अक्सर हमार चरित्र के कमी के उजागर कर देला, ठीक ओइसहीं जइसे मारा के कड़ुआ पानी इस्राएल के कमी के उजागर कइलस। जब कमी उजागर हो जाला, तब ओकरा से निपटल जा सकेला। ई एगो अउरी तरीका बा जेकरे द्वारा परमेश्वर ओह कठिनाई के इस्तेमाल करेलन जवन उहाँ खुद पैदा ना कइलन। मारा के घटना उहाँ के लोग खातिर अपना कुड़कुड़ाहट के पहिचाने आ ओकरा से निपटे के बढ़िया मौका रहे। दुख के बात बा कि इस्राएल ना त अपना पाप के स्वीकार कइलस आ ना ओकरा से निपटलस। ऊ लोग कनान तक पूरा रास्ता शिकायत करत रहल।

शिकायत करना एगो गंभीर दोष बा काहेकि ई अविश्वास के आवाज बा। शिकायत खाली ओही बात कहेला जवन ऊ देखेला आ महसूस करेला। ई परमेश्वर के पिछला मदद, आज के प्रबंध, आ आवे वाला प्रतिज्ञा के ध्यान में ना रखेला। इस्राएल के लगातार कुड़कुड़ाहट उनकर विश्वास के ओह बात में मजबूत कइलस जवन उनकर आँख बतावत रहे, ना कि ओह बात में जवन परमेश्वर कहलन। जबले इस्राएल कनान पहुँचल, तबले उनकरा में परमेश्वर के वचन के कम महत्व देवे आ अपनी परिस्थिति के मूल्यांकन खाली ओही आधार पर करे के आदत बन गइल रहे जवन ऊ देख सकेलन। अविश्वास के एह आदत उनकरा से प्रतिज्ञा के देश छीन लिहलस।

जब इस्राएली कनान के सीमा पर पहुँचल, त मूसा ओह देश के जाँच करे खातिर बारह भेदी भेजलन। उनकरा में से दू गो के छोड़के सभे एगो डरावन रिपोर्ट लेके लवटल कि उहाँ विशाल दीवार आ दैत्य जइसन योद्धा बाड़ें।

एहसे इस्राएल के पूरा जाति सीमा पार करे से मना कर दिहलस, हालाँकि परमेश्वर उनकरा के दुश्मन पर विजय के वादा कइले रहलन। ऊ लोग ओह देश के खो दिहलस जवन परमेश्वर चाहत रहलन कि ऊ लोग पावे।

शायद तू ई सोचत होखब कि हम ओह लोग के चर्चा काहे करत बानी जे अपना जीवन में परमेश्वर के इच्छा के पूरा होत ना देख पवलस। साँचाई ई बा कि हम उनकर गलती से सीख सकेनी। परमेश्वर इस्राएल के यात्रा के विवरण एह उद्देश्य से भी लिखववलन कि हम उहे गलती फेर से ना दोहराईं।

“ई सभ बात उनकर साथ उदाहरण के रूप में भइल आ हमनी खातिर चेतावनी के रूप में लिखल गइल, जवन लोग पर युग के परिपूर्णता आ चुकल बा” (1 कुरिन्थियों अध्याय 10 पद 11)।

अगिला भाग में, हम चर्चा करब कि हम इस्राएल के असफलता से कइसे बच सकीले आ कठिनाई के प्रति अइसन प्रतिक्रिया कइसे दे सकीले जवन एह पाप से शापित धरती पर परमेश्वर जब काम करत बाड़न, त उहाँ के मदद खातिर दरवाजा खोल दे।

भाग दो

हमनी के का करे के चाहीं आ काहे?

सही प्रतिक्रिया

हम परमेश्वर के बारे में "काहे" आ "का" के सवालन के सफलतापूर्वक जवाब दे चुकल बानी। अब हमनी के एह सवालन के अपना बारे में समझे के बा। पाप से बिगड़ल एह संसार के चुनौती के रोशनी में, हमनी के का करे के चाहीं आ काहे?

जइसे हम पिछला भाग में चर्चा कइनी, परमेश्वर चाहत बाड़न कि जब उहाँ अनन्तकाल खातिर अपना परिवार के एकजुट करत बाड़न, तब उहाँ अपना खातिर सबसे जादे महिमा आ जतना जादे लोग खातिर संभव हो सके ओतना जादे भलाई पैदा करसु। हम सीख सकेनी कि जीवन के कठिनाई के सामना परमेश्वर के साथ मिलके कइसे करी, जब उहाँ एह उद्देश्य के पूरा करे खातिर काम करत बाड़न।

आनन्द के साथ प्रतिक्रिया कर।

बाइबल साफ-साफ निर्देश देला कि विपत्ति के सामना करत समय हमनी के का करे के चाहीं। याकूब अध्याय 1 पद 2 कहेला, "हे हमार भाई लोग, जब रउआ तरह-तरह के परीक्षा में पड़ जाईं या घिर जाईं, त ओकरा के पूरा आनन्द के बात समझीं।"

जब जीवन के परीक्षा हमनी के सामने आवेला, त परमेश्वर के वचन हमनी के निर्देश देला कि ओकरा के आनन्द मनावे के मौका के रूप में देखीं। आनन्द मनावे के मतलब बा परमेश्वर के स्तुति करना।

किसी के स्तुति करे के मतलब बा ओकर गुण आ ओकर काम के घोषणा करना। हम कई बरिस तक हाई स्कूल में इतिहास पढ़वनी। समय-समय पर कवनो विद्यार्थी अइसन चरित्र या पढ़ाई के उपलब्धि देखावत रहे जे हमार प्रशंसा के योग्य रहे। हमार प्रशंसा के हमार भावनात्मक अनुभव से कवनो संबंध ना रहे—ना एह बात से कि हमार मन ठीक बा या खराब, आ ना एह बात से कि हमार जीवन ठीक चल रहल बा कि ना। हम ओह विद्यार्थी के सराहना एहसे करत रहीं काहेकि ऊ सही बात रहे। ओइसहीं, प्रभु के स्तुति करना हमेशा सही बा—काहेकि उहाँ जवन बाड़न आ जवन करेलन।

परमेश्वर के स्तुति जीवन के कठिनाई के प्रति खाली भावनात्मक प्रतिक्रिया ना ह। ध्यान दीं कि ऊपर लिखल पद ई ना कहेला कि हमनी के आनन्द महसूस करे के बा। मनुष्य खातिर ई स्वाभाविक रूप से संभव ना बा कि कवनो बुरी परिस्थिति के सामना करके अच्छा महसूस करे। बाकिर तू आनन्द मना सकताड़, चाहे तोहरा के आनन्द महसूस ना होत होखे। अपना जीवन के बहुत विपत्ति आ परीक्षा के बारे में प्रेरित पौलुस कहलन कि ऊ "दुखी होत घरी भी हमेशा आनन्दित" रहलन (2 कुरिन्थियों अध्याय 6 पद 10)।

जब लोगन से कहल जाला कि ऊ क्लेश के सामने आनन्द मनावसु, त कई बेर ऊ विरोध करेला। उनकरा लागेला कि अइसन प्रतिक्रिया अस्वाभाविक बा या शायद मूर्खतापूर्ण भी। बाकिर आनन्द मनावल निश्चित रूप से सही बात बा, काहेकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर खुद हमनी के स्तुति के साथ प्रतिक्रिया करे के निर्देश देत बाड़न। अगर हम स्तुति के उद्देश्य आ सामर्थ्य के समझ लीं, त ई खाली आज्ञा माने के काम ना रही, बलुक पूरी तरह सही भी लगी।

स्तुति रास्ता तैयार करेला।

परमेश्वर के आत्मा भजनकार दाऊद के एह रोचक शब्द लिखे खातिर प्रेरित कइलन: "नन्हका लइकन आ दूध पिए वाला बच्चन के मुँह से तू अपना विरोधियन के कारण सामर्थ्य ठहरवले बाड़ऽ, ताकि दुश्मन आ बदला लेवे वाला के चुप करा सके" (भजन संहिता अध्याय 8 पद 2)।

एह पद के मुताबिक, अइसन एगो सामर्थ्य बा जे विरोधी के रोक सकेला। एतना तक कि नन्हका लइका आ दूध पिए वाला बच्चा भी एह सामर्थ्य के प्रकट कर सकेला।

यीशु एह सामर्थ्य के परमेश्वर के स्तुति के रूप में पहचानलन। अपना क्रूस पर चढ़ावल जाए से कुछ दिन पहिले, जब उहाँ यरूशलेम के मंदिर में रहलन, त उहाँ बहुत अन्हर आ लंगड़ा लोग के चंगा कइलन। कुछ बच्चा ई चंगाई देखलस आ चिल्लाए लागल, "दाऊद के बेटा के होशाना!" (मत्ती अध्याय 21 पद 9)। "होशाना" के मतलब बा, "हे प्रभु, बचा।" ई आराधना आ स्तुति के पुकार रहे। ओह दिन ई बच्चा यीशु के द्वारा प्रकट भइल परमेश्वर के अद्भुत काम खातिर उहाँ के स्तुति करत रहल।

महायाजक आ मूसा के व्यवस्था के शिक्षक लोग बहुत क्रोधित हो गइल आ यीशु के चुनौती देके पूछलस, "का तू सुनताड़ कि ई बच्चा लोग का कहत बा?" (मत्ती अध्याय 21 पद 16)। उहाँ उनका के दाऊद के शब्द उद्धृत करके जवाब दिहलन: "का रउआ कबो ना पढ़नी, 'नन्हका लइकन आ दूध पिए वाला बच्चन के मुँह से तू स्तुति सिद्ध कइले बाड़ऽ'" (मत्ती अध्याय 21 पद 16)।

ध्यान दीं कि यीशु दाऊद के भजन में इस्तेमाल भइल "सामर्थ्य" शब्द के "स्तुति" से बदल दिहलन। अपना विरोधियन के दिहल एह जवाब से यीशु साफ कर दिहलन कि परमेश्वर के स्तुति ही ऊ सामर्थ्य बा जे दुश्मन के रोकेला आ बदला लेवे वाला के चुप करा देला।

एक अउरी भजनकार लिखलन, "जे कोई स्तुति के बलिदान चढ़ावेला, ऊ हमार महिमा करेला" (भजन संहिता अध्याय 50 पद 23), "आ ऊ रास्ता तैयार करेला ताकि हम ओकरा के परमेश्वर के उद्धार देखाईं" (भजन संहिता अध्याय 50 पद 23)।

जब तू विपत्ति के सामने परमेश्वर के स्वीकार करेल आ उहाँ के स्तुति करेल—ई बतावत कि उहाँ के हउवन, उहाँ का कइले बाड़न, अब का करत बाड़न, आ आगे का करिहें—तब तू परमेश्वर के महिमा करेल आ उहाँ खातिर तोहार परिस्थिति में अपना सामर्थ्य प्रकट करे के रास्ता खोल देल।

स्तुति प्रभु के महिमा करेला काहेकि ई उहाँ के आदर करेला। स्तुति परमेश्वर के सामर्थ्य खातिर दरवाजा खोल देला काहेकि जब तू उहाँ के मदद आ प्रबंध देखे से पहिले ही उहाँ के स्वीकार करेलऽ आ धन्यवाद देल, तब तू विश्वास प्रकट करताड़। आ परमेश्वर हमार जीवन में अपना अनुग्रह के द्वारा हमार विश्वास के माध्यम से काम करेलन।

पवित्रशास्त्र में अइसन कई उदाहरण दर्ज बा जहाँ लोग कवनो दिखाई देवे वाला कारण से पहिले ही परमेश्वर के स्तुति कइलस आ अद्भुत नतीजा देखलस। आईं एह में से दू घटना पर विचार करीं—एगो प्रेरित पौलुस से जुड़ल आ दोसरा राजा यहोशापात से।

पौलुस आ सीलास: स्तुति के द्वारा छुटकारा।

पौलुस आ उहाँ के सहकर्मी सीलास मकिदुनिया के शहर फिलिप्पी में मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार के सुसमाचार प्रचार करत रहलन। जब उनकर सामना एगो अइसन दासी लड़की से भइल जे दुष्टात्मा से ग्रस्त रहली, त पौलुस दुष्टात्मा के निकल जाए के आज्ञा देके ओकरा के आजाद करा दिहलन। ओह लड़की के मालिक लोग बहुत क्रोधित हो गइल काहेकि ऊ लोग ओकर दुष्टात्मा से प्रेरित भविष्यवाणी करे के क्षमता से धन कमावत रहल। ऊ लोग शहर के अधिकारी लोग से शिकायत कइलस, जे पौलुस आ सीलास के गिरफ्तार कर लिहलस, बुरी तरह पिटवलस, आ फिलिप्पी के जेल के अन्हार कोठरी में बेड़ी में डाल दिहलस। बाइबल कहेला: “आधी रात के समय पौलुस आ सीलास प्रार्थना करत रहलन आ परमेश्वर के भजन गावत रहलन; आ कैदी लोग उनकरा के सुनत रहल” (प्रेरितन के काम अध्याय 16 पद 25)।

अचानक एगो बड़ा भूकंप आ गइल। जेल के दरवाजा खुल गइल आ सभे के बेड़ी खुल गइल। एह घटना से जेल के रखवाला एतना प्रभावित भइल कि ऊ पौलुस आ सीलास से विनती

कइलस कि ऊ बतावसु कि अपना पाप से उद्धार पाए खातिर ओकरा का करे के चाहीं। पौलुस अइसन कइलन, आ ऊ आदमी, ओकर परिवार, आ ओकर पूरा घराना यीशु के उद्धारकर्ता आ प्रभु के रूप में स्वीकार कर लिहलस। परंपरा बतावेला कि ई जेलर बाद में फिलिप्पी में स्थापित कलीसिया के पास्टर बनल।

ध्यान दीं कि इहाँ का भइल। पौलुस आ सीलास प्रचार करत रहलन—प्रभु के काम करत रहलन—जब ऊ लोग एगो लड़की के शैतान के बंधन से आजाद कइलस। एह धर्मी काम के बदला में उनकरा के कठोर मार आ जेल मिलल। फिरो, ऊ लोग परमेश्वर के स्तुति करके आनन्द मनावे के चुनाव कइलस। काहे? का एहसे कि उनकर मन करत रहे? एहन संभावना बहुत कम बा। ऊ लोग परमेश्वर के स्तुति एहसे कइलस काहेकि ऊ पवित्रशास्त्र से जानत रहलन कि प्रभु के स्तुति करना हमेशा सही बा।

“हम हर समय प्रभु के धन्य कहब; उहाँ के स्तुति लगातार हमार मुँह में रही” (भजन संहिता अध्याय 34 पद 1)।

“काश लोग प्रभु के भलाई खातिर, आ मनुष्यन के सन्तान खातिर उहाँ के अद्भुत कामन खातिर उहाँ के स्तुति करसु” (भजन संहिता अध्याय 107 पद 15)।

“सूरज उगे से लेके सूरज डूबे तक प्रभु के नाम के स्तुति होखे के चाहीं” (भजन संहिता अध्याय 113 पद 3)।

“आधी रात में हम तोहार धर्मी न्याय के कारण तोहरा के धन्यवाद देवे खातिर उठब” (भजन संहिता अध्याय 119 पद 62)।

उनकर स्तुति के नतीजा का भइल? परमेश्वर के आदर मिलल आ पौलुस आ सीलास उहाँ खातिर अइसन रास्ता तैयार कइलन जवना में उहाँ अपना उद्धार उनकरा के दिखा सकलन। साँचो के बुराई—अन्याय से भइल जेल—साँचो के भलाई में बदल गइल। प्रेरित आ उहाँ के सहकर्मी जेल से आजाद भइलन, आ जेल के रखवाला एगो कलीसिया के अगुवा बन गइल।

यहोशापात आ यहूदा: स्तुति के द्वारा विजय।

तीन दुश्मन सेना यहूदा के राजा यहोशापात के खिलाफ आ गइल, जे इस्राएल के दक्षिणी राज्य के राजा रहलन। यहोशापात आ उहाँ के लोग संख्या में बहुत कम रहल। उनकरा समझ में ना आवत रहे कि का करीं, एहसे ऊ परमेश्वर से मदद माँगलन। परमेश्वर अपना भविष्यद्वक्ता के द्वारा उनकरा से बात कइलन आ मदद के वादा कइलन। अगिला दिन, जब ऊ लोग युद्ध के तैयारी करत रहल, त यहोशापात अपना लोग के हिम्मत दिहलन कि परमेश्वर के कहल बात पर विश्वास करसु आ मजबूती से डटल रहसु।

“लोगन के अगुवा लोग से सलाह-मशविरा करे के बाद, राजा गवैया लोग के नियुक्त कइलन कि ऊ सेना के आगे-आगे चलसु, प्रभु खातिर गावसु आ उहाँ के पवित्र महिमा खातिर स्तुति करसु। ऊ ई गावत रहलन: ‘प्रभु के धन्यवाद कर; काहेकि उहाँ के अटल प्रेममयी करुणा हमेशा बनी रहेला’” (2 इतिहास अध्याय 20 पद 21)।

का एह लोग के मन परमेश्वर के स्तुति करे के रहे? शायद ना। जवन ऊ लोग अपनी आँख से देख सकत रहे, ओकर हिसाब से त ऊ विनाश के किनारा पर रहल—बहुत बड़ी सेना से कुचलल जाए वाला रहल। निश्चित रूप से उनकरा ओही डर महसूस भइल होई जवन हम कवनो ताकतवर दुश्मन के सामने महसूस करीला। फिरो, ऊ लोग आनन्द मनावे के चुनाव कइलस, आ उनकर एह प्रतिक्रिया से छुटकारा के रास्ता खुल गइल।

“जवन घड़ी ऊ लोग गाना आ स्तुति शुरू कइलस, ओही घड़ी प्रभु अम्मोन, मोआब आ सेईर पहाड़ के सेना के आपस में लड़ाई करा दिहलन। … जब यहूदा के सेना जंगल के ओह निगरानी वाला जगह पर पहुँचल, त जतना दूर नजर जात रहे, जमीन पर लाशे लाश पड़ल रहे। दुश्मन में से एगो भी ना बचल रहे” (2 इतिहास अध्याय 20 पद 22 से 24)।

एह घटना में जवन भइल, ओकरा पर ध्यान दीं। यहोशापात आ यहूदा संख्या में बहुत कम रहल, फिरो ऊ लोग परमेश्वर के मदद के वचन पर विश्वास कइलस। जब ऊ लोग युद्ध खातिर आगे बढ़ल, त ऊ लोग अपना सेना के आगे लोग के भेज के परमेश्वर के भलाई आ

उहाँ के अद्भुत काम के घोषणा करवाके अपना विश्वास प्रकट कइलस। नतीजा का भइल? ओह दिन यहूदा अद्भुत विजय पवलस। उनकर महान विजय सैनिक ताकत से ना, बलुक स्तुति के द्वारा आइल। पवित्रशास्त्र कहेला, "काहेकि प्रभु उनकरा के उनकर दुश्मन पर आनन्दित कइलन" (2 इतिहास अध्याय 20 पद 27)। ऊ लोग अपना दुश्मन के स्तुति के द्वारा हरा दिहलस।

स्तुति परमेश्वर खातिर अपना उद्धार देखावे के रास्ता तैयार कइलस। स्तुति दुश्मन के रोक दिहलस आ बदला लेवे वाला के चुप करा दिहलस। आ परमेश्वर के महिमा भइल, काहेकि जब आसपास के राज्यन सुनलन कि उहाँ इस्राएल खातिर का कइलन, त उनकरा पर प्रभु के भय आ विस्मय छा गइल।

शिकायत के इलाज।

स्तुति खाली परमेश्वर के महिमा ना करेला आ उहाँ के सामर्थ्य खातिर दरवाजा ना खोलेला, बलुक ई शिकायत करे के विनाशकारी आदत के इलाज भी बा।

शिकायत असंतोष के प्रकट करेला। ई कृतज्ञता के ठीक उल्टा बा। जब हम जीवन के परीक्षा के सामना करीला, त हमनी में से बहुत लोग एह बारे में बात करे लागेला कि हमार लगे का नइखे आ का सही ना चल रहल बा। फेर हम अपनी परिस्थिति के बारे में शिकायत के लंबा सूची लेके परमेश्वर लगे जानी आ अपनी प्रार्थना के आखिर में "कृपया हमार मदद करीं" जोड़ देनी। बाकिर जब हम शिकायत करीला, तब हम स्वर्ग के भाषा ना बोलतानी।

स्वर्ग में खाली धन्यवाद के भाषा बोलल जाला।

शिकायत सच में अउरी परेशानी ले आवेला। का तोहरा मिस्र से कनान जात इस्राएली लोग याद बा? ऊ लोग अपना सामने आवे वाला बहुत चुनौती पर कुड़कुड़ाइल आ अपना ऊपर विनाश ले आइल (गिनती अध्याय 21 पद 4 से 6)। बाइबल हमनी के चेतावनी देला कि हम उहे गलती फेर से ना करीं। "आ असंतोष से कुड़कुड़इब मत, जइसे उनकरा में से कुछ लोग

कइलस आ विनाश करे वाला [मौत] के द्वारा नष्ट कर दिहल गइल" (1 कुरिन्थियों अध्याय 10 पद 10)।

परमेश्वर के स्तुति शिकायत के जवाब बा। हर परिस्थिति में धन्यवाद देवे खातिर हमेशा कुछ ना कुछ जरूर होला—ओह भलाई खातिर भी जवन हम देख सकीला, आ ओह भलाई खातिर भी जवन हम अभी ले ना देख पवनी।

कनान के कठिन यात्रा में इस्राएल के सन्तान लोग बहुत चुनौती के सामना कइलस, फिरो उनकर पूरा यात्रा के दौरान धन्यवाद देवे खातिर बहुत कुछ रहे। ऊ लोग मिस्र के गुलामी से अपना महान छुटकारा खातिर परमेश्वर के स्तुति कर सकत रहे। ऊ लोग ओह अद्भुत देश खातिर परमेश्वर के धन्यवाद दे सकत रहे जहाँ उहाँ उनकरा के ले जात रहलन। ऊ लोग भोजन, पानी, मार्गदर्शन आ सुरक्षा खातिर आनन्दित हो सकत रहे जवन परमेश्वर मरुभूमि के जंगल से गुजरत समय दिहलन। बाकिर एकरा बदले, ऊ लोग शिकायत कइलस।

तू आ हम भी, चाहे हम कवनो परिस्थिति में होखी, धन्यवाद देवे खातिर बहुत कुछ रखतानी। हम परमेश्वर के स्तुति कर सकीला कि उहाँ हमनी के अन्हार के राज्य से छुड़ाके मसीह में विश्वास के द्वारा अपना बेटा या बेटी बना दिहलन। हम उहाँ के धन्यवाद दे सकीला कि स्वर्ग में हमनी खातिर एगो सुंदर घर तैयार बा। हम आनन्दित हो सकीला कि परमेश्वर हमनी के साथ बाड़न आ हमनी के पक्ष में बाड़न, आ जइसे उहाँ इस्राएल के साथ कइलन, ओइसहीं उहाँ हमनी के तबले संभाले रखिहें जबले पूरी तरह बाहर ना निकाल देहें।

का आ काहे।

जब क्लेश हमनी के सामने आवेला, त हमनी के का करे के चाहीं? हमनी के ओकरा के पूरा आनन्द के बात समझे के चाहीं, मतलब ओकरा के परमेश्वर के प्रति स्तुति आ धन्यवाद के साथ प्रतिक्रिया देवे के मौका माने के चाहीं।

हमनी के अइसन काहे करे के चाहीं?

- प्रभु के स्तुति करना हमेशा सही बा, चाहे हमार जीवन में कुछो होत होखे।
- स्तुति परमेश्वर के महिमा आ आदर करेला।
- स्तुति दुश्मन के रोक देला आ बदला लेवे वाला के चुप करा देला।
- स्तुति परमेश्वर खातिर अपना उद्धार हमनी के देखावे के रास्ता तैयार करेला।

विपत्ति के सामने हम हिम्मत के साथ परमेश्वर के भलाई आ मनुष्यन के सन्तान खातिर उहाँ के अद्भुत कामन के घोषणा कर सकीला। हम ओह सभ खातिर कृतज्ञ हो सकीला जवन परमेश्वर पहिले से कर चुकल बाड़न, जवन अभी करत बाड़न, आ जवन आगे करिहें। हर परिस्थिति में, शिकायत करे के बदले, हम आनन्द मनावे के चुनाव कर सकीला।

अगर जीवन के परीक्षा के प्रति तोहार नजरिया सही ना होई, त जब कठिनाई आई, तब प्रभु के धन्यवाद देल आ उहाँ के स्तुति कइल मुश्किल हो सकेला। अगिला अध्याय में हम एह विषय पर विचार करब।

10

कठिनाई सभ के प्रति सही नजरिया

ई बहुत जरूरी बा कि हम जीवन के कठिनाई के अनन्तकाल के नजरिया से देखे के सीखीं। जब अनन्त नजरिया हो जाला, त चाहे कुछो होखे, आनन्दित रहला आसान हो जाला। अनन्तकाल के तुलना में, पूरा जीवन भर के दुखो बहुत छोट बात बा। स्वर्ग में केहू अपना धरती के जीवन में जवन-जवन बात के सामना कइलस, ओकरा खातिर रोवत नइखे।

हम लोग के असली दर्द आ दुख के छोट करके ना देखतानी। हम खाली कठिनाई के सही नजरिया में रखतानी ताकि जीवन के विपत्ति के बोझ कुछ हल्का हो सके।

एह अध्याय में, हम पौलुस, यूसुफ आ मूसा के नजरिया पर विचार करे चाहत बानी। बहुत चुनौती के सामना करे के बावजूद, उनकर नजरिया उनकरा के परमेश्वर के स्तुति करे में मदद कइलस। आ हर आदमी देखलस कि परमेश्वर उनकर परिस्थिति में सामर्थ्य से कइसे काम कइलन आ बुराई में से भलाई कइसे पैदा कइलन।

पौलुस के नजरिया।

प्रेरित पौलुस अपना जीवन के अनन्तकाल के नजरिया से देखत रहलन, जवना से उहाँ खातिर जेल में भी आनन्दित रहना संभव भइल। उहाँ ई शब्द लिखलन:

“काहेकि हमार हल्का आ थोड़े समय के क्लेश हमनी खातिर अइसन अनन्त महिमा पैदा करत बा जे सभ से कहीं जादे महान बा। एहसे हम अपनी नजर देखल चीज पर ना, बलुक अनदेखल चीज पर लगवले बानी; काहेकि जवन दिखाई देला ऊ थोड़े समय खातिर बा, बाकिर जवन दिखाई ना देला ऊ अनन्त बा” (2 कुरिन्थियों अध्याय 4 पद 17 से 18)।

पौलुस के ई नजरिया उहाँ के एतना कठिनाई, सताव आ क्लेश, जवन उहाँ सहलन, ओकरा के “थोड़े समय के” आ “हल्का” कहे लायक बनावत रहे। एकर मतलब ई ना कि पौलुस ओकरा से खुश रहलन या ओकर मजा लेत रहलन। एकर मतलब ई बा कि उहाँ के परेशानी उहाँ पर बोझ ना बनत रहे, काहेकि अनन्तकाल के तुलना में ऊ बहुत छोट रहे। पौलुस समझत रहलन कि धरती पर उहाँ के जीवन उहाँ के अस्तित्व के बहुत छोट हिस्सा बा आ उहाँ के परेशानी हमेशा ना रहे वाली। एह नजरिया से उहाँ के जीवन के दर्द के सही जगह पर रखे में मदद मिलल।

ध्यान दीं कि पौलुस कहलन कि उहाँ अपना ध्यान अपनी परिस्थिति पर ना, बलुक ओह बात पर लगवले रहलन जवन उहाँ देख ना सकत रहलन। उहाँ अइसन पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के भलाई आ उहाँ के काम के बारे में लिखल वचन के याद करके कइलन। पौलुस जानत रहलन कि परमेश्वर के अदृश्य राज्य, अपना पूरा सामर्थ्य आ प्रबंध के साथ, ओह सभ से जादे स्थायी बा जवन उहाँ देख सकत रहलन, आ आखिर में उहे सब कुछ बदल दी। एहसे उहाँ अपना जीवन के नजरिया एह महान सच्चाई पर टिकवले रहलन।

पौलुस अब स्वर्ग में प्रभु के साथ अनन्त जीवन के आशीष के आनन्द लेत बाड़न। उहाँ ओह बरिसन के बहुत पहिले भुला चुकल बाड़न जवन उहाँ जेल में बितवलन, ऊ मार जवन उहाँ सहलन, आ जहाज डूबे के घटना जवन उहाँ झेललन। एक दिन अइसने तोहरा आ हमारो खातिर आई—अइसन दिन जब जवन कुछ हम अभी अनुभव करतानी, ओकर कवनो महत्व ना रही। जवन आनन्द हमार इंतजार करत बा, ऊ जीवन के घाव मिटा दी। अपनी कठिनाई के अनन्तकाल के रोशनी में देखला से हमनी के, चाहे हम का देखीं या का महसूस करीं, परमेश्वर के स्तुति करे में मदद मिलेला।

पौलुस ई बात भी जानत रहलन कि सुसमाचार के प्रचार करत समय जवन दुख उहाँ सहलन, ऊ अनन्त नतीजा पैदा करत रहे। उहाँ के सेवा के द्वारा बहुत लोग मसीह में विश्वास

कइलस। एह जागरूकता से उहाँ के अपनी कठिनाई के प्रति सही नजरिया बनवले रखे में मदद मिलल। ऊ दुख ओह नतीजा के कारण सहला लायक रहे। एह ज्ञान से पौलुस के बहुत चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में भी आनन्दित रहे में मदद मिलल।

तू शायद सोचत होखब कि पौलुस के जीवन में अनन्त नतीजा रहल काहेकि ऊ महान प्रेरित रहलन, बाकिर तोहार जीवन कबो उहाँ जइसन ना हो सके। परमेश्वर तोहरा से पौलुस के जीवन के नकल करे के उम्मीद ना करेलन। उहाँ उम्मीद करेलन कि तू उहे जीवन जीअ जे तोहरा के दिहल गइल बा। बाइबल साधारण लोगन के उदाहरण से भरल बा जे जीवन के सामान्य आ कठिन काम पूरा कइलस। आ एह पूरा समय परमेश्वर पर्दा के पीछे काम करत रहलन ताकि अनन्त नतीजा पैदा होखे। एगो उदाहरण पर विचार कर।

योनातान के तीर उठावे वाला सेवक।

जब दाऊद अपना मशहूर लड़ाई में गोलियत के मार दिहलन, त राजा शाऊल दाऊद के अपना घर में रहे खातिर बुला लिहलन। बाकिर शाऊल, जे दाऊद के सफलता आ बढ़त लोकप्रियता से लगातार जलत रहलन, उहाँ के मार डाले के ठान लिहलन। दाऊद अपना जान बचावे खातिर भाग गइलन। शाऊल के बेटा योनातान दाऊद के खोज के मिललन आ कहलन कि उनकरा विश्वास बा कि उनकर पिता दाऊद के कवनो नुकसान ना पहुँचावे चाहत। दुनु मिलके राजा के असली इरादा जाने खातिर एगो योजना बनवलन। योनातान तय कइलन कि ऊ शाऊल से एह बारे में बात करिहें आ फेर जानकारी दाऊद के बतइहें।

दाऊद के शाऊल से सचमुच खतरा रहे, एहसे ऊ आ योनातान शाऊल के इरादा एगो असामान्य तरीका से बतावे के फैसला कइलन। तय समय पर, योनातान नजदीक के एगो खेत में जइहें जहाँ दाऊद छिपल रहलन आ कुछ तीर चलइहें। अगर योनातान तीर एगो दिशा में चलावत, त ओकर मतलब होत कि शाऊल दाऊद खातिर खतरा नइखन। अगर तीर दोसरा दिशा में जात, त ओकर मतलब होत कि दाऊद के भाग जाए के चाहीं।

योनातान समझ गइलन कि शाऊल दाऊद के मार डाले चाहत रहलन, एहसे उहाँ अपना तीर ओही दिशा में चलवलन जवन ई संदेश देत रहे। अब ओह बात पर ध्यान दीं जवन हमार

अध्ययन खातिर जरूरी बा। योनातान अपना साथ अपना एगो जवान सेवक के तीर उठावे खातिर ले गइलन।

"'दौड़ना शुरू कर,' योनातान ओह लड़िका से कहलन, 'ताकि हम जवन तीर चलाइब, तू ऊ खोज सको।' तब ऊ लड़िका दौड़ल, आ योनातान एगो तीर ओकरा आगे चला दिहलन। जब ऊ लड़िका लगभग ओह तीर तक पहुँच गइल, त योनातान चिल्ला के कहलन, 'तीर अभी तोहरा से आगे बा। जल्दी कर, जल्दी कर, रुक मत।' तब ओह लड़िका जल्दी से तीर उठवलस आ अपना मालिक लगे लौट आइल। ऊ, निश्चय ही, ई ना समझत रहे कि योनातान के मतलब का बा; खाली योनातान आ दाऊद जानत रहलन। फेर योनातान अपना धनुष आ तीर ओह लड़िका के देके कहलन कि ऊ नगर में वापस ले जाए" (1 शमूएल अध्याय 20 पद 36 से 40)।

कितना साधारण आ देखे में बेकार काम रहे—गरम दिन में इधर-उधर दौड़ के एगो धनी राजकुमार के चलावल तीर उठावल। ओह तीर उठावे वाला सेवक के तनिको पता ना रहे कि जवन तीर ऊ उठा रहल बा, ऊ दाऊद तक बहुत जरूरी संदेश पहुँचा रहल बा, या कि ऊ खुद एगो अइसन घटना के हिस्सा बा जवना के अनन्त नतीजा होखे वाला बा। जवन जानकारी ऊ अनजाने में पहुँचवलस, ओहसे दाऊद के जान बचे में मदद मिलल, ताकि ऊ इस्राएल के राजा बन सको, सुलैमान के पिता बन सको, आ ओह वंशावली के आगे बढ़ा सको जवना से आखिर में उद्धारकर्ता यीशु संसार में आवे वाला रहलन।

हमरा पूरा विश्वास बा कि जब तू आ हम स्वर्ग में पहुँचब, त हम अइसन लोग से मिलीं जिनकर अनन्त नियति हमनी के साथ उनकर साधारण जीवन के संपर्क से प्रभावित भइल होई। ठीक योनातान के तीर उठावे वाला सेवक जइसन, हमार रोज के काम भी बेकार आ साधारण लागत हो सकेला। बाकिर अगर हम ई समझ लीं कि जब परमेश्वर अपना परिवार के इकट्ठा करत बाड़न, तब उहाँ पर्दा के पीछे काम करत बाड़न, त ई हमार बोझ हल्का कर दी आ हमार परिस्थिति के दबाव कम कर दी।

ई नजरिया हमनी के—चाहे हम का देखीं—आनन्दित रहे में मदद करी, ठीक ओइसहीं जइसे पौलुस के मदद कइलस।

यूसुफ के नजरिया।

पौलुस जइसहीं, यूसुफो अपना सामने आवे वाली बहुत चुनौती के दौरान परमेश्वर के स्तुति के साथ प्रतिक्रिया दिहलन। जब यूसुफ दास बनके मिस्र पहुँचलन, त पोतीफ़र उहाँ के खरीद लिहलस आ जल्दी ही ऊ देख लिहलस कि परमेश्वर यूसुफ के सफल बना रहल बाड़न। जब यूसुफ बलात्कार के झूठ आरोप में जेल गइलन, त जेल के रखवाला भी देखलस कि परमेश्वर यूसुफ के मदद करत बाड़न (उत्पत्ति अध्याय 39 पद 1 से 4 आ 21 से 23)।

ई दुनु आदमी अपनी आँख से परमेश्वर के ना देख सकत रहलन, फिरो ऊ जान गइलन कि परमेश्वर यूसुफ के मदद करत बाड़न। कइसे? यूसुफ जरूर परमेश्वर के अइसन तरीका से स्वीकार करत रहलन जवन साफ-साफ दिखाई देत रहे। परमेश्वर के स्वीकार करे के मतलब बा उहाँ के स्तुति करना—ई बतावत कि उहाँ के हउवन, उहाँ का कइले बाड़न, का करत बाड़न, आ का करिहें। साफ बा कि यूसुफ पोतीफ़र आ जेलर के सामने परमेश्वर के स्तुति करत रहलन।

हमार हड्डी वापस ले जइह।

यूसुफ लगे भी अनन्तकाल के नजरिया रहे। ऊ समझत रहलन कि जीवन खाली एह जीवन तक सीमित नइखे। एह ज्ञान से उहाँ के ओह बहुत विपत्ति के सामना करे में मदद मिलल जवना से उहाँ गुजरलन।

उनकर परीक्षा शुरू होखे से पहिले परमेश्वर यूसुफ से दू गो प्रतिज्ञा कइले रहलन। परमेश्वर उहाँ से महानता के वादा कइलन आ ई भी प्रतिज्ञा कइलन कि उहाँ के कनान में एगो देश दीहें (उत्पत्ति अध्याय 37 पद 5 से 8; उत्पत्ति अध्याय 35 पद 9 से 12)। परमेश्वर यूसुफ के जीवनकाल में उहाँ के महानता के बुलाहट पूरा कइलन, बाकिर यूसुफ कबो अपना देश वापस रहेला ना गइलन। उहाँ के मौत मिस्र में भइल। अपना मौत से कुछ समय पहिले, यूसुफ अपना परिवार से कहलन कि जब ऊ लोग एक दिन अपना देश वापस जाई, जइसे कि ऊ जानत रहलन कि जरूर जाई, त उहाँ के हड्डियो कनान ले जाए।

"'जल्दी हम मर जाएब,' यूसुफ अपना भाई लोग से कहलन, 'बाकिर परमेश्वर जरूर तोहरा लोग लगे आईहें आ तोहरा लोग के एह मिस्र देश से निकाल के ले जइहें। उहाँ तोहरा लोग के ओह देश में वापस ले जइहें जे उहाँ अब्राहम, इसहाक आ याकूब के वंशज लोग के देवे के कसम खइले बाड़न।' तब यूसुफ इस्राएल के बेटा लोग से कसम खिलववलन आ कहलन, 'जब परमेश्वर तोहरा लोग के कनान वापस ले जइहें, त हमार देहियो अपना साथ ले जइह।' एह तरह यूसुफ एक सौ दस बरिस के उमिर में मर गइलन। लोग उहाँ के देह के सुगंधित चीज से सुरक्षित कइलस आ मिस्र में एगो ताबूत में रख दिहलस" (उत्पत्ति अध्याय 50 पद 24 से 26)।

चार सौ बरिस बाद, जब यूसुफ के परिवार आखिरकार मिस्र से निकलल, त ऊ लोग उहाँ के हड्डियो अपना साथ ले गइल, जइसे उहाँ निर्देश दिहलन। मूसा एह बात के ध्यान रखलन।

"इस्राएली लोग एगो व्यवस्थित सेना जइसन मिस्र से निकलल। मूसा यूसुफ के हड्डी अपना साथ ले गइलन, काहेकि यूसुफ इस्राएल के बेटा लोग से कसम खिलववले रहलन कि जब परमेश्वर ऊ लोग के मिस्र से बाहर ले जइहें—जइसे यूसुफ के पूरा विश्वास रहे—त ऊ लोग उहाँ के हड्डी अपना साथ ले जइहें" (निर्गमन अध्याय 13 पद 18 आ 19)।

यूसुफ समझत रहलन कि उहाँ के नियति उहाँ के मौत पर खत्म ना होई। ऊ जानत रहलन कि एगो दिन अइसन आई जब ऊ फेर से अपना जनमभूमि में जीवित रहिहें। यूसुफ अभी स्वर्ग में बाड़न आ यीशु के दूसरा आगमन पर धरती पर अपना वापसी के इंतजार करत बाड़न। ओह समय, यूसुफ के हड्डी फेर जीवित कइल जाई आ मरे हुअन के पुनरुत्थान में उहाँ के देह फेर उहाँ से मिल जाई। उहाँ के गोड़ सबसे पहिले कनान के धरती पर खड़ा होई, आ एह तरह परमेश्वर के यूसुफ खातिर दूसरी प्रतिज्ञा पूरी होई।

जब हम ई समझ लीं कि जीवन खाली एह जीवन तक सीमित नइखे, त अधूरा सपना के तनाव आ पीड़ा से राहत मिल सकेला। आवे वाला जीवन में सब कुछ ठीक कर दिहल जाई। ई नजरिया हमार बोझ हल्का करेला आ हमार परीक्षा के बीचो-बीच परमेश्वर के स्तुति करना आसान बना देला। जइसे एहसे यूसुफ के मदद मिलल, ओइसहीं हमनी के भी मिली।

मूसा के नजरिया।

एह में कवनो संदेह नइखे कि मूसा स्तुति करे वाला आदमी रहलन। लाल समुद्र पार करे के बाद, उहाँ आ पूरा इस्राएल एकमात्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर के स्तुति गावलन।

“हम प्रभु खातिर गाइब, काहेकि उहाँ महिमा के साथ महान विजय पवले बाड़न; उहाँ घोड़ा आ ओकर सवार दुनु के समुद्र में फेंक दिहलन। प्रभु हमार ताकत आ हमार गीत बाड़न; उहे हमार उद्धार बनल बाड़न। उहे हमार परमेश्वर बाड़न, आ हम उहाँ के स्तुति करब; ऊ हमार पिता के परमेश्वर बाड़न, आ हम उहाँ के महान ठहराइब” (निर्गमन अध्याय 15 पद 1 आउर 2)।

मूसा खाली परमेश्वर के छुटकारा देखला के बादे आनन्द ना मनवलन। उहाँ परमेश्वर के भलाई देखे से पहिले ही उहाँ के घोषणा कइलन।

बाइबल बतावेला कि प्रतिज्ञा के देश के सीमा पर, गढ़वाला शहर आ दानव जइसन आदमी लोग के सामना करत घरी भी, मूसा परमेश्वर के स्वीकार कइलन। मूसा परमेश्वर के पहिले के मदद, अभी के प्रबंध, आ आगे के प्रतिज्ञा के घोषणा कइलन। दोसरा शब्द में, उहाँ परमेश्वर के स्तुति कइलन।

“बाकिर हम (इस्राएल के लोग से) कहलियै, ‘मत डर! तोहार परमेश्वर यहोवा तोहरा आगे-आगे जा रहल बाड़न। ऊ तोहरा खातिर लड़िहें, जइसे तू उहाँ के मिस्र में करत देखले बाड़। आ तू देखले बाड़ कि एह जंगल में तोहार परमेश्वर यहोवा बार-बार तोहार देखभाल कइलन, जइसे पिता अपना बच्चा के देखभाल करेला। अब ऊ तोहरा के एह जगह ले अइले बाड़न’” (व्यवस्थाविवरण अध्याय 1 पद 29 से 31)।

मूसा पवित्रशास्त्र में दर्ज कई गीतो रचलन, जवना में भजन संहिता अध्याय 91 आ मूसा के गीत (व्यवस्थाविवरण अध्याय 32) शामिल बा। ई हमनी के जीवन के प्रति मूसा के नजरिया के झलक देला। मूसा समझत रहलन कि परिस्थिति चाहे जइसन दिखाई दे, परमेश्वर के हउवन आ उहाँ का करेलन, एह बात के घोषणा करना कतना जरूरी बा। मूसा लिखलन:

“जे परमप्रधान के गुप्त जगह में रहेला, ऊ सर्वशक्तिमान के छाँव में बनल रही। हम प्रभु के बारे में कहब, ‘ऊ हमार शरणस्थान आ हमार गढ़ बाड़न; उहे हमार परमेश्वर बाड़न; हम उहे पर भरोसा रखब’” (भजन संहिता अध्याय 91 पद 1 आउर 2)।

“हम प्रभु के नाम के घोषणा करब; हमार परमेश्वर कतना महिमामय बाड़न! ऊ चट्टान बाड़न; उहाँ के काम सिद्ध बा। उहाँ जवन कुछ करेलन, सब न्यायपूर्ण आ सही बा। ऊ विश्वासयोग्य परमेश्वर बाड़न जे कवनो बुराई ना करेलन; उहाँ कतना न्यायी आ सीधा बाड़न” (व्यवस्थाविवरण अध्याय 32 पद 3 आउर 4)।

मूसा खाली स्तुति करे वाला आदमी ना रहलन, बलुक अइसन आदमी रहलन जे अनन्तकाल के नजरिया रखके जीयत रहलन। मूसा मिस्र के राजकुमार के रूप में पलल-बढ़ल रहलन। बाकिर जब उहाँ बड़ भइलन, त उहाँ अपना पद के विशेष अधिकार आ ताकत के ठुकरा दिहलन आ इब्रानी लोग के साथ दुख सहे के चुनाव कइलन। मूसा समझत रहलन कि फिरौन के महल के सुख थोड़े समय खातिर बा, बाकिर मसीह के सेवा खातिर जवन कठिनाई ऊ सहत रहलन, ऊ उहाँ खातिर कबो ना खतम होखे वाला प्रतिफल ले आई।

“विश्वास से मूसा, जब ऊ बड़ भइलन, फिरौन के बेटी के बेटा कहल जाए के स्वीकार ना कइलन। उहाँ थोड़े समय खातिर पाप के सुख भोगे के बजाय परमेश्वर के लोग के साथ दुख उठावे के चुनलन। उहाँ परमेश्वर खातिर होखे वाला अपमान के मिस्र के खजाना से जादे कीमती समझलन, काहेकि उहाँ के नजर अपना प्रतिफल पर लागल रहे” (इब्रानियों अध्याय 11 पद 24 से 26)।

मूसा मिस्र के धन-दौलत आ अधिकार के अस्वीकार करे के ताकत एह कारण पवलन काहेकि उहाँ अपना आसपास दिखाई देवे वाला बात से आगे बढ़के अदृश्य परमेश्वर आ उहाँ के राज्य पर नजर लगवले रहलन।

“विश्वास से उहाँ राजा के क्रोध से ना डरत मिस्र छोड़ दिहलन; काहेकि ऊ अदृश्य के देखे जइसन दृढ़ बनल रहलन” (इब्रानियों अध्याय 11 पद 27)।

मूसा समझत रहलन कि एह जीवन के दुख आ नुकसान, आगे आवे वाला आनन्द आ प्रतिफल के तुलना में बहुत छोट बा। पौलुस आ यूसुफ जइसहीं, उहाँ भी दिखाई देवे वाली बात से आगे बढ़के सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर नजर रखलन, जे उहाँ के साथ रहलन आ उहाँ के पक्ष में रहलन। मूसा के एह नजरिया से उहाँ के ई संभव भइल कि चाहे उहाँ के सामने कुछो आवे, उहाँ परमेश्वर के स्तुति कर सकलन।

एह वर्तमान घड़ी से आगे भी जीवन बा। खाली ई जीवन ही सब कुछ नइखे। जब तू जीवन के कठिनाई के अनन्तकाल के नजरिया से देखे के सीख जाल, त ओकर बोझ हल्का हो जाला। जब तू अपनी कठिनाई के अनन्तता के नजरिया से देखेल, त प्रभु के धन्यवाद देल आ उहाँ के स्तुति कइल जादे सहज हो जाला। आ ई, बदले में, उहाँ खातिर रास्ता तैयार करेला कि ऊ तोहरा के अपना उद्धार देखावसु—एह जीवन में भी आ आवे वाला जीवन में भी।

प्रतिक्रिया दीं, प्रतिकिरिया मत करीं

अगर हम जीवन के चुनौती के सामना अइसन तरीका से करे चाहत बानी कि परमेश्वर के महिमा होखे आ हमनी के भलाई मिले, त हमनी के जीवन के कठिनाई पर खाली प्रतिक्रिया करे के बजाय जवाब देवे के सीखल जरूरी बा। तू सोच सकत बाड़, "एह दुनु में का अंतर बा?"

मान ल तू कवनो गलियारा से होत चलत बाड़ आ हम अचानक एगो दरवाजा के पीछे से कूद के "भू!" चिल्ला दीं। संभव बा तू चौंक के पीछे हट जइब आ चीख निकल जाई। ओह घड़ी, हमार छोट अचानक कइल काम तोहार व्यवहार के नियंत्रित कर दी। जब तू कवनो बात पर खाली प्रतिक्रिया करेल, त ऊ घटना तोहार काम के तय करेला।

बाकिर जवाब देल अलग बात बा। जवाब देवे के मतलब बा "जवाब देल।" जब तू कवनो घटना के जवाब देल, त तू ओकरा के परमेश्वर के वचन से जवाब देल। तू ई बोले शुरू करेलऽ कि परमेश्वर के हउवन आ उहाँ का कइले बाड़न, का करत बाड़न, आ का करिहें। तब परिस्थिति तोहार व्यवहार के नियंत्रित ना करेला। जब तू परमेश्वर के स्वीकार करत उहाँ के स्तुति करेलऽ, तब परमेश्वर के वचन तोहार काम के मार्गदर्शन करेला।

एहसे का फर्क पड़ेला?

प्रतिक्रिया देल आ जवाब देल, दुनु अलग-अलग नतीजा पैदा करेला। आईं कुछ उदाहरण से देखीं कि जवाब देवे आ खाली प्रतिक्रिया करे के का नतीजा होला।

याकूब के प्रतिक्रिया।

हमनी अध्याय 7 में यूसुफ के कहानी पर विचार कइनी। ई एगो अद्भुत ब्योरा बा कि परमेश्वर चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में से महान भलाई पैदा करे खातिर कइसे काम कइलन। हमनी सीखनी कि यूसुफ अइसन आदमी रहलन जे अपना कठिन परीक्षा के जवाब परमेश्वर के स्वीकार करके दिहलन। हम ई भी देखनी कि जवाब देवे के उनकर क्षमता उनकरा के अपना परीक्षा के प्रभावी तरीका से सामना करे में मदद कइलस। बाकिर यूसुफ के कहानी में हमनी के एगो अइसन आदमी भी मिलेला जे कठिनाई के सामने खाली प्रतिक्रिया कइलस—यूसुफ के पिता, याकूब।

याकूब अपना सबसे प्रिय बेटा यूसुफ के खो दिहलन, जब उनका बाकी बेटा लोग यूसुफ के दास बनाके बेच दिहलस। कई बरिस बाद, एगो बड़ा अकाल के समय, याकूब अपना बाँचल बेटा लोग के (सबसे छोट बिन्यामीन के छोड़के) मिस्र में खाना खरीदे खातिर भेजलन। जब ऊ लोग मिस्र पहुँचल, त ऊ लोग ओह आदमी के सामने गइल जे भोजन बाँटे के जिम्मेदारी में रहल। ऊ यूसुफ रहलन। उहाँ अपना भाई लोग के पहचान लिहलन, बाकिर ऊ लोग उहाँ के ना पहचान सकल।

यूसुफ ऊ लोग के जरूरत के सामान दे दिहलन, बाकिर ई देखे खातिर कि पिछला मुलाकात के बाद उनकर चरित्र में बदलाव भइल बा कि ना, उहाँ ऊ लोग के कई परीक्षा से गुजरवलन। ओह परीक्षा में से एगो में, यूसुफ माँग कइलन कि ऊ लोग बिन्यामीन के उहाँ लगे लेके आवे। यूसुफ योजना बनवलन कि जबले ऊ लोग उहाँ के बात मानके बिन्यामीन के ना ले आई, तबले उहाँ उनकर एगो अउरी भाई, शिमोन, के मिस्र के जेल में बंद रखिहें।

याकूब के बेटा लोग बहुत खाना लेके, बाकिर शिमोन के बिना, कनान वापस आ गइल। ऊ लोग अपना पिता के सब बात बतवलस, आ याकूब ई सुनके प्रतिक्रिया दिहलन। उहाँ परिस्थिति के अपना व्यवहार नियंत्रित करे दिहलन।

“याकूब चिल्ला के कहलन, ‘तू लोग हमरा के हमार बच्चन से वंचित कर दिहल! यूसुफ चल गइल, शिमोनो चल गइल, आ अब तू लोग बिन्यामीनो के ले जाए चाहत बाड़! सब कुछ हमरा खिलाफ जा रहल बा!’” (उत्पत्ति अध्याय 42 पद 36)।

याकूब के प्रतिक्रिया ओह आधार पर पूरा तरह से स्वाभाविक रहे जवन ऊ अपनी आँख से देख सकत रहलन। सब कुछ गलत होत दिखाई देत रहे। बाकिर कवनो परिस्थिति में खाली दिखाई देवे वाली बात पूरा सच्चाई ना बतावेला—एह परिस्थिति में भी ना। असल में, परमेश्वर पर्दा के पीछे काम करत रहलन। सब कुछ याकूब के खिलाफ ना रहे। जवन घटना हो रहल रहे, ऊ असल में याकूब आ उहाँ के परिवार खातिर बड़ा आशीष लेके आवत रहे। याकूब ना त बिन्यामीन के खोवे वाला रहलन आ ना शिमोन के। ऊ अपना बहुत दिन से बिछड़ल बेटा यूसुफ से फेर मिले वाला रहलन। आ ऊ आ उहाँ के परिवार मिस्र में रहे खातिर एगो जगह पाए वाला रहल, जहाँ अकाल के बाकी बरिस खातिर खाना के पूरा व्यवस्था रहे।

याकूब के एह प्रतिक्रिया के का असर पड़ल? चाहे एहसे परमेश्वर के योजना ना रुकल—ना यूसुफ आ शिमोन से उहाँ के फेर मिलन रुकल, ना परिवार के मिस्र जाए के बात—फिरो याकूब के विनाशकारी शब्द उनकर अपना भावनात्मक पीड़ा के बढ़ा दिहलस। उहाँ के आवेग में दिहल प्रतिक्रिया पहिले से कठिन परिस्थिति के सभे खातिर अउरी तनावपूर्ण बना दिहलस।

याकूब के का करे के चाहीं रहे? ऊ अपना बेटा लोग के मिस्र यात्रा के कहानी सुनके परमेश्वर के पहिले के मदद याद कर सकत रहलन आ उहाँ के अभी के आ आगे के व्यवस्था के प्रतिज्ञा के घोषणा कर सकत रहलन। अइसन जवाब याकूब आ उहाँ के परिवार के आशा देत आ मिस्र के घटना से पैदा भइल पीड़ा के कम करत।

इस्राएल के प्रतिक्रिया।

पहिले हम कनान के सीमा पर खड़ा इस्राएल के जिक्र कइनी। तोहरा याद होई कि ओह देश के जाँच करे खातिर बारह भेदिया भेजल गइल रहलन। ऊ लौट के इंतजार करत इस्राएली लोग लगे गढ़वाला शहर आ अइसन दुश्मन लोग के डरावना रिपोर्ट लेके आइलन जिनका के जीतल असंभव लागत रहे।

“हम उनकर सामना ना कर सकीला! ऊ हमसे जादे ताकतवर बाड़न! … जवन देश हम देखके अइनी, ऊ ओहिजा रहे वाला लोग के निगल जाला। जवन लोग हम ओहिजा देखनी, ऊ सभ बहुत विशाल रहल। … हम अपना के उनकर सामने टिड्डी जइसन महसूस करत रहीं, आ उनकर नजर में भी हम अइसहीं रहीं” (गिनती अध्याय 13 पद 31 से 33)।

इस्राएल प्रतिक्रिया दिहलस—ऊ लोग ओह देश के बारे में भेदियन के रिपोर्ट के अपना काम तय करे दिहलस। आखिर में ऊ लोग कनान में घुसे से मना कर दिहलस। एह मामला में, खाली प्रतिक्रिया करे से इब्रानी लोग के खाली अतिरिक्त भावनात्मक पीड़ा ही ना मिलल, बलुक ऊ लोग परमेश्वर के इच्छा भी खो दिहलस। ओह पूरा पीढ़ी (दू आदमी के छोड़के) ओह देश पर कबो अधिकार ना कइलस जवन परमेश्वर उनकरा खातिर चाहत रहलन।

दू भेदिया, जवन ऊ लोग अपनी जासूसी यात्रा में देखलस, ओकरा पर खाली प्रतिक्रिया ना कइलस, बलुक जवाब दिहलस। यहोशू आ कालेब ओही बाधा देखलन जवन बाकी दस भेदिया देखलन, फिरो ऊ लोग अपनी परिस्थिति के मूल्यांकन एह आधार पर कइलन कि परमेश्वर का कहलन। ऊ लोग ओह देश के विरोध के जवाब एह प्रतिज्ञा से दिहलन कि परमेश्वर उनकरा खातिर लड़िहें।

“‘आवा, हम तुरंत जाके ओह देश पर अधिकार कर लीं,’ (कालेब) कहलन। ‘हम जरूर ओकरा के जीत सकीला’” (गिनती अध्याय 13 पद 30)।

“(यहोशू कहलन) ‘प्रभु के खिलाफ विद्रोह मत कर, आ ओह देश के लोग से मत डर। ऊ त हमनी खातिर खाली असहाय शिकार बाड़े! उनकर कवनो रक्षा नइखे, बाकिर प्रभु हमनी के साथ बाड़न! उनकरा से मत डर’” (गिनती अध्याय 14 पद 9)।

यहोशू आ कालेब के एह जवाब से उनकरा में साहस आइल कि ऊ कनान में घुससु, अपना दुश्मन के हरावसु, आ ओह सभ पर अधिकार करसु जवन परमेश्वर उनकरा से वादा कइले रहलन।

हमनी के पवित्रशास्त्र के एह उदाहरण पर ध्यान देवे के चाहीं आ खाली प्रतिक्रिया करे के बजाय जवाब देवे के अपनी क्षमता के विकसित करे के चाहीं।

हम जवाब कइसे दीं?

हम अध्याय 9 में देखनी कि बाइबल हमनी के निर्देश देला कि परीक्षा के आनंद मनावे के मौका समझीं (याकूब अध्याय 1 पद 2)। एह बात के दोसरा तरीका से कहे के मतलब बा कि क्लेश पर जवाब दऽ, खाली प्रतिक्रिया मत द। बाकिर बाइबल से सही ज्ञान बिना अइसन करे असंभव बा। एही से हम एह किताब में बतावल अलग-अलग विषय पर समय देके विचार कइनी।

हम पवित्रशास्त्र के कई गो घटना पर विचार कइनी जवन हमनी के देखावेला कि जीवन के कठिनाई के बीच परमेश्वर कइसे काम करेलन आ ऊ का-का करे में समर्थ बाड़न। हम अइसन उदाहरण देखनी जहाँ परमेश्वर मनुष्य के स्वतंत्र इच्छा आ ओकर परिणाम के—यहाँ तक कि ओह बातन के भी जवन ऊ मंजूर ना कइले रहलन—अपना उद्देश्य पूरा करे खातिर इस्तेमाल कइले। हम अइसन घटना देखनी जहाँ परमेश्वर असली बुराई में से साँच भलाई निकाललन। ई सभ घटना हमनी के मदद खातिर लिखल गइल रहल।

“जवन बात बहुत पहिले पवित्रशास्त्र में लिखल गइल, ऊ हमनी के शिक्षा देवे खातिर लिखल गइल, ताकि हम धीरज आ पवित्रशास्त्र से मिले वाला हिम्मत के द्वारा आशा राखीं” (रोमियों अध्याय 15 पद 4)।

बाइबल से मिलल एह समझ के द्वारा अब हम जानत बानी कि जवाब कइसे देवे के बा। जब कठिनाई तोहरा सामने आवे, त परमेश्वर के स्वीकार कर। उहाँ के बारे में बोल कि ऊ के हउवन, ऊ का कइले बाड़न, अब का करत बाड़न, आ आगे का करीहें। ओह समय के याद कर जब परमेश्वर पहिले तोहार मदद कइले रहलन, आ उहाँ के अभी के आ आगे के व्यवस्था के प्रतिज्ञा याद कर। जवन तू देखत आ महसूस करत बाड़, ओकर घोषणा करे के बजाय, अपनी परीक्षा के जवाब एह घोषणा से द कि परमेश्वर तोहार कठिनाई के बारे में का कहत बाड़न।

• ई परिस्थिति परमेश्वर से बड़ी नइखे, आ ना ही एहसे उहाँ चौंकल बाड़न। एहसे निपटे के योजना उहाँ पहिले से बना चुकल बाड़न। हम उहाँ के मदद देखे से पहिले ही उहाँ के स्तुति आ धन्यवाद करब।

• परमेश्वर एह परिस्थिति में पर्दा के पीछे काम करत बाड़न ताकि अपना खातिर सबसे जादे महिमा आ हमार आ जेतना जादे लोग खातिर संभव हो सके, ओतना जादे भलाई पैदा होखे।

• परमेश्वर एह सब के अपना उद्देश्य पूरा करे खातिर इस्तेमाल करीहें, काहेकि ऊ असली बुराई में से साँच भलाई निकालेलन।

• हमार स्वर्गीय पिता सही समय पर काम करेलन, आ सही समय आवे पर हम परिणाम देखब। अगर थोड़े समय खातिर अल्पकालिक आशीष के दीर्घकालिक आ अनन्त भलाई खातिर टाले के पड़े, त ई हमके मंजूर बा। हम एह परिस्थिति में उहाँ पर भरोसा रखत बानी कि ऊ सबसे बढ़िया काम करीहें।

• परमेश्वर हमके तबले संभाल के रखिहें जबले पूरा तरह से बाहर ना निकाल दीहें। ऊ एह परीक्षा के बीचो-बीच हमके फलल-फूलल बनावे में समर्थ बाड़न।

जब तू एह तरीका से जवाब देत बाड़, त तू ई घोषणा करत बाड़ कि परमेश्वर के हिसाब से असली सच्चाई का बा, ना कि खाली ई कि परिस्थिति कइसन दिखाई देत बा। तब यहोशू आ कालेब जइसन, तू परमेश्वर के साथ सहमति में काम करे के हिम्मत पइब।

कवनो परिस्थिति के जवाब देवे के मतलब ई ना ह कि तू कठिनाई के अस्तित्व से इनकार करत बाड़। बलुक एहकर मतलब बा कि तू बाइबल के मदद से ओकर पार देखे लागल बाड़। परमेश्वर के वचन तोहरा के भरोसा देला कि परिस्थिति में खाली ऊहे नइखे जवन तू देखत आ महसूस करत बाड़। उहाँ के वचन बतावेला कि परमेश्वर तोहरा साथे बाड़न, आ उहाँ के

मौजूदगी ऊहे मदद बा जवन तोहरा जरूरत बा। चाहे परीक्षा कतनो डरावनी काहे ना लागे, याद रख कि ऊ अस्थायी बा आ परमेश्वर के सामर्थ्य से बदल सकेला।

"परमेश्वर हमार शरणस्थान आ बल हउवन... संकट में बहुत आसानी से मिले वाला आ परखल मददगार हउवन" (भजन संहिता अध्याय 46 पद 1)।
"परमेश्वर में आशा रख, काहेकि हम फेरु उहाँ के स्तुति करब, जे आपन मौजूदगी से हमार मदद हउवन" (भजन संहिता अध्याय 42 पद 5)।

तबो हम आनंदित रहब।

जब तू विनाशकारी परिस्थिति के सामना करत बाड़, तब तोहरा आनंदित होखे के चुनाव करे के पड़ेला। ई कठिन हो सकेला, जब जवन कुछ तू देखत आ महसूस करत बाड़, ऊ "टूट जा" आ "हार मान जा" कहत होखे। बाकिर खाली प्रतिक्रिया करे के बजाय जवाब देहल, एह मेहनत के लायक बा।

भविष्यद्वक्ता हबक्कूक एही तरह के परिस्थिति के सामना कइले रहलन। ऊ इस्राएल के दक्षिणी राज्य, यहूदा, के राष्ट्रीय अस्तित्व के आखिरी दिनन में सेवा करत रहलन। बार-बार बिना पश्चाताप के मूर्तिपूजा करे के कारण, राष्ट्र बाबुल साम्राज्य द्वारा कुचलल जाए वाला रहल, यरूशलेम जरा दिहल जाए वाला रहल, आ लोगन के परदेश में निर्वासित कइल जाए वाला रहल। पवित्रशास्त्र एह आवे वाली विपत्ति के प्रति हबक्कूक के जवाब के दर्ज करेला।

"यद्यपि अंजीर के पेड़ में फूल ना लागे, आ दाखलता में अंगूर ना होखे; यद्यपि जैतून के फसल बरबाद हो जाए, आ खेत सूना आ बंजर पड़ल रहे; यद्यपि मैदान में भेड़ मर जाएँ, आ गोशाला में पशु ना रहे, तबो हम प्रभु में आनंदित रहब! हम अपना उद्धार के परमेश्वर में मगन रहब। प्रभु यहोवा हमार शक्ति हउवन! ऊ हमके हिरनी नियर मजबूत गोड़ दीहें आ हमके सुरक्षित ऊँच जगह पर ले जइहें" (हबक्कूक अध्याय 3 पद 17 से 19)।

ध्यान द कि हबक्कूक कहीं ई ना कहत बाड़न कि ऊ आनंद महसूस करत रहलन। ऊ अपना इच्छा के इस्तेमाल करके परिस्थिति में सही जवाब देवे के चुनाव करत रहलन। ऊ अइसन

कइसे कर सकलन? काहेकि ऊ जानत रहलन कि उहाँ के परिस्थिति सर्वशक्तिमान प्रभु से बड़ी नइखे। उहाँ के भरोसा रहल कि परमेश्वर उहाँ के शक्ति बनीहें आ जवन कुछ आगे आई, ओकरा बीच से उहाँ के सुरक्षित निकाल दीहें।

एह ज्ञान से उहाँ के बोझ हल्का हो गइल आ परमेश्वर खातिर रास्ता तैयार भइल कि ऊ हबक्कूक के आपन उद्धार देखावसु।

बाइबल से मिलल सही ज्ञान के द्वारा—कि परमेश्वर के हउवन आ ऊ हमार जीवन में कइसे काम करेलन—हम सचमुच प्रभु के भलाई आ मनुष्य के सन्तान लोग खातिर उहाँ के अद्भुत काम खातिर उहाँ के स्तुति कर सकत बानी। हमार चारों ओर चाहे जवन कुछ दिखाई देत होखे, हम अदृश्य परमेश्वर आ उहाँ के मदद के स्वीकार कर सकत बानी, एह भरोसा के साथ कि सही समय पर हम ठोस आ साफ-साफ परिणाम देखब। जब हम जीवन के कठिनाई के जवाब परमेश्वर के वचन के द्वारा देवे सीखी जात बानी, तब हम सबसे कठिन परीक्षा में भी जय हासिल कर सकत बानी।

निष्कर्ष

एह गिरल-पड़ल संसार में परेशानी से खाली जीवन जइसन कवनो चीज नइखे। हम सभे छोट-छोट परेशानी से लेके बड़ी-बड़ी विपत्ति तक तरह-तरह के चुनौती के सामना करीलें। जीवन के विपत्ति से बचे के कवनो रास्ता नइखे, एही से हमनी लगे एह दू गो बड़ा सवाल के जवाब होखे के चाहीं: ई काहे भइल? परमेश्वर का करत बाड़न? एह किताब के उद्देश्य एही "काहे" आ "का" वाला सवाल के जवाब देहल रहल। हमके भरोसा बा कि अब रउआ जानत बानी कि बाइबल के अनुसार एह सवालन के जवाब कइसे देवे के बा।

• परेशानी काहे बा? ई पाप के श्राप से प्रभावित एह संसार के जीवन के हिस्सा बा, अइसन संसार जवन अदन के बगइचा में आदम के पाप से शुरू भइल असर के कारण बुरी तरह प्रभावित भइल बा।

• परमेश्वर का करत बाड़न? हालाँकि परमेश्वर कभी जीवन के परीक्षा के स्रोत नइखन, फिरो ऊ अपना उद्देश्य पूरा करे खातिर ओकर इस्तेमाल करे आ असली बुराई में से महान भलाई निकाले में समर्थ बाड़न, जब ऊ अनन्तकाल खातिर अपना परिवार के इकट्ठा करत बाड़न।

हम बाइबल में बहुत गो असली लोगन के घटना पर विचार कइनी जे असली समस्या के सामना कइलन आ परमेश्वर से असली मदद पवलन। ई उदाहरण हमनी के देखावेला कि परमेश्वर कइसे जीवन के परीक्षा के अपनी महिमा आ अपना लोगन के भलाई खातिर इस्तेमाल करेलन। आशा बा कि रउआ उहाँ लोग के कहानी से हिम्मत पवले होखब।

हम अपना संबंध में भी "काहे" आ "का" वाला सवाल पर चर्चा कइनी।

• जब कठिनाई हमार सामने आवे, तब हमका करे के चाहीं? आनंदित होखे के चुनाव करीं। परमेश्वर के स्वीकार करीं। एहके प्रभु के स्तुति करे के मौका समझीं—ई बतावत कि ऊ के हउवन, ऊ का कइले बाड़न, अब का करत बाड़न, आ आगे का करीहें।

• हमके आनंदित काहे होखे के चाहीं? काहेकि प्रभु के भलाई आ मनुष्य के सन्तान लोग खातिर उहाँ के अद्भुत काम खातिर उहाँ के स्तुति करना हमेशा सही बा।

जीवन रउआ सामने जवन कुछो ले आवे, रउआ एह भरोसा के साथ ओकर सामना कर सकत बानी कि रउआ के परीक्षा परमेश्वर के ओर से नइखे आइल। रउआ निश्चिंत हो सकत बानी कि रउआ के विपत्ति उहाँ के चौंकवले नइखे। परमेश्वर रउआ के परिस्थिति के बारे में पृथ्वी के रचना से पहिले से जानत रहलन, आ ओकर सामना करे खातिर उहाँ लगे पहिले से योजना बा। परीक्षा कइसनो होखे, ऊ परमेश्वर से बड़ी नइखे। ऊ रउआ के तबले संभाल के रखिहें जबले पूरा तरह बाहर ना निकाल दीहें। एही से रउआ उहाँ के वचन के द्वारा अपनी चुनौती के जवाब दे सकत बानी आ परमेश्वर के महिमा दे सकत बानी, एह तरह उहाँ खातिर रास्ता तैयार करत कि ऊ रउआ के आपन उद्धार देखावसु।

जब ई मौजूदा कठिन समय बीत जाई, तब रउआ पीछे मुड़के साफ-साफ देख सकब कि परमेश्वर अपना वचन के निभवले रहलन। जब ऊ अपना परिवार खातिर अपनी योजना पूरा करत रहलन, तब ऊ अपना खातिर सबसे जादे महिमा आ जेतना जादे लोग खातिर संभव रहल, ओतना जादे भलाई पैदा करत रहलन—आ ओह लोग में रउआ भी शामिल होखब।